वीतराग विज्ञान

प्रशिक्षण निर्देशिका

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

वीतराग-विज्ञान प्रशिक्षण निर्देशिका

लेखक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच.डी., डी.-लिट.

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

प्रकाशक :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन : (0141) 2707458, 2705581

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

वीतराग-विज्ञान प्रशिक्षण निर्देशिका	:	डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
प्रथम आठ संस्करण	:	14 हजार 400
(16 मई 1971 से अद्यतन)		
नवम् संस्करण	:	1 हजार
(21 अप्रैल, 2015) अक्षय तृतीया		
योग	:	**15 हजार 400**

मूल्य : बीस रुपये

मुद्रक :
सन् एन सन प्रेस
तिलक नगर, जयपुर

प्रकाशकीय

(नवम् संस्करण)

प्रशिक्षण निर्देशिका का यह नवम् संस्करण प्रकाशित करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से धार्मिक तत्त्वज्ञान के अध्यापन में अध्यापक बन्धुओं को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित प्रशिक्षण-शिविरों की पावन परम्परा में आध्यात्मिक संत श्रीकानजी स्वामी के सान्निध्य में सम्पन्न तृतीय प्रशिक्षण शिविर के पुनीत अवसर पर दि. १६ मई १९७१ को प्रस्तुत पुस्तक का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया गया था, इस संबंध में प्रथम संस्करण का प्रकाशकीय पठनीय है।

जैसा कि सर्व विदित है अल्पवय में बालकों को पढ़ाने के लिये विशिष्ठ कौशल की आवश्यकता होती है। प्रायः यह महसूस किया जाता रहा है कि पाठशाला समिति द्वारा संचालित पाठशालाओं में पढ़ाने वाले अध्यापकों में इसका नितान्त अभाव है। पाठशालाओं में पढ़ाने वाले धार्मिक अध्यापकों को धार्मिक अध्ययन कराने की ट्रेनिंग देने के उद्देश्य से सन् १९६९ से १८ दिवसीय वीतराग-विज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन प्रारंभ किया गया। प्रतिवर्ष मई माह में लगने वाले इस शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अध्यापकों को बी.एड. की शिक्षण पद्धति के आधार से धार्मिक अध्यापन कराने की ट्रेनिंग दी जाती है।

अभी तक देश के विभिन्न प्रान्तों में आयोजित ४९ प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से ९ हजार ८०० अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। शिविरार्थियों को भोजन आवासादि की निःशुल्क सुविधा दी जाती है। एक प्रशिक्षण शिविर के आयोजन में लगभग ७-८ लाख रुपए का खर्च आता है। कम समय और साधन में अधिकतम लोगों तक धार्मिक संस्कारों को प्रेषण करने की यह एक अनूठी पद्धति है। अब तक सम्पन्न शिविरों में प्रस्तुत पुस्तक का पूरा-पूरा उपयोग हुआ है तथा इसकी उपादेयता एवं उपयोगिता देखकर सर्वत्र ही इसकी सराहना व स्वागत हुआ है।

संस्था के महामंत्री एवं प्रशिक्षण शिविरों के कुशल संचालक तथा इस पुस्तक के लेखक डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा संशोधित एवं परिवर्तित द्वितीय संस्करण सन् १९७५ में प्रकाशित किया गया था जिसमें गत प्रशिक्षण शिविरों में प्राप्त अनुभवों के साथ ही प्रशिक्षण शिविरों के प्रशिक्षक पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल शास्त्री, न्यायतीर्थ, एम.ए., बी.एड. द्वारा उसी समय प्राप्त बी.एड. के प्रशिक्षण का भी पूरा-पूरा लाभ लिया गया है, अतः हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। डॉ. भारिल्लजी का तो हम जितना उपकार मानें कम हैं, वे तो इस संस्था के व प्रशिक्षण शिविरों के प्राण ही हैं। प्रस्तुत प्रकाशन को आकर्षक कलेवर में प्रकाशित करने का श्रेय विभाग के मैनेजर श्री अखिल बंसल को है अतः वे बधाई के पात्र हैं।

आशा है प्रशिक्षण निर्देशिका की सहायता से प्रशिक्षित अध्यापकों के माध्यम से जन-जन वीतराग-विज्ञान के संस्कारों से अनुप्राणित होगा।

ब्र. यशपाल जैन, एम.ए.
प्रकाशन मंत्री
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

प्रस्तुत संस्करण की कीमत कम करने वाले दातारों की सूची

1.	श्री विमलजी जैन विवेक पाटनी, कुचडौद	1100.00
2.	श्रीमती पुष्पलता जैन (जीजीबाई) ध.प. अजितकुमारजी जैन, छिन्दवाड़ा	1100.00
3.	श्री जतनबाई गंगवाल, धार	1000.00
4.	श्रीमती गीताबाई जैन, कुचडौद	1000.00
5.	श्री भागचन्दजी कालिका, उदयपुर	501.00
6.	श्री प्रमोद प्रेमचन्दजी जैन मताई, गुहारा छतरपुर	501.00
7.	श्री कैलाशचन्दजी जैन, ठाकुरगंज	501.00
8.	श्री प्रेमचन्दजी जैन चिन्मय जैन, जयपुर	500.00
9.	श्री निर्मल जैन, इन्दौर	500.00
10.	श्रीमती श्वेता जैन, जयपुर	500.00
11.	श्रीमती रश्मिदेवी वीरेशजी कासलीवाल, सूरत	301.00
12.	श्री हुकमीचन्दजी शाह, उदयपुर	300.00
13.	श्री सुरेशचन्दजी तोतुका, जयपुर	250.00
	कुल राशि	**8054.00**

डॉ. भारिल्ल के महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

१. समयसार : ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका	५०.००
२-६. समयसार अनुशीलन भाग १ से ५	१२५.००
७. समयसार का सार	३०.००
८. गाथा समयसार	१०.००
९. प्रवचनसार : ज्ञानज्ञेयतत्त्वप्रबोधिनी टीका	५०.००
१०-१२. प्रवचनसार अनुशीलन भाग १ से ३	९५.००
१३. कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन	२०.००
१४. प्रवचनसार का सार	३०.००
१५. नियमसार : आत्मप्रबोधिनी टीका	५०.००
१६-१७. नियमसार अनुशीलन भाग १ से ३	७०.००
१८. छहढाला का सार	१५.००
१९. मोक्षमार्गप्रकाशक का सार	३०.००
२०. ४७ शक्तियाँ और ४७ नय	८.००
२१. पंडित टोडरमल व्यक्तित्व और कर्तृत्व	२०.००
२२. परमभावप्रकाशक नयचक्र	४०.००
२३. चिन्तन की गहराइयाँ	३०.००
२४. तीर्थंकर महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ	२०.००
२५. धर्म के दशलक्षण	२०.००
२६. क्रमबद्धपर्याय	२०.००
२७. तत्त्वार्थमणिप्रदीप (पूर्वार्द्ध)	२०.००
२८. तत्त्वार्थमणिप्रदीप (उत्तरार्द्ध)	१०.००
२९. तत्त्वार्थमणिप्रदीप (सम्पूर्ण)	३०.००
३०. बिखरे मोती	१६.००
३१. सत्य की खोज	२५.००
३२. अध्यात्म नवनीत	१५.००
३३. आप कुछ भी कहो	१५.००
३४. आत्मा ही है शरण	१५.००
३५. सुक्ति-सुधा	१८.००
३६. बारह भावना : एक अनुशीलन	१६.००
३७. दृष्टि का विषय	१०.००
३८. गागर में सागर	७.००
३९. पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव	१२.००
४०. णमोकार महामंत्र : एक अनुशीलन	११.००
४१. रक्षाबन्धन और दीपावली	५.००
४२. आचार्य कुंदकुंद और उनके पंचपरमागम	५.००
४३. युगपुरुष कानजीस्वामी	५.००
४४. वीतराग-विज्ञान प्रशिक्षण निर्देशिका	१५.००
४५. मैं कौन हूँ	१०.००
४६. रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का	१०.००
४७. निमित्तोपादान	६.००
४८. अहिंसा : महावीर की दृष्टि में	५.००
४९. मैं स्वयं भगवान हूँ	५.००
५०-५१. ध्यान का स्वरूप/रीति-नीति	४.००
५२. शाकाहार	५.००
५३. भगवान ऋषभदेव	४.००
५४. तीर्थंकर भगवान महावीर	३.००
५५. चैतन्य चमत्कार	४.००
५६. गोली का जवाब गाली से भी नहीं	२.००
५७. गोम्मटेश्वर बाहुबली	२.००
५८. वीतरागी व्यक्तित्व : भगवान महावीर	२.००
५९. अनेकान्त और स्याद्वाद	३.००
६०. शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखर	६.००
६१. बिन्दु में सिन्धु	२.५०
६२. जिनवरस्य नयचक्रम	१०.००
६३. पश्चात्ताप खण्डकाव्य	१०.००
६४. बारह भावना एवं जिनेन्द्र वंदना	२.००
६५. कुंदकुंदशतक पद्यानुवाद	२.५०
६६. शुद्धात्मशतक पद्यानुवाद	१.००
६७. समयसार पद्यानुवाद	३.००
६८. योगसार पद्यानुवाद	१.००
६९. समयसार कलश पद्यानुवाद	३.००
७०. प्रवचनसार पद्यानुवाद	३.००
७१. द्रव्यसंग्रह पद्यानुवाद	१.००
७२. अष्टपाहुड़ पद्यानुवाद	३.००
७३. नियमसार पद्यानुवाद	२.५०
७४. नियमसार कलश पद्यानुवाद	५.००
७५. सिद्धभक्ति	१०.००
७६. अर्चना जेबी	१.५०
७७. कुंदकुंदशतक (अर्थ सहित)	५.००
७८. शुद्धात्मशतक (अर्थ सहित)	५.००
७९-८०. बालबोध पाठमाला भाग २ से ३	७.००
८१-८३. वीतराग विज्ञान पाठमाला १ से ३	१४.००
८४-८५. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग १ से २	११.००
८६. भगवान महावीर और उनकी जन्मभूमि	३.००

विषय-सूची

		पृष्ठ
विषय-प्रवेश		9-10
प्रथम अध्याय		
प्रशिक्षण संबंधी सामान्य ज्ञान		11-20
पाठ-योजना-13	अनुकरण वाचन-15	
प्रकरण-13	सामान्यार्थ विवेचन-16	
उद्देश्य-13	विचार-विश्लेषण-16	
उद्देश्य कथन-14	प्रश्नोत्तर-16	
पूर्व-ज्ञान-14	सारांश कथन-20	
सामग्री-14	समापन-20	
प्रस्तुतीकरण-14	गृहकार्य-20	
आदर्श वाचन-15	अध्यापक कथन-20	
	आधार-परिचय-20	
द्वितीय अध्याय		
बालबोध प्रशिक्षण		21-82
आदर्श पाठ योजना 1-5	23-65	
पाठ-निर्देश 1-19	66-80	
बालबोध-प्रशिक्षण परीक्षा प्रश्न-पत्र	81-82	
तृतीय अध्याय		
प्रवेशिका प्रशिक्षण		83-153
आदर्श पाठ-योजना 1-3	85-117	
पाठ-निर्देश 1-26	118-151	
प्रवेशिका-प्रशिक्षण परीक्षा प्रश्न-पत्र	152-153	
परिशिष्ट		154-166
परिशिष्ट-1	154-163	
परिशिष्ट-2	163-166	

बालबोध पाठमाला भाग–१–२–३ के पाठों की आदर्श पाठ–योजनाओं व पाठ–निर्देशों की तालिका

पाठ संख्या	बालबोध पाठमाला भाग–१		बालबोध पाठमाला भाग–२		बालबोध पाठमाला भाग–३	
	आदर्श पाठ–योजना या पाठ–निर्देश	पृष्ठ संख्या	आदर्श पाठ–योजना या पाठ–निर्देश	पृष्ठ संख्या	आदर्श पाठ–योजना या पाठ–निर्देश	पृष्ठ संख्या
१	पाठ–निर्देश १	६६	पाठ–निर्देश ८	७१	आदर्श पाठ–योजना २	३३
२	पाठ–निर्देश २	६७	पाठ–निर्देश ९	७२	आदर्श पाठ–योजना ३	४२
३	पाठ–निर्देश ३	६७	पाठ–निर्देश १०	७३	पाठ–निर्देश १५	७७
४	पाठ–निर्देश ४	६८	आदर्श पाठ–योजना ४	५१	पाठ–निर्देश १६	७८
५	पाठ–निर्देश ५	६९	पाठ–निर्देश ११	७४	पाठ–निर्देश १७	७९
६	पाठ–निर्देश ६	७०	पाठ–निर्देश १२	७४	आदर्श पाठ–योजना १	२३
७	आदर्श पाठ–योजना ५	५९	पाठ–निर्देश १३	७५	पाठ–निर्देश १८	८०
८	पाठ–निर्देश ७	७०	पाठ–निर्देश १४	७६	पाठ–निर्देश १९	८०

वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–१–२–३ की आदर्श पाठ–योजनाओं व पाठ–निर्देशों की तालिका

पाठ संख्या	वीतराग पाठमाला भाग–१		वीतराग पाठमाला भाग–२		वीतराग पाठमाला भाग–३	
	आदर्श पाठ–योजना या पाठ–निर्देश	पृष्ठ संख्या	आदर्श पाठ–योजना या पाठ–निर्देश	पृष्ठ संख्या	आदर्श पाठ–योजना या पाठ–निर्देश	पृष्ठ संख्या
१	आदर्श पाठ–योजना १	८५	पाठ–निर्देश ८	१२७	पाठ–निर्देश १७	१३९
२	पाठ–निर्देश १	११८	आदर्श पाठ–योजना २	९६	पाठ–निर्देश १८	१४०
३	पाठ–निर्देश २	११९	पाठ–निर्देश ९	१२८	पाठ–निर्देश १९	१४२
४	पाठ–निर्देश ३	१२१	पाठ–निर्देश १०	१३०	पाठ–निर्देश २०	१४३
५	पाठ–निर्देश ४	१२३	पाठ–निर्देश ११	१३२	आदर्श पाठ–योजना ३	१०७
६	पाठ–निर्देश ५	१२५	पाठ–निर्देश १२	१३३	पाठ–निर्देश २१	१४४
७	पाठ–निर्देश ६	१२६	पाठ–निर्देश १३	१३४	पाठ–निर्देश २२	१४५
८	पाठ–निर्देश ७	१२६	पाठ–निर्देश १४	१३५	पाठ–निर्देश २३	१४६
९	–	–	पाठ–निर्देश १५	१३६	पाठ–निर्देश २४	१४८
१०	–	–	पाठ–निर्देश १६	१३८	पाठ–निर्देश २५	१४९
११	–	–	–	–	पाठ–निर्देश २६	१५१

वीतराग-विज्ञान प्रशिक्षण निर्देशिका

मंगलाचरण

(दोहा)

आत्मज्ञान ही ज्ञान है, शेष सभी अज्ञान।
विश्वशान्ति का मूल है, वीतराग-विज्ञान ।।१।।
वीतराग-विज्ञानमय, स्वातम का धरि ध्यान।
बने, बनेंगे, बन रहे, वीतराग भगवान ।।२।।
वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर घर होय प्रसार ।।३।।

(दोहा)

घट घट आतमज्ञान, प्राप्ति हेतु यह लिख रहा।
वीतराग-विज्ञान, प्रशिक्षण निर्देशिका ।।४।।

विषय-प्रवेश

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ का उद्देश्य वीतराग-विज्ञान को घर-घर पहुँचाना है। यह शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। तदर्थ देश में अनेक स्थानों पर जैन स्कूलों व पाठशालाओं में वीतराग-विज्ञान का शिक्षण चल रहा है व स्थान-स्थान पर नई वीतराग-विज्ञान पाठशालाएँ खुल रही हैं।

वैसे तो प्रत्येक कार्य को ही सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए व्यवस्थित वैज्ञानिक विधि और तत्संबंधी कार्यकुशलता आवश्यक है, किन्तु शिक्षा के क्षेत्र में यह अनिवार्य है। आधुनिक शिक्षा-पद्धति में अनेक वैज्ञानिक परिवर्तन हुये हैं और निरन्तर हो रहे हैं। वीतराग-विज्ञान की शिक्षण-पद्धति में भी तदनुरूप परिवर्तन अपेक्षित हैं।

आज हमें ऐसे योग्य अध्यापकों की आवश्यकता है जो (१) बालकों में वीतराग-विज्ञान के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न कर सकें, (२) उन्हें सामान्य तत्त्वज्ञान करा सकें तथा (३) सदाचार से युक्त नैतिक जीवन बिताने के लिये प्रेरित कर सकें।

लौकिक शिक्षा-पद्धति में कुशलता प्राप्त करने के लिये एक या दो वर्ष का प्रशिक्षणकाल रहता है, किन्तु धार्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये इतना समय देना आज के व्यस्त जीवन में असंभव सा लगने लगा है। अतः ग्रीष्मकालीन अवकाश के समय २० दिन के शिविरों के द्वारा वीतराग-विज्ञान के अध्यापकों को प्रशिक्षण देने का क्रम चालू किया गया है। यह प्रशिक्षण निम्न तीन शिविरों के माध्यम से पूरा होने का है :-

(१) बालबोध प्रशिक्षण
(२) प्रवेशिका प्रशिक्षण
● (३) प्रशिक्षण विशारद

प्रशिक्षण की सुविधा की दृष्टि से इस योजना को पुस्तकाकार लिपिबद्ध करना आवश्यक प्रतीत हुआ, तदर्थ बालबोध व प्रवेशिका प्रशिक्षण से सम्बन्धित यह प्रथम प्रयास है।

यह पुस्तिका तीन अध्यायों में विभाजित है :-

प्रथम अध्याय में प्रशिक्षण संबंधी सामान्य जानकारी है।

द्वितीय अध्याय में बालबोध प्रशिक्षण संबंधी विश्लेषण एवं तत्संबंधित पाठ-योजनाएँ तथा पाठ-निर्देश हैं।

तृतीय अध्याय प्रवेशिका प्रशिक्षण से सम्बन्धित है।

द्वितीय व तृतीय अध्याय के अन्त में एक-एक परिशिष्ट दिये गये हैं जिनमें तत्संबंधित विशेष जानकारी है।

● 'प्रशिक्षण विशारद' सम्बन्धी पुस्तिका बाद में प्रकाशित करने की योजना है।

अध्याय प्रथम

प्रशिक्षण संबंधी सामान्य ज्ञान

शिक्षण त्रिमुखी प्रक्रिया है। उसके तीन केन्द्र बिन्दु होते हैं - शिक्षक, छात्र और विषय। इन तीनों में संबंध स्थापित करना ही शिक्षण है। इस संबंध को स्थापित करने का पूरा-पूरा दायित्व शिक्षक पर है। अतः शिक्षण की सफलता सुयोग्य शिक्षकों पर निर्भर है।

स्वयं ज्ञानार्जन करना अलग बात है और प्राप्त ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना दूसरी बात है। नितान्त अनभिज्ञ छात्रों को वांछित विषय हृदयंगम करा देना सहज कार्य नहीं है। इसके लिए अध्यापक का जागरूक, मननशील व मनोवैज्ञानिक होना आवश्यक है। एक कुशल अध्यापक को निम्नलिखित बातों को सदैव ध्यान में रखना चाहिये।

१. कक्षा में सर्वप्रथम बोर्ड पर नाम कक्षा, विषय, प्रकरण एवं दिनांक लिख देना चाहिये।

२. कक्षा में अध्यापक की दृष्टि छात्रों पर रहनी चाहिये।

३. अध्यापक को न तो अति मंद स्वर में ही बोलना चाहिये, न अति तेज में। सब छात्र आसानी से सुन सकें, इस प्रकार के मध्यम स्वर में स्पष्ट बोलना चाहिये।

४. छात्रों के स्तर एवं पूर्व-ज्ञान को आधार मानकर अपनी बात समझानी चाहिये।

५. विषय को इस तरह उठाना चाहिये कि छात्रों में प्रस्तुत विषय को जानने की जिज्ञासा जागृत हो।

६. सरलता से कठिनता की ओर जाना चाहिये। जैसे – जीव और अजीव का भेद–विज्ञान कराते समय पहले स्पष्ट अजीव – टेबल, कुर्सी आदि का ज्ञान कराना; पश्चात् जीव के संयोग में रहने वाले शरीर, इन्द्रियाँ आदि अजीव का ज्ञान कराना।

७. उदाहरण से सिद्धान्त की ओर जाना चाहिये।

८. ज्ञात से अज्ञात की ओर जाना चाहिये। जैसे – बिल्ली के माध्यम से शेर की पहचान कराना। अथवा चित्र के माध्यम से व्यक्ति की पहचान कराना।

९. मूर्त से अमूर्त की ओर जाना चाहिये। जैसे – सात तत्त्व को समझाने के लिये पहले स्थूल मूर्त नाव पर घटित करना पश्चात् आत्मा पर घटित करके समझाना।

ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में ही कुछ अपने अलग पारिभाषिक शब्द होते हैं, जिनको जाने बिना तत्संबंधी विशेष कथन का भाव भासित होना संभव नहीं है। शिक्षण–पद्धति में भी कतिपय विशेष शब्दों का विशेष अर्थ में प्रयोग होता है, जिनका ज्ञान प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को होना अत्यावश्यक है। वीतराग–विज्ञान प्रशिक्षण में प्रयोग में आने वाले प्रमुख पारिभाषिक शब्द निम्न प्रकार हैं :–

१. पाठ–योजना
२. प्रकरण
३. उद्देश्य
   (क) सामान्य उद्देश्य
   (ख) विशेष उद्देश्य
४. उद्देश्य कथन
५. पूर्व–ज्ञान
६. सामग्री
७. प्रस्तुतीकरण
८. आदर्श वाचन
   (क) संवाद शैली
   (ख) गद्य शैली
   (ग) पद्य शैली
९. अनुकरण वाचन
१०. सामान्यार्थ विवेचन
११. विचार–विश्लेषण

(क) आवश्यक सामग्री
(ख) सहायक सामग्री

१२. प्रश्नोत्तर
(क) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(ग) मूल्यांकन प्रश्नोत्तर
(i) समापन मूल्यांकन
(ii) पूर्व-पाठ मूल्यांकन

१३. सारांश कथन
१४. समापन
१५. गृहकार्य
१६. अध्यापक कथन
१७. आधार-परिचय

उपरोक्त पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण व उनके विशेष निर्देशों को स्पष्टतया समझ लेना आवश्यक है। इनका विशेष स्पष्टीकरण निम्नानुसार है :-

१. पाठ-योजना

पाठ योजना कक्षाकार्य की वह पूर्व निर्धारित योजना है, जिसमें शिक्षक पाठ के प्रयोजन और उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रयोग की जाने वाली विधियों को लिखित रूप में निश्चित करता है।

पाठ-योजना अध्यापक के कार्य को नियमित, नियोजित और व्यवस्थित करती है।

२. प्रकरण

पाठ के जिस अंश का ज्ञान छात्रों को देना हो उसे प्रकरण कहते हैं। प्रायः पाठ के नाम को ही प्रकरण समझ लिया जाता है। पाठ का नाम भी प्रकरण हो सकता है, पर सूक्ष्मता से विचार करने पर विस्तृत सीमा को लिये हुये पाठ के अन्तर्गत कई प्रकरण हो सकते हैं। उदाहरणतः 'कषाय' वाले पाठ में यदि एक दिन में 'क्रोध और मान' ही पढ़ाना हो तो प्रकरण 'क्रोध और मान कषाय' दिया जाना चाहिये।

३. उद्देश्य

प्रत्येक कार्य के पीछे एक लक्ष्य (उद्देश्य) होता है। यहाँ हम उद्देश्य को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं :-

(क) सामान्य उद्देश्य (ख) विशेष उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – सामान्य उद्देश्य सब पाठों में समान रूप से पाये जाते हैं।

(ख) विशेष उद्देश्य – विशेष उद्देश्य पाठ-विशेष से संबंधित होते हैं। ये तात्कालिक पाठ्यवस्तु के अनुसार निर्धारित किये जाते हैं।

४. उद्देश्य कथन

छात्रों को पढ़ाना प्रारम्भ करने के पूर्व यदि पाठ का उद्देश्य बता दिया जाय तो वे उसे अधिक रुचिपूर्वक पढ़ते हैं। अतः पाठ प्रारम्भ करने के पूर्व उद्देश्य अवश्य बता देना चाहिये। इसको ही उद्देश्य कथन कहते हैं। उद्देश्य कथन सरल, संक्षिप्त और रोचक होना चाहिये।

५. पूर्व ज्ञान

प्रस्तुत पाठ को पढ़ाते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि बालकों को उक्त विषय का पहले से कितना ज्ञान है, क्योंकि यह ध्यान रखे बिना दिया गया ज्ञान छात्र ग्रहण नहीं कर सकेंगे। पूर्व-ज्ञान जानने के लिये पाठ्यक्रम की पूर्व-पुस्तकों एवं पूर्व-पाठों को आधार माना जाना चाहिए।

६. सामग्री

पाठ्य-विषय को पढ़ाने से संबंधित सामग्री की पहले से ही व्यवस्था हो जानी चाहिये। इसको दो भागों में बांटा जा सकता है :-

(क) आवश्यक सामग्री (ख) सहायक सामग्री

(क) आवश्यक सामग्री – प्रत्येक पाठ को पढ़ाने के लिये जिस सामान की आवश्यकता होती है, उसे आवश्यक सामग्री कहते हैं। जैसे – बोर्ड, चाक, डस्टर आदि।

(ख) सहायक सामग्री – पाठ-विशेष को पढ़ाने से संबंधित सामग्री को सहायक सामग्री कहते हैं। जैसे – पाठ्यपुस्तक, पाठ से संबंधित नक्शा, चार्ट आदि।

७. प्रस्तुतीकरण

प्रस्तुतीकरण में किसी भी पाठ को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने के पूर्व अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह तय किया जाता है कि अमुक पाठ कितने दिन में व एक दिन में उसका कितना भाग पढ़ाया जावेगा। यह भी तय कर लिया जाता है कि अमुक दिन पढ़ाया जानेवाला पाठ कितनी अन्वितियों में विभाजित किया जावेगा व प्रत्येक अन्विति में कौन-कौन से सोपान होंगे।

८. आदर्श वाचन

कक्षा में पाठ पढ़ाते समय पाठ्यवस्तु को अध्यापक उचित आरोह-अवरोह के साथ जो स्वयं वाचन करते हैं, उसे आदर्श वाचन कहते हैं। आदर्श वाचन करने से पूर्व छात्रों को पुस्तक की पृष्ठ संख्या बता देनी चाहिये तथा उन्हें पाठ को देखने एवं आदर्श वाचन को ध्यान से सुनने की प्रेरणा देने के साथ यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि जैसे मैं यह पाठ पढ़ा रहा हूँ वैसे ही किसी भी छात्र को अभी इसका वाचन करना होगा। ऐसा कहने से छात्र अध्यापक द्वारा किये जाने वाले वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। आदर्श वाचन प्रायः इन तीन शैलियों में होता है -

(क) संवाद शैली (ख) गद्य शैली (ग) पद्य शैली

(क) संवाद शैली – इस शैली में अध्यापक अपने स्वर को इसतरह साध कर वाचिक और आंगिक अभिनय के साथ पाठ का वाचन करते हैं कि मानो अलग-अलग पात्र बोल रहे हों। संवाद शैली में अध्यापक एक तरह एकपात्रीय नाटक (मोनो ऐक्टिंग) करते हैं। यहाँ अभिनय का आशय कक्षा को नाटक का स्टेज बना देने से नहीं है, बल्कि पढ़ाने के मूलभूत विषय के साथ भावात्मक आंशिक अभिनय से हैं।

(ख) गद्य शैली – इस शैली में विराम, अर्द्धविराम और पूर्णविराम आदि का ध्यान रखते हुये वाचन किया जाता है।

(ग) पद्य शैली – इस शैली में अध्यापक आवश्यक उतार-चढ़ाव के साथ तथा छंदानुसार स्वर और लय के साथ गाकर पढ़ते हैं। यदि

गला अच्छा न हो तो पद्य को स्वर और लय के साथ बिना गाये ही पढ़ना ठीक रहेगा।

९. अनुकरण वाचन

जिस पाठ का अध्यापक ने आदर्श वाचन किया है, उसे उसी के अनुकरण पर छात्रों में से किन्हीं एक, दो या अधिक छात्रों से पृथक-पृथक् वाचन कराने को अनुकरण वाचन कहते हैं। अनुकरण वाचन में छात्रों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों में अध्यापक छात्रों द्वारा आवश्यक सुधार कराते हैं और अन्त में स्वयं आवश्यक निर्देश देते हैं।

संवाद शैली में वाचन पात्रों के अनुसार एकाधिक पात्रों से संवाद के रूप में कराना चाहिये। पर ध्यान रहे कि अनुकरण वाचन सामूहिक कभी नहीं कराना चाहिये, क्योंकि सामूहिक अनुकरण वाचन में छात्रों के वाचन की अशुद्धियों का पता नहीं चल पाता।

छोटी कक्षाओं में पाठों को एक साथ बोलने का अभ्यास कराने के लिये अलग से सामूहिक वाचन कराया जा सकता है।

१०. सामान्यार्थ विवेचन

अनुकरण वाचन के बाद पाठ के पठित पद्यांश का सामान्य अर्थ बताने को सामान्यार्थ विवेचन कहते हैं। सामान्यार्थ विवेचन में शब्दार्थ पर विशेष जोर न दिया जाकर भावार्थ को पकड़ा जाता है, क्योंकि भाषा-ज्ञान हमारा उद्देश्य नहीं है – हमें तो विषय-ज्ञान देना है। आवश्यक शब्दार्थ सामान्यार्थ के साथ-साथ यथास्थान बता देना चाहिये।

११. विचार-विश्लेषण

अनुकरण वाचन के पश्चात् पाठ के पठित गद्यांश या संवादांश में प्रतिपादित विचारों को सुबोध व सरल भाषा में छात्रों को समझाना ही विचार-विश्लेषण है। यह तर्कसंगत एवं सोदाहरण होना चाहिये।

१२. प्रश्नोत्तर

पाठ व उसमें आये हुये सिद्धान्त वाक्यों, परिभाषाओं एवं तथ्य वाक्यों का स्पष्ट ज्ञान व उनमें निहित भावों का बोध कराने व याद

कराने के लिये एवं पढ़ाया हुआ पाठ छात्रों की समझ में आया या नहीं अथवा पूर्व-दिन पढ़ाये गये पाठ को छात्रों ने तैयार किया या नहीं - इनकी जाँच के लिये प्रश्न व उत्तर अध्यापक को घर से बनाकर लाना चाहिये - इनको प्रश्नोत्तर कहते हैं। प्रश्नोत्तर तीन प्रकार के होते हैं - (क) बोधगम्य प्रश्नोत्तर (ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर (ग) मूल्यांकन प्रश्नोत्तर

(क) बोधगम्य प्रश्नोत्तर - जिन सिद्धान्तों, तथ्यों एवं परिभाषाओं का बोध छात्रों को कराना है, उन्हें प्रश्नोत्तर में अध्यापक द्वारा लिपिबद्ध करके लाना बोधगम्य प्रश्नोत्तर कहलाता है। इस प्रकार के प्रश्न व उत्तर की शैली से छात्र विषय को सहजता से पकड़ सकेंगे।

(ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर - (i) इस पद्धति में प्रश्नोत्तर द्वारा मौखिक अभ्यास कराया जाता है। इसमें निम्न चार सोपान रखने से पाठ तैयार कराने में सुविधा रहती है -

(१) है या नहीं? (२) इनमें से क्या है या कौन है?

(३) इसको क्या कहते हैं? (४) किसे कहते हैं या क्या है?

प्रयोग -

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं।	१. छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते है या नहीं?	१. कहते हैं।
	२. छह द्रव्यों का समूह विश्व है या गुण या पर्याय?	२. विश्व।
	३. छह द्रव्यों के समूह को क्या कहते हैं?	३. विश्व।
	४. विश्व किसे कहते हैं?	४. छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं।

नोट :- किसी-किसी परिभाषा या सिद्धांत-वाक्य आदि में चारों सोपान लगाना संभव न हो तो तीन या दो सोपानों से अभ्यास कराया जाना चाहिये।

(ii) लम्बी परिभाषाओं के तैयार कराने में वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपान न लगाकर उसे निम्नानुसार कई खण्ड-वाक्यों में विभाजित करके तैयार कराना चाहिये -

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो गृहस्थपना त्याग	१. क्या त्याग कर अरहंत बनते हैं?	१. गृहस्थपना।
कर मुनिधर्म अंगी–कार करके निज	२. क्या अंगीकार करके अरहंत बनते हैं?	२. मुनिधर्म।
स्वभाव साधन द्वारा	३. किस साधन द्वारा अरहंत बनते हैं?	३. निज स्वभाव साधन द्वारा।
चार घाति कर्मों का नाश कर	४. किनका नाश करके अरहंत बनते हैं?	४. चार घाति कर्मों का।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त करते हैं, उन्हें अरहन्त कहते हैं।	५. क्या प्राप्त करके अरहंत बनते हैं?	५. अनन्त चतुष्टय।

अन्त में परिभाषा के पाँच वाक्यों को एक साथ जमा कर परिभाषा स्पष्ट कर देनी चाहिये।

(ग) मूल्यांकन प्रश्नोत्तर – पढ़ाया गया पाठ छात्रों की समझ में आया या नहीं एवं पूर्व–दिन पढ़ाये गये पाठ को छात्रों ने तैयार किया या नहीं, इसकी जाँच के लिये बनाये गये प्रश्नोत्तर मूल्यांकन प्रश्नोत्तर कहलाते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं :–

(i) समापन मूल्यांकन (ii) पूर्व–पाठ मूल्यांकन

(i) समापन मूल्यांकन – पाठ समाप्त करने के पूर्व पढ़ाया गया पाठ छात्रों की समझ में आया या नहीं, यह जानने के लिये किये गये प्रश्नोत्तरों को समापन मूल्यांकन प्रश्नोत्तर कहते हैं।

(ii) पूर्व–पाठ मूल्यांकन – पूर्व दिन पढ़ाया हुआ पाठ छात्रों ने तैयार किया है या नहीं, इस दृष्टि से किये गये प्रश्नोत्तरों को पूर्व–पाठ मूल्यांकन प्रश्नोत्तर कहते हैं।

मूल्यांकन प्रश्न पूछते समय वस्तुनिष्ठ पद्धति में प्रयुक्त चार सोपानों को उलटा प्रयोग में लाना चाहिये, क्योंकि पढ़ाते समय सरलता से कठिनता की ओर जाते हैं तो मूल्यांकन के समय कठिनता से सरलता की ओर जाते हैं, यथा :–

(४) किसे कहते हैं या क्या है?

(३) इसको क्या कहते हैं?

(२) इनमें से क्या है या कौन है?

(१) है या नहीं?

प्रयोग :-

परिभाषा	प्रश्न
छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं।	४. विश्व किसे कहते हैं? ३. छह द्रव्यों के समूह को क्या कहते हैं? २. छह द्रव्यों का समूह विश्व है या गुण या पर्याय? १. छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं या नहीं?

ध्यान रहे उक्त प्रयोग करते समय ४ नम्बर का प्रश्न पूछने पर यदि छात्र प्रश्न का उत्तर न दे सकें तभी नं. ३ का प्रश्न पूछा जाना चाहिये। इसी प्रकार आगे नम्बर २ व नम्बर १ के प्रश्न भी तभी पूछे जाने चाहिये जब पूर्व प्रश्नों का उत्तर देने में छात्र असमर्थ रहें। पूर्व-प्रश्नों का उत्तर दे देने पर आगे के प्रश्न पूछना निरर्थक है।

यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि समापन के मूल्यांकन संबंधी प्रश्नों में और पूर्व-पठित पाठ संबंधी मूल्यांकन संबंधी प्रश्नों में मूलभूत अंतर यह रहता है कि समापन संबंधी प्रश्न तो पढ़ाया गया पाठ छात्रों की समझ में आया या नहीं, इस लक्ष्य से किये जाते हैं और पूर्व-पाठ मूल्यांकन संबंधी प्रश्न छात्रों ने पाठ तैयार किया या नहीं, इस लक्ष्य से पूछे जाते हैं। अतः पूर्व-पाठ मूल्यांकन प्रश्नों में छात्रों से याद करके लाये गये छंद भी सुने जा सकते हैं। समापन सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर यदि छात्र न दे सकें तो पुस्तक में से देखकर उत्तर देने को कहा जावे।

१३. सारांश कथन

अन्त में पाठ्यवस्तु का संक्षेप सारांश बताना चाहिये तथा परिभाषाओं व मूल सिद्धान्तों को दुहरा देना चाहिये। यह सारांश कथन कहलाता है।

१४. समापन

पाठ समाप्त करने के पूर्व पढ़ाये गये पाठ में से छात्रों से कुछ मूल्यांकन प्रश्न किये जाने चाहिये जिनसे पता चल सके कि अभीष्ट वस्तु छात्रों की समझ में आई है या नहीं। यदि संतोषजनक उत्तर न मिले तो उक्त विषय को अगले दिन विशेष स्पष्ट करना चाहिये। ध्यान रहे कि मूल्यांकन प्रश्नोत्तर पद्धति में वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों का उलटा प्रयोग होता है।

१५. गृहकार्य

पाठ की समाप्ति पर पाठ से संबंधित आवश्यक कार्य अगले दिन करके लाने के लिये दिया जाना चाहिये। गृहकार्य की जाँच अवश्य होनी चाहिये ताकि छात्र इस ओर उदासीनता न बरतें। पाठ में आई आवश्यक परिभाषाएँ, सिद्धान्त-वाक्य, भेद-प्रभेद एवं छन्द आदि याद करके लाने को भी कहा जाना चाहिये।

१६. अध्यापक कथन

अध्यापक पाठ-योजना में समझाने के लिये जो आवश्यक कथन यथास्थान नोट करते हैं, उन्हें अध्यापक कथन कहते हैं। इनके नोट करने से समझाया जाने वाला विषय व्यवस्थित हो जाता है। इसकी आवश्यकता प्रायः सामान्यार्थ विवेचन, विचार-विश्लेषण, सारांश कथन, समापन एवं गृहकार्य आदि में पड़ती है।

१७. आधार-परिचय

वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं में जो पाठ प्रतिष्ठित आचार्यों एवं विद्वानों द्वारा रचित महान् ग्रंथों के आधार पर लिखे गये हैं, उन पाठों को पढ़ाते समय उनके आधार ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों का परिचय देना ही आधार-परिचय है।

●

अध्याय द्वितीय

बालबोध प्रशिक्षण

बालबोध प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की बालबोध परीक्षा में निर्धारित बालबोध पाठमालाओं के अध्यापन की पद्धति में अध्यापक बन्धुओं को प्रशिक्षित करना एवं उसमें प्रतिपादित प्रमुख तात्त्विक सिद्धान्तों की ओर उनका ध्यान आकर्षित करना है।

बालबोध प्रशिक्षण सम्बन्धी उद्देश्य दो भागों में विभाजित किए जा सकते हैं :-

(क) सामान्य उद्देश्य

(ख) विशेष उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – सामान्य उद्देश्य वे हैं जो बालबोध में पढ़ाये जाने वाले सभी पाठों में सामान्य रूप से रहते हैं। वे मुख्यतः निम्नानुसार हैं :-

(i) छात्रों में आत्महितकारी शास्त्रों के पढ़ने की रुचि जाग्रत करना।

(ii) तत्त्वज्ञान और सदाचार सम्बन्धी ज्ञान कराना।

(iii) चारों अनुयोगों का समन्वित ज्ञान देना।

(iv) अपने धर्म-पूर्वजों के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी देना।

(v) सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एवं बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(vi) बालकों का सदाचार से युक्त नैतिक जीवन बनाना।

(vii) प्राप्त ज्ञान को अपने शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न करना।

(ख) विशेष उद्देश्य – विशेष उद्देश्य पढ़ाये जाने वाले पाठ से संबंधित होते हैं। अतः ये प्रत्येक पाठ के अलग–अलग होते हैं एवं पाठ्यवस्तु के अनुसार निर्धारित किये जाते हैं। इन्हें यथास्थान स्पष्ट किया जावेगा।

बालबोध पाठमालाओं के पाठों का पद्य, गद्य और संवाद के रूप में तीन प्रकार से एवं अनुयोगों के रूप में चार प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है तथा आदर्श पाठ–योजनाएँ बनाते समय बालबोध पाठमालाओं के तीनों भागों का प्रतिनिधित्व होना भी आवश्यक है। इन सब बातों का ध्यान रखते हुये इस अध्याय में निम्न पाँच पाठ–योजनाएँ दी जा रही हैं :–

(१) द्रव्य गुण पर्याय

(२) देवदर्शन

(३) पंचपरमेष्ठी

(४) सदाचार

(५) भगवान आदिनाथ

वैसे तो प्रायः सभी पाठों की योजना बनाने की विधि में कोई विशेष अन्तर नहीं रहता है किन्तु विषय–विलक्षणता की दृष्टि से कुछ परिवर्तन तो हो ही जाते हैं। जैसे कि पद्य–पाठों में सामान्यार्थ विवेचन किया जाता है तो गद्य और संवाद–पाठों में विचार–विश्लेषण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वैसे तो पद्य–पाठों में भी विचारों का विश्लेषण आवश्यकतानुसार किया ही जाता है और गद्य–पाठों में भी सामान्यार्थ बता दिया जाता है, पर मुख्यतः और गौणता की अपेक्षा ऐसा कथन है। अतः गद्य और संवाद पाठों में विचार–विश्लेषण शीर्षक दिया गया है और पद्य–पाठों में उसके स्थान पर सामान्यार्थ विवेचन।

आदर्श पाठ–योजना १

(द्रव्य गुण पर्याय)

स्थान – श्री महावीर दि. जैन उ. माध्यमिक विद्यालय, जयपुर

कक्षा – बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण – "द्रव्य गुण पर्याय"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – तत्त्वज्ञान संबंधी सामान्य जानकारी देना और उससे होने वाले लाभ बताकर उसके प्रति रुचि उत्पन्न करना।

(ख) विशेष उद्देश्य – द्रव्य गुण पर्याय का स्वरूप समझाना।

पूर्व–ज्ञान

छात्र छह द्रव्यों का स्वरूप बालबोध पाठमाला भाग २ में पढ़ चुके हैं।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर द्रव्य गुण पर्याय का दिग्दर्शक निम्न चार्ट :–

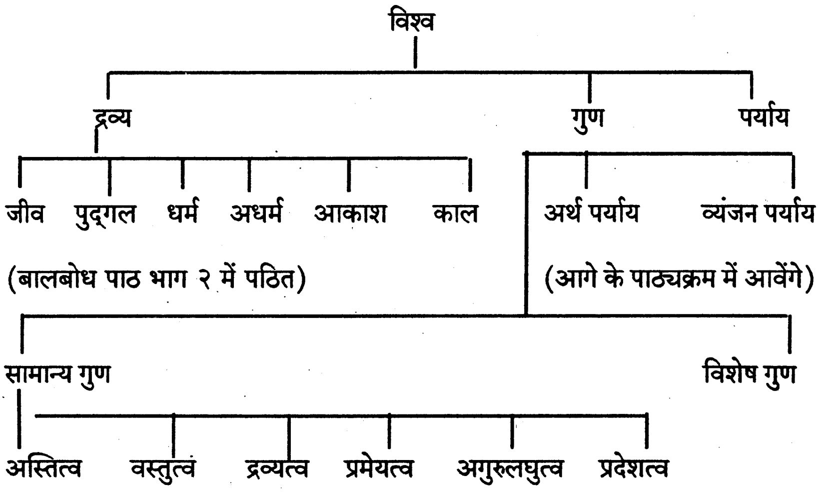

(वर्तमान पाठ का विषय)

उद्देश्य कथन

आज हम द्रव्य गुण पर्याय के बारे में समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनों में पढ़ाया जावेगा। प्रत्येक दिन के पाठ को दो–दो अन्वितियों में विभक्त किया जावेगा। प्रत्येक अन्विति में निम्नलिखित सोपान होंगे:–

(क) आदर्श वाचन

(ख) अनुकरण वाचन

(ग) विचार–विश्लेषण

(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(च) सारांश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"छात्र - गुरुजी आज .... ज्ञानमय कहा जाता है।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वयं संवाद–पद्धति में एकपात्रीय अभिनयपूर्वक उचित आरोह–अवरोह के साथ आदर्श वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन संवाद–विधि से ही करावेंगे। एक छात्र से छात्र वाले पाठ का एवं दूसरे छात्र से अध्यापक वाले पाठ का उचित आरोह–अवरोह के साथ वाचन करावेंगे तथा किसी तीसरे छात्र द्वारा या स्वयं उसमें आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार–विश्लेषण

अध्यापक अनुकरण वाचन के पश्चात् प्रस्तुत अन्विति में आये

हुये विचारों, सिद्धान्तों और परिभाषाओं को निम्न प्रकार विश्लेषण करके समझावेंगे :-

अध्यापक कथन - देखो भाई! हमने जो अंश अभी पढ़ा है उससे निम्न निष्कर्ष निकलते हैं :-

(१) विश्व का कभी नाश नहीं होता।

(२) छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं।

(३) गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं।

(४) द्रव्य-गुण और पर्याय वाला होता है।

(५) गुणों में होने वाले प्रति समय के परिवर्तन को पर्याय कहते हैं।

(६) जो द्रव्य के सम्पूर्ण भागों में और उसकी सम्पूर्ण अवस्थाओं में रहता है, उसको गुण कहते हैं।

नोट :- इसके बाद अध्यापक प्रत्येक निष्कर्ष को अलग-अलग स्पष्ट करेंगे।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. विश्व किसे कहते हैं?	१. द्रव्यों के समूह को।
२. द्रव्य किसे कहते हैं?	२. गुणों के समूह को।
३. गुण किसे कहते हैं?	३. जो द्रव्य के सब भागों और सब अवस्थाओं में रहें।
४. पर्याय किसे कहते हैं?	४. गुणों के परिणमन को।
५. क्या विश्व का कभी नाश हो सकता है?	५. नहीं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नों के उत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा अध्यापक बालकों को हृदयंगम करावेंगे।

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं।	१. गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं या नहीं?	१. कहते हैं।
	२. गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं या पर्याय?	२. द्रव्य।
	३. गुणों के समूह को क्या कहते हैं?	३. द्रव्य।
	४. द्रव्य किसे कहते हैं?	४. गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं।

नोट :- इसी प्रकार आगे सभी परिभाषाओं को तैयार कराया जायेगा।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त में सारांश कथन में परिभाषाओं और सिद्धान्तों को संक्षेप में सरल भाषा में दुहरा दिया जायेगा।

द्वितीय अन्विति

"छात्र आत्मा में ऐसे कितने.............विशेष गुण हुआ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

विचार–विश्लेषण – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – बालको! प्रत्येक द्रव्य में अनन्त गुण हैं। आत्मा भी एक द्रव्य है, उसमें भी अनन्त गुण हैं। पर ऐसा नहीं है कि द्रव्य अलग और गुण अलग हों, द्रव्य तो गुणमय ही है। आत्मा ज्ञानादि गुणों का पिण्ड है, भण्डार नहीं।

गुण दो प्रकार के होते हैं :-

(१) सामान्य गुण

(२) विशेष गुण

अस्तित्व गुण सब द्रव्यों में पाया जाता है, अतः वह सामान्य गुण है और ज्ञान गुण आत्मा में ही पाया जाता है, अतः वह आत्मा का विशेष गुण हुआ। इसी प्रकार रूप, रस आदि पुद्गल में ही पाये जाते हैं, अतः वे पुद्गल के विशेष गुण हुये।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. सामान्य गुण किसे कहते हैं?	१. जो गुण सब द्रव्यों में रहते हैं।
२. विशेप गुण किसे कहते हैं?	२. जो गुण सब द्रव्यों में न रहकर अपने–अपने द्रव्य में रहते हैं।
३. आत्मा ज्ञानादि गुणों का पिण्ड है या भण्डार?	३. पिण्ड।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो गुण सब द्रव्यों में रहते हैं उन्हें सामान्य गुण कहते	१. जो गुण सब द्रव्यों में रहते हैं उन्हें सामान्य गुण कहते हैं या नहीं?	१. कहते हैं।
	२. जो गुण सब द्रव्यों में रहते हैं उन्हें सामान्य गुण कहते हैं या विशेष गुण?	२. सामान्य गुण।
	३. जो गुण सब द्रव्यों में रहते हैं उन्हें क्या कहते हैं?	३. सामान्य गुण।
	४. सामान्य गुण किसे कहते हैं?	४. जो गुण सब द्रव्यों में रहते हैं।

नोट : इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओं और सिद्धान्त-वाक्यों को तैयार कराया जायेगा।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त में सारांश कथन में परिभाषाओं और सिद्धान्तों को दुहरा दिया जायेगा।

समापन

पाठ का समापन करते हुये अध्यापक निम्नलिखित प्रश्न करेंगे :-

(१) छह द्रव्यों के समूह को क्या कहते हैं?

(२) जो गुण सब द्रव्यों में रहते हैं - वे कौन से गुण हैं?

(३) आत्मा ज्ञानादि गुणों का पिण्ड है या भण्डार?

गृहकार्य

पठित पाठ में से अगले दिन के लिये अध्यापक गृहकार्य देंगे।

अध्यापक कथन - तो बालको! तुम्हें कल निम्नलिखित परिभाषायें याद करके लाना है :-

विश्व, द्रव्य, गुण, पर्याय, सामान्य गुण, विशेष गुण।

द्वितीय दिन

स्थान – श्री महावीर दि. जैन उ. माध्यमिक विद्यालय, जयपुर

कक्षा – बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण – "द्रव्य गुण पर्याय"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – पूर्ववत्।

(ख) विशेष उद्देश्य – सामान्य गुणों के भेद बताना तथा अस्तित्व, वस्तुत्व और द्रव्यत्व आदि छहों सामान्य गुणों को विशेष स्पष्ट करना।

पूर्व–ज्ञान

छात्र छह द्रव्यों का ज्ञान बालबोध पाठमाला भाग २ में प्राप्त कर चुके हैं तथा द्रव्य गुण पर्याय का सामान्य स्वरूप एवं गुण के सामान्य और विशेष भेद इसी पाठ के पूर्वांश में पढ़ चुके हैं।

सहायक सामग्री पूर्ववत्।

उद्देश्य कथन

बालको ! अब हम सामान्य गुणों के भेदों को समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी दो अन्वितियों में समाप्त होगा तथा इसमें प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो रहेंगे ही, पर द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से सबसे पहले 'पूर्व–पाठ मूल्यांकन' नामक एक सोपान और होगा।

पूर्व–पाठ मूल्यांकन

इसमें प्रथम दिन का पाठ छात्रों ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न किये जावेंगे :–

(१) द्रव्य किसे कहते हैं?

(२) सामान्य गुण किसे कहते हैं?

(३) विशेष गुण किसे कहते हैं?

प्रथम अन्विति

"छात्र सामान्य गुण कितने होते हैं।.............यह बताता है।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

विचार–विश्लेषण – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – बालको ! अभी हमने तीन सामान्य गुणों के बारे में पढ़ा। जिससे हम निम्न निष्कर्ष पर पहुँचे हैं :-

(१) प्रत्येक द्रव्य की सत्ता अनादि अनन्त है। उसे किसी ने बनाया नहीं है और न कोई उसे मिटा ही सकता है, क्योंकि प्रत्येक द्रव्य में अस्तित्व नाम का गुण है।

(२) कोई भी वस्तु लोक में बेकार नहीं है। प्रत्येक वस्तु कुछ न कुछ स्वयं का प्रयोजन लिये हुए हैं, क्योंकि प्रत्येक द्रव्य में वस्तुत्व नाम का गुण है।

(३) प्रत्येक द्रव्य परिणमनशील है। उसमें निरन्तर अपने आप परिणमन हुआ करता है, क्योंकि उसमें द्रव्यत्व नाम का गुण है।

अतः अस्तित्व गुण वस्तु की सत्ता, वस्तुत्व गुण सार्थकता एवं द्रव्यत्व गुण परिणमनशीलता सिद्ध करता है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. अस्तित्व गुण किसे कहते हैं?	१. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो।
२. वस्तुत्व गुण किसे कहते हैं?	२. जिस शक्ति के कारण द्रव्य में अर्थ क्रिया हो।
३. द्रव्यत्व गुण किसे कहते हैं?	३. जिस शक्ति के कारण द्रव्य की अवस्था निरन्तर बदलती रहती हो।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो	१. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे अस्तित्व गुण कहते हैं या नहीं?	१. कहते हैं।
उसे अस्तित्व गुण कहते हैं।	२. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे अस्तित्व गुण कहते हैं या वस्तुत्व या द्रव्यत्व?	२. अस्तित्व गुण
	३. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे कौनसा गुण कहते हैं?	३. अस्तित्व गुण
	४. अस्तित्व गुण किसे कहते हैं?	४. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो

नोट : इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओं और सिद्धान्त-वाक्यों को तैयार कराया जायेगा।

सारांश कथन

अन्विति के अंत में सारांश कथन में सभी परिभाषाओं को दुहरा दिया जायेगा।

द्वितीय अन्विति

"छात्र सामान्य गुण कितने होते हैं।.............यह बताता है।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

विचार-विश्लेषण – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – अभी हमने जो पाठ पढ़ा है उसमें हमें कई बातें मालूम हुई हैं :-

(१) ज्ञान से कुछ भी छिपा नहीं है, क्योंकि प्रत्येक पदार्थ में प्रमेयत्व नाम का गुण है जिसके कारण प्रत्येक पदार्थ किसी न किसी ज्ञान का विषय अवश्य बनता है।

(२) कोई भी द्रव्य एक दूसरे में मिल नहीं सकता। इसी प्रकार कोई गुण भी दूसरे गुण रूप नहीं हो सकता तथा एक द्रव्य के अनन्त गुण बिखर कर अलग-अलग भी नहीं हो सकते, क्योंकि प्रत्येक द्रव्य में अगुरुलघुत्व गुण है।

(३) प्रत्येक द्रव्य का कोई न कोई आकार रहता है। कोई द्रव्य बिना आकार का नहीं होता, क्योंकि प्रत्येक द्रव्य में प्रदेशत्व नामक गुण है।

(४) इन सब गुणों के जानने से दीनता, अभिमान और हीन भावना निकल जाती है और हम निर्भय हो जाते हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. प्रमेयत्व गुण किसे कहते हैं?	१. जिस शक्ति के कारण प्रत्येक द्रव्य किसी न किसी ज्ञान का विषय हो।
२. अगुरुलघुत्व गुण किसे कहते हैं?	२. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का द्रव्यपना कायम रहे अर्थात् एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप व एक गुण दूसरे गुण रूप नहीं होता और द्रव्य में रहने वाले अनन्त गुण बिखरते नहीं।
३. प्रदेशत्व गुण किसे कहते हैं?	३. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो।
४. द्रव्य गुण पर्याय के जानने से क्या लाभ है?	४. दीनता, अभिमान और भय समाप्त हो जाते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे प्रदेशत्व गुण कहते हैं।	१. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे प्रदेशत्व गुण कहते हैं या नहीं?	१. कहते हैं।
	२. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे प्रमेयत्व गुण कहते हैं या अगुरुलघुत्व या प्रदेशत्व	२. प्रदेशत्व गुण।
	३. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे कौनसा गुण कहते हैं?	३. प्रदेशत्व गुण।
	४. प्रदेशत्व गुण किसे कहते हैं?	४. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो।

नोट : इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओं और सिद्धान्त–वाक्यों को तैयार कराया जायेगा।

समापन

पाठ का समापन करते हुए अध्यापक निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :–

(१) जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे कौनसा गुण कहते हैं?

(२) जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो वह कौनसा गुण है?

गृहकार्य – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – तो बालको ! तुम्हें कल छहों सामान्य गुणों की परिभाषायें याद करके लाना है।

–●–

आदर्श पाठ-योजना २

(देव-दर्शन)

स्थान - श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला, उदयपुर

कक्षा - बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण - "देव-दर्शन"

"अति पुण्य उदय.................."स्तुति के आरंभ के दो छन्द।

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य - सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एवं बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(ख) विशेष उद्देश्य - देव-दर्शन नामक स्तुति का भाव-ज्ञान छात्रों को देना एवं स्तुति याद कराना।

पूर्व-ज्ञान

देव के सामान्य स्वरूप की जानकारी बालकों को है। बालबोध पाठमाला भाग २ के देव-स्तुति नामक पाठ में देव के स्वरूप व स्तुति से तथा बालबोध पाठमाला भाग १ में देव-दर्शन नामक पाठ में देव-दर्शन की विधि से छात्र परिचित हो चुके हैं।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, यदि संभव हो तो श्री जिनेन्द्र भगवान का कैलेण्डर साइज चित्र।

उद्देश्य कथन

आज देव-दर्शन पाठ के माध्यम से हम दुःखी क्यों हैं और देव-दर्शन से क्या लाभ है, यह समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिन में पढ़ाया जावेगा। प्रत्येक दिन दो छंद पढ़ाये जावेंगे। प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियों में विभाजित करके पढ़ाया जायेगा। प्रत्येक अन्विति में निम्नलिखित सोपान होंगे :-

(क) आदर्श वाचन

(ख) अनुकरण वाचन

(ग) सामान्यार्थ विवेचन

(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(च) सारांश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"अति पुण्य उदय मम आया ....नहिं पान कर।"

आदर्श वाचन

भक्ति का वातावरण उत्पन्न करने के लिये अध्यापक पद्य विधि से आवश्यक स्वर और लय के साथ उक्त छन्द का आदर्श वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक छात्रों में से किन्हीं एक दो छात्रों से उक्त छन्द सस्वर वाचन करावेंगे तथा उनके वाचन में आवश्यक सुधार स्वयं या अन्य छात्रों से करावेंगे।

सामान्यार्थ विवेचन

इसमें अध्यापक छन्द का सामान्यार्थ निम्नानुसार बतायेंगे :-

अध्यापक कथन – भक्त भगवान से कह रहा है कि हे प्रभो! आज मैंने महान पुण्योदय से आपके दर्शन प्राप्त किये हैं। आज तक आपको जाने बिना मैंने अनन्त दुःख प्राप्त किये हैं।

मैंने इस संसार को अपना जानकर और सर्वज्ञ भगवान द्वारा कहे गये, आत्मा का हित करने वाले, वीतराग धर्म को पहिचाने बिना अनन्त दुःख प्राप्त किये हैं। आज तक मैंने संसार बढ़ाने वाले, सच्चे सुख का नाश करने वाले, पंचेन्द्रिय के विषयों में सुख मानकर सुख के खजाने स्वपर भेद-विज्ञान रूप अमृत का पान नहीं किया है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

छात्रों को छन्द में आये भावों का बोध कराने के लिये अध्यापक स्वयं के द्वारा घर से तैयार करके लाये हुए प्रश्नोत्तर करेंगे :-

प्रश्न	उत्तर
१. उक्त छंद में जीव के दुःखी होने के कितने कारण बताये हैं?	१. पाँच।
२. कौन-कौन से?	२. (क) सच्चे देव की पहिचान न होना। (ख) जगत को अपना मानना। (ग) धर्म को नहीं पहिचानना। (घ) विषयों में सुख मानना। (ङ) अपनी और पराये की पहिचान नहीं होना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त वस्तु को अध्यापक वस्तुनिष्ठ पद्धति के निम्नलिखित चार सोपानों द्वारा छात्रों को हृदयंगम करावेंगे :-

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव दुःखी है।	१. सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव दुःखी है या नहीं?	१. है।
	२. सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव सुखी है या दुःखी है?	२. दुःखी है।
	३. सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव कैसा है?	३. दुःखी है।
	४. जीव दुःखी क्यों है?	४. सच्चे देव की पहिचान न होने से।

नोट : इसी प्रकार जीव के दुःखी होने के शेष चारों कारणों को वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरों से तैयार कराया जाना चाहिये। तदुपरान्त जीव दुःखी क्यों है? इस प्रश्न के उत्तर में पाँचों कारण स्पष्ट कर दिये जावेंगे।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त में सारांश कथन में जीव के दुःखी होने के पाँचों कारणों को बतावेंगे।

अध्यापक कथन – तो बालको ! उक्त छन्द में जीव के दुःखी होने के निम्न पाँच कारण बताये गये हैं :-

(१) सच्चे देव की पहिचान न होना।

(२) जगत को अपना मानना।

(३) धर्म (वस्तु का स्वरूप) को नहीं पहिचानना।

(४) विषयों में सुख मानना।

(५) अपनी और पराये की पहिचान न होना।

द्वितीय अन्विति

"छात्र सामान्य गुण कितने होते हैं।.............यह बताता है।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन –

इसमें अध्यापक छन्द का सामान्यार्थ निम्नानुसार बताएँगे :-

अध्यापक कथन – भक्त भगवान से कह रहा है कि आज आपके चरण मेरे हृदय में बस गये हैं, उन्हें देखकर कुबुद्धि और मोह भाग गये हैं। आत्मज्ञान की कला हृदय में जागृत हो गई है और मेरी रुचि आत्महित में लग गई है। सत्समागम में मेरा मन लगने लगा है। अतः मेरे मन में यह भावना जागृत हो गई है कि आपकी भक्ति ही में रमा हूँ।

हे भगवन ! यदि वचन बोलूँ तो आत्महित करने वाले प्रिय वचन ही बोलूँ। मेरा चित्त गुणीजनों के गान में ही रहे अथवा आत्महित के निरूपक शास्त्रों के अभ्यास में ही लगा रहे। मेरा मन दोषों के चिंतन और वाणी दोषों के कथन से दूर रहे।

इस प्रकार भक्त भगवान के समक्ष अपने भाव प्रकट कर रहा है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न.	उत्तर
१. देवदर्शन (भगवान की पहिचान) से कितने लाभ प्राप्त होते हैं?	१. पाँच।
२. कौन-कौन से?	२. (क) मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान का अभाव (ख) आत्मज्ञान की प्राप्ति। (ग) आत्महित में रुचि उत्पन्न होना। (घ) भगवान के प्रति बहुमान और सत्संग के प्रति प्रेम। (ङ) विकथाओं से हटकर मन का वीतरागी शास्त्रों में लगना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

सिद्धान्त-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान की पहिचान से मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान का अभाव हो जाता है।	१. भगवान की पहिचान से मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान का अभाव होता है या नहीं?	१. होता है।
	२. भगवान की पहिचान से मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान का अभाव होता है या सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान का?	२. मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान का
	३. भगवान की पहिचान से किसका अभाव होता है?	३. मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान का
	४. मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान का अभाव किससे होता है?	४. भगवान की पहिचान से।

नोट : इसी प्रकार पाँचों सिद्धान्त-वाक्यों को तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त में देव-दर्शन (भगवान की पहिचान) के पाँचों लाभों को दुहरा दिया जायेगा।

समापन

पठित वस्तु को छात्रों ने कितना हृदयंगम किया है, यह जानने के लिये अध्यापक निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :-

(१) यह जीव दुःखी क्यों है?

(२) देव-दर्शन से (देव की पहिचान से) क्या-क्या लाभ हैं?

गृहकार्य

पठित पाठ में से अगले दिन करके लाने के लिये अध्यापक निम्नलिखित कार्य देंगे :-

अध्यापक कथन - बालको ! आज का अपना पाठ समाप्त हो रहा है। तुम्हें आज पढ़ाये गये स्तुति के छंद व बोधगम्य प्रश्नों के उत्तर याद करके लाना है।

द्वितीय दिन

स्थान - श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला, उदयपुर

कक्षा - बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण - "देव-दर्शन"

"अति पुण्य उदय................"स्तुति के अन्तिम के दो छन्द।

उद्देश्य - पूर्ववत्।

पूर्व-ज्ञान - पूर्ववत्।

सहायक सामग्री - पूर्ववत्।

उद्देश्य कथन

आज हम देव-दर्शन नाम पाठ के माध्यम से भगवान का सच्चा भक्त कैसा बनना चाहता है और भक्त से भगवान बनने का मार्ग क्या है - यह समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से इसमें प्रथम दिन के प्रस्तुतीकरण वाले सम्पूर्ण सोपान तो होंगे ही, साथ ही सबसे पहले 'पूर्व-पाठ मूल्यांकन' नामक एक सोपान और होगा।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

इसमें प्रथम दिन का पाठ छात्रों ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न किये जावेंगे :-

(१) देव-दर्शन स्तुति का प्रथम छंद सुनाइये।

(२) देव-दर्शन से होने वाले लाभ बताइये।

प्रथम अन्विति

"कब समता..............................रिपुकों निर्जरूँ।"

आदर्श वाचन - पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन - पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन - पूर्ववत्।

अध्यापक कथन - भक्त कह रहा है कि मेरे मन में यह भाव जग रहे हैं कि वह दिन कब आयेगा जब मैं हृदय में समता भाव धारण करके, बारह भावनाओं का चिंतवन करके तथा ममता रूपी भूत को भगाकर वन में जाकर मुनि दीक्षा धारण करूँगा। वह दिन कब आयेगा जब मैं दिगम्बर वेष धारण करके अट्ठाईस मूलगुण धारण करूँगा, बाईस परीषहों पर विजय प्राप्त करूँगा और दशधर्मों को धारण करूँगा, सुख देने वाले बारह प्रकार के तप तपूँगा और आश्रव और बंध भावों को त्याग नये कर्मों को रोक कर संचित कर्मों की निर्जरा कर दूँगा।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न.	उत्तर
१. ज्ञानी श्रावक क्या बनना चाहता है?	१. ममता रहित व समता सहित बनवासी मुनि।
२. वह कैसा मुनि बनना चाहता है?	२. अट्ठाईस मूलगुण धारण करने वाला नग्न दिगम्बर भावलिंगी मुनि।
३. मुनि बनकर वह क्या करना चाहता है?	३. आश्रव-बंध का नाश तथा संवर-निर्जरा की प्राप्ति।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य–वाक्य	प्रश्न	उत्तर
ज्ञानी भक्त ममता रहित और समता सहित बनवासी मुनि बनना चाहता है।	१. ज्ञानी श्रावक ममता रहित व समता सहित बनवासी मुनि बनना चाहता है या नहीं?	१. बनना चाहता है।
	२. ममता रहित व समता सहित बनवासी मुनि कौन बनना चाहता है – ज्ञानी श्रावक या अज्ञानी श्रावक?	२. ज्ञानी श्रावक।
	३. ममता रहित व समता सहित बनवासी मुनि कौन बनना चाहता है?	३. ज्ञानी श्रावक।
	४. ज्ञानी श्रावक क्या बनना चाहता है?	४. ममता रहित व समता सहित बनवासी मुनि।

नोट : इसी प्रकार अन्य प्रश्नोत्तरों को भी तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन

इसमें ज्ञानी भक्त क्या चाहता है यह सब छन्द के आधार पर संक्षेप में निम्न प्रकार से बता दिया जायेगा :–

अध्यापक कथन – ज्ञानी भक्त चाहता है कि वह दिन कब प्राप्त करूँ जब नग्न दिगम्बर साधु बनकर अट्ठाईस मूलगुण धारण करूँ, बाईस परीषह सहूँ, दस धर्मों को धारण करूँ, बारह प्रकार के तप करके आश्रव और बंध को भेद दूँ, नवीन आते हुये कर्मों को रोक दूँ एवं पुराने कर्मों की निर्जरा करदूँ।

द्वितीय अन्विति

"कब धन्य सुअवसर पाऊँ.................."भवसागर तरूँ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – ज्ञानी भक्त कह रहा है कि वह धन्य घड़ी कब होगी जब मैं अपने में ही रम जाऊँगा। कर्त्ता-कर्म के भेद का भी अभाव करता हुआ राग-द्वेष दूर करूँगा और आत्मा को पवित्र बना लूँगा – जिससे आत्मा में क्षायिक चारित्र प्रकट करके अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य से युक्त हो जाऊँगा व आनन्दकन्द जिनेन्द्र पद प्राप्त कर लूँगा। मेरा वह दिन कब आवेगा जब इस दुःख रूपी भवसागर को पार कर अमर पद प्राप्त करूँगा।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. ज्ञानी भक्त क्या चाहता है?	१. (क) आत्मा में रमण करना। (ख) रागादि दूर करना। (ग) अनन्त चतुष्टय प्राप्त करना। (घ) जिनेन्द्र भगवान बनना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

बोधगम्य प्रश्नों के चारों उत्तरों को प्रथम दिन की प्रथम अन्विति के प्रश्नोत्तरों के समान वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन

सारांश कथन में उपरोक्त प्रश्नोत्तरों को दुहरा दिया जायेगा।

समापन

पाठ समाप्त करने के पूर्व अध्यापक निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :-

(१) ज्ञानी भक्त कैसा मुनि बनना चाहता है?

(२) ज्ञानी भक्त का अंतिम लक्ष्य क्या है?

गृहकार्य

बालको! तुम्हें कल सम्पूर्ण स्तुति के छंद व बोधगम्य प्रश्नों के उत्तर याद करके लाना है।

●-

आदर्श पाठ–योजना ३
(पंच परमेष्ठी)

स्थान – श्री वीतराग–विज्ञान पाठशाला, चौक, भोपाल

कक्षा – बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण – ''पंच परमेष्ठी''

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – तत्त्वज्ञान संबंधी सामान्य जानकारी देना।

(ख) विशेष उद्देश्य – पंच परमेष्ठी का स्वरूप समझाना।

पूर्व–ज्ञान

छात्र पंच परमेष्ठी का नाममात्र ज्ञान बालबोध पाठमाला भाग–१ के प्रथम पाठ से प्राप्त कर चुके हैं।

पंच परमेष्ठी

अरंहत   सिद्ध   आचार्य   उपाध्याय   साधु

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर पंच परमेष्ठी का निम्न चार्ट :–

उद्देश्य कथन

आज हम पंच परमेष्ठी के बारे में विस्तार से समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

यह पाठ गद्य पाठ के रूप में प्रस्तुत किया जायेगा। अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनों में पढ़ाया जायेगा। प्रत्येक दिन के पाठ को दो–दो अन्वितियों में विभक्त किया जायेगा। प्रत्येक अन्विति में निम्नलिखित सोपान होंगे :–

(क) आदर्श वाचन

(ख) अनुकरण वाचन

(ग) विचार-विश्लेषण

(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(च) सारांश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"णमो अरिहंताणं ....अरहंत के गुण हैं।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वयं गद्य विधि से अर्द्धविराम, पूर्णविराम का ध्यान रखते हुए स्पष्ट आदर्श वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक एक, दो या अधिक छात्रों से अनुकरण वाचन करावेंगे तथा स्वयं या अन्य छात्रों द्वारा आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण

प्रस्तुत अन्विति में आये हुए विचारों, सिद्धान्तों और परिभाषाओं का अध्यापक निम्न प्रकार विश्लेषण करेंगे :-

अध्यापक कथन – बालको ! अभी हमने णमोकार महामंत्र पढ़ा। उसमें पूर्ण वीतरागी अरहंतों, सिद्धों और वीतराग मार्ग पर चलने वाले आचार्य, उपाध्याय और मुनिराजों को नमस्कार किया गया है।

उक्त पाँचों को ही पंच परमेष्ठी कहते हैं, क्योंकि वे परमपद में स्थित हैं। अरहंत भगवान पूर्ण ज्ञान, दर्शन, सुख और वीर्य के धारी होते हैं। वैसे शास्त्रों में उनके ४६ गुण कहे गये हैं, पर वस्तुतः उनके उक्त ४ गुण हैं। बाकी कुछ तो शरीर से, कुछ पुण्य-सामग्री से सम्बन्धित हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. नमस्कार मंत्र में किनको नमस्कार किया गया है?	१. पंच परमेष्ठी को।
२. अरहंत परमेष्ठी किन्हें कहते हैं?	२. (क) जो गृहस्थपना त्यागकर (ख) मुनिधर्म अंगीकार करके (ग) निज स्वभाव साधन द्वारा (घ) चार घाति कर्मों का नाश करके (ङ) अनन्त चतुष्टय प्राप्त करते हैं।
३. अरहन्त के कितने गुण होते हैं?	३. शास्त्रों में अरहन्त के ४६ गुणों का वर्णन है। उनमें अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य ये ४ गुण तो आत्माश्रित होने से वास्तविक उनके हैं। शेष ४२ व्यवहार से उनके कहे जाते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

लम्बी परिभाषाओं के तैयार कराने में वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपान न लगाकर उसे निम्नलिखितानुसार कई खण्ड–वाक्यों में विभाजित करके तैयार कराना चाहिये :–

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो गृहस्थपना	(क) क्या त्यागकर अरहंत बनते हैं?	गृहस्थपना।
त्यागकर मुनिधर्म अंगीकार करके	(ख) क्या अंगीकार करके अरहंत बनते हैं?	मुनिधर्म।
निजस्वभाव साधन द्वारा चार घाति	(ग) किस साधन द्वारा अरहंत बनते हैं?	निज स्वभाव साधन द्वारा
कर्मों का नाश करके अनन्त चतुष्टय	(घ) किनका नाश करके अरहंत बनते हैं?	चार घाति कर्मों का।
प्राप्त करते हैं, उन्हें अरहंत कहते हैं।	(ङ) क्या प्राप्त करके अरहंत बनते हैं? बनते हैं?	अनन्त चतुष्टय

नोट : अन्त में परिभाषा के पाँचों वाक्यों को एक साथ जमा कर परिभाषा स्पष्ट कर देनी चाहिये।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त में पठित अंश का सारांश बताना चाहिये तथा अरहंत की परिभाषा को दुहरा देना चाहिए।

द्वितीय अन्विति

"जो गृहस्थ अवस्था का........................अव्याबाध"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – बालको! हमने अभी सिद्ध की परिभाषा पढ़ी तथा उनके आठ गुणों को जाना। सिद्ध की परिभाषा में बहुत-सी बातें तो अरहंत की परिभाषा के समान ही हैं। जैसे गृहस्थपना त्यागकर आदि। अरहंत होने तक तो वही स्थिति है। इतना अन्तर है कि सिद्धों ने चार अघाति कर्मों का भी अभाव कर दिया है और लोक के अग्र भाग में विदेह विराजमान हो गये हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. सिद्ध परमेष्ठी किसे कहते हैं? या सिद्ध कैसे बनते हैं?	१. (क) जो गृहस्थपना त्याग कर (ख) मुनिधर्म साधन द्वारा (ग) आठों घाति व अघाति कर्मों का नाश करके (घ) समस्त द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म से रहित होकर (ङ) आत्मिक गुण प्रकट करके (च) लोक के अग्रभाग में किंचित् न्यून पुरुषाकार बिराजमान होते हैं, उन्हें सिद्ध कहते हैं।
२. सिद्धों के कितने गुण होते हैं?	२. आठ गुण होते हैं।
३. अरहंत और सिद्धों में क्या अन्तर है?	३. (क) अरहंत शरीर सहित होते हैं। सिद्ध शरीर रहित होते हैं। (ख) अरहंत भगवान ४ घाति कर्म रहित होते हैं। सिद्ध भगवान आठों कर्मों से रहित होते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

सिद्धों की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से प्रथम अन्विति में आगत अरहंत की परिभाषा के समान तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन – पूर्ववत्।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्न मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :–

(१) कितने कर्मों का अभाव करके सिद्ध बनते हैं?

(२) सिद्ध भगवान के कितने गुण होते हैं?

(३) अनन्त चतुष्टय किसे कहते हैं?

गृहकार्य

अध्यापक अगले दिन करके लाने के लिये निम्न कार्य देंगे :–

अध्यापक कथन – तो बालको! तुम्हें कल अरहंत और सिद्ध की परिभाषा व उनके गुण याद करके लाना है।

द्वितीय दिन

स्थान – श्री वीतराग–विज्ञान पाठशाला, चौक, भोपाल

कक्षा – बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण – "आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – पूर्ववत्।

(ख) विशेष उद्देश्य – आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी का स्वरूप समझाना।

पूर्व–ज्ञान

बालबोध पाठमाला प्रथम भाग के आधार पर पंच परमेष्ठी का सामान्य ज्ञान एवं कल के पाठ के आधार पर अरहंत और सिद्ध परमेष्ठी का विशेष ज्ञान छात्रों को है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर निम्न चार्ट :–

पंच परमेष्ठी

- आचार्य साधु
- उपाध्याय साधु
- सामान्य साधु

उद्देश्य कथन

कल हम अरहंत और सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप तो अच्छी तरह समझ चुके हैं। आज आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी का स्वरूप समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी दो अन्वितियों में समाप्त होगा। इसमें प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो रहेंगे ही, पर द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से सबसे पहले 'पूर्व-पाठ मूल्यांकन' नाम का एक सोपान और होगा।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

इसमें प्रथम दिन का पाठ छात्रों ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्न मूल्यांकन प्रश्न किए जावेंगे :-

(१) अरहंत किसे कहते हैं?

(२) सिद्ध कैसे बनते हैं?

प्रथम अन्विति

"आचार्य, उपाध्याय और साधु...........आचार्य कहलाते हैं।"

आदर्श वाचन - पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन - पूर्ववत्।

विचार-विश्लेषण - पूर्ववत्।

अध्यापक कथन - हमने अभी जो पढ़ा है उससे पता चलता है कि आचार्य, उपाध्याय और साधु, साधुओं के ही भेद हैं। सामान्य से साधु उन्हें कहते हैं - जो विरागी होकर सम्पूर्ण परिग्रह छोड़कर शुद्धोपयोगरूप मुनिधर्म अंगीकार करते हैं और आत्मा के अनुभव में लगे रहते हैं। यदि कभी शुभराग भी आवे तो उसे छोड़ने योग्य ही मानते हैं और अशुभ भाव तो उन्हें होते ही नहीं हैं। ऐसे नग्न दिगम्बर मुनिराज ही सच्चे साधु हैं।

उनमें जो रत्नत्रय की अधिकता से मुनिसंघ के नेता हुये हैं, उन्हें आचार्य कहते हैं। वे भी निरन्तर आत्मलीन तो रहते ही हैं, पर जब शुभ राग होता है तो धर्मोपदेश देते हैं, योग्य विरागी व्यक्तियों को दीक्षा देते हैं एवं अपने दोष प्रकट करने वालों को प्रायश्चित्त देते हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. आचार्य, उपाध्याय और साधुओं का सामान्य स्वरूप बताइये। अथवा सामान्य साधु का स्वरूप बताइये।	१. जो विरागी होकर समस्त परिग्रह त्यागकर आत्मानुभव किया करते हैं और जिन्हें अशुभ भाव तो होता ही नहीं और जो शुभ भाव होता है उसे भी हेय मानते हैं, वे ही सच्चे साधु हैं।
२. आचार्य परमेष्ठी किन्हें कहते हैं? कहते हैं?	२. जो रत्नत्रय की अधिकता से मुनि संघ में नेता पद को प्राप्त हुये हैं, मुख्यतया आत्मलीन रहते हैं, पर कभी–कभी धर्मोपदेश देते हैं, दीक्षा देते हैं, प्रायश्चित विधि से शुद्ध करते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
रो रत्नत्रय की अधिकता से मुनिसंघ में नेतापद को प्राप्त हुये हैं, मुख्यतया आत्मलीन रहते हैं, पर कभी–कभी धर्मोपदेश देते हैं, दीक्षा देते हैं, प्रायश्चित्त विधि से शुद्ध करते हैं – उन्हें आचार्य कहते हैं। अरहंत कहते हैं।	१. जो रत्नत्रय की अधिकता से मुनि संघ में नेतापद को प्राप्त हुये हैं, उन्हें क्या कहते हैं?	१. आचार्य परमेष्ठी
	२. जो मुख्यतया आत्मलीन रहते हैं, पर कभी–कभी धर्मोपदेश देते हैं, दीक्षा देते हैं, प्रायश्चित्त विधि से शुद्ध करते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?	२. आचार्य परमेष्ठी

नोट : इसी प्रकार आगत सभी प्रत्येक लंबी परिभाषा को कई हिस्सों में विभाजित करके वस्तुनिष्ठ पद्धति की यथासंभव विधियों का प्रयोग करके तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन – पूर्ववत्।

द्वितीय अन्विति

"जो बहुत जैन शास्त्रों....................अतः वे पूज्य हैं।"

आदर्श वाचन - पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन - पूर्ववत्।

विचार-विश्लेषण - पूर्ववत्।

अध्यापक कथन - अभी हमने उपाध्याय और साधु परमेष्ठी के बारे में पढ़ा। ध्यान रहे जो सामान्य साधु के संबंध में पढ़ चुके थे, वे सब गुण तो आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी में पाये ही जाते हैं। उनकी अपेक्षा ये विशेषताओं और रहती हैं।

उपाध्याय परमेष्ठी विशेष विद्वान होते हैं, अतः उन्हें आचार्य संघ में अध्यापन का कार्य सौंपते हैं। वे आत्मा में तो लीन रहते ही हैं, पर शुभ भाव के काल में शास्त्रों के अध्ययन और अध्यापन का कार्य करते हैं।

आचार्य, उपाध्याय के अतिरिक्त २८ मूलगुण धारी सम्पूर्ण अंतरंग-बहिरंग परिग्रह से मुक्त, सदा आत्मध्यान में लीन रहने वाले, सांसारिक झँझटों से दूर रहने वाले साधु ही, साधु परमेष्ठी हैं।

पाँचों परमेष्ठी वीतराग-विज्ञानमय होते हैं। अरहंत व सिद्ध पूर्ण वीतरागी और सर्वज्ञ होते हैं तथा आचार्य, उपाध्याय व साधु अल्प-वीतरागी एवं आत्मज्ञानी होते हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. उपाध्याय परमेष्ठी किन्हें कहते हैं	१. जो साधु बहुत जैन शास्त्रों के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा संघ में पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते हैं, उन्हें उपाध्याय परमेष्ठी कहते हैं।
२. साधु की परिभाषा बताइये।	२. आचार्य एवं उपाध्याय को छोड़कर जो मुनि २८ मूलगुणों का अखंडित पालन करते हैं, समस्त अंतरंग एवं बहिरंग परिग्रह से रहित होते हैं तथा सदा ज्ञान-ध्यान में लवलीन रहते हैं, उन्हें साधु परमेष्ठी कहते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो साधु बहुत जैन शास्त्रों के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा संघ में पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते हैं, उन्हें उपाध्याय परमेष्ठी कहते हैं।	१. जो साधु बहुत जैन शास्त्रों के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा संघ में पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते हैं, उन्हें उपाध्याय कहते हैं या नहीं?	१. कहते हैं।
	२. जो साधु बहुत जैन शास्त्रों के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा संघ में पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते हैं, उन्हें उपाध्याय कहते हैं या शिक्षक या आचार्य?	२. उपाध्याय।
	३. जो साधु बहुत जैन शास्त्रों के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा संघ में पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?	३. उपाध्याय।
	४. उपाध्याय किन्हें कहते हैं?	४. जो साधु बहुत जैन शास्त्रों के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा संघ में पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते हैं।

नोट : यदि उक्त परिभाषा लम्बी प्रतीत हो तो कई हिस्सों में विभाजित करके वस्तुनिष्ठ पद्धति की यथासंभव विधियों का प्रयोग करके तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त में सारांश कथन में परिभाषाओं और सिद्धान्तों को संक्षेप में सरल भाषा में दुहरा दिया जायेगा।

समापन

पाठ समाप्त करने के पूर्व अध्यापक निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :-

(१) मुनि संघ में अध्यापन का कार्य कौन करते हैं?

(२) मुनि संघ में प्रायश्चित्त विधि से शुद्ध कौन करते हैं?

गृहकार्य - पूर्ववत्।

अध्यापक कथन - तो बालको ! तुम्हें कल पाँचों परमेष्ठियों का स्वरूप याद करके लाना है।

आदर्श पाठ–योजना ४
(सदाचार)

स्थान – श्री महावीर दि. जैन उ. मा. बालिका विद्यालय, जयपुर

कक्षा – बालबोध द्वितीय खण्ड

प्रकरण – ''आंतरिक व बाह्य सदाचार''

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – सदाचार संबंधी ज्ञान कराना तथा सदाचारयुक्त जीवन बिताने की प्रेरणा देना।

(ख) विशेष उद्देश्य – (१) क्रोध, मान, माया, लोभ और हठ छोड़ने की ओर प्रेरित करना व (२) रात्रि भोजन त्याग करने की प्रेरणा देना तथा (३) सभा–संचालन की पद्धति से परिचित कराना।

पूर्व–ज्ञान

बालबोध पाठमाला भाग २ के 'कषाय' नामक पाठ में कषायों का सामान्य स्वरूप, वे कैसे उत्पन्न होती हैं और उनका अभाव किस प्रकार किया जा सकता है – इतना ज्ञान छात्र प्राप्त कर चुके हैं।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर लिखा हुआ निम्नानुसार चार्ट :–

सदाचार

- आंतरिक सदाचार
  - क्रोध, मान, माया, लोभ व हठ का त्याग
- बाह्य सदाचार
  - रात्रि भोजन, अनछना जल का त्याग

उद्देश्य कथन

बालको! आज हम एक क्रोधी व हठी बालक की कहानी पढ़ेंगे, जिसमें यह देखेंगे कि क्रोधी और हठी बालकों की क्या दशा होती है।

प्रस्तुतीकरण

यह पाठ संवाद पाठ के अन्तर्गत बाल-सभा के रूप में प्रस्तुत किया जायेगा। अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनों में पढ़ाया जायेगा। प्रत्येक दिन के पाठ को दो-दो अन्वितियों में विभक्त किया जायेगा। प्रत्येक अन्विति में निम्नलिखित सोपान होंगे :-

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) विचार-विश्लेषण
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) सारांश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"कक्षा चार के बालकों ....ग्रहण करता हूँ।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वयं संवाद-विधि से उचित आरोह-अवरोह के साथ आदर्श वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन करावेंगे। एक छात्र अध्यक्ष संबंधी पाठ का वाचन करेगा। दूसरा छात्र शान्तिलाल का पाठ पढ़ेगा। अध्यापक स्वयं या अन्य छात्र द्वारा उनमें आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण

पठित पाठ में कहानी के माध्यम से आये विचारों का विश्लेषण अध्यापक करेंगे :-

अध्यापक कथन - हठी बालक की कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जो बालक हठी, क्रोधी, मानी और लोभी होते हैं उन्हें सदा दुःख उठाना पड़ता है तथा भाई-बहनों का आपस में जरा-जरा सी बात पर झगड़ पड़ना भी अच्छी बात नहीं है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. हठी बालक में कौन-कौन से दुर्गुण थे?	१. हठी बालक क्रोधी, मानी और लोभी था। वह बात-बात पर भाई-बहनों से लड़ पड़ता था तथा माता-पिता की आज्ञा नहीं मानता था।
२. इन दुर्गुणों का उसे क्या फल मिला?	२. लड्डू भी नहीं मिला और बिच्छू ने भी काट खाया।
३. इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?	३. हमें क्रोध, मान, लोभ और हठ नहीं करना चाहिये। आपस में लड़ना-झगड़ना भी नहीं चाहिये तथा माता-पिता व गुरुजनों की आज्ञा माननी चाहिये।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

यहाँ बोधगम्य प्रश्नोत्तरों को तैयार कराने के लिए वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपान लगाना संभव नहीं। अतः निम्नानुसार तथ्य-वाक्य को कई वाक्य-खण्डों में विभाजित करके पाठ तैयार कराया जाना चाहिये :-

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
हठी बालक क्रोधी मानी और लोभी था। वह बात-बात पर भाई-बहिनों से लड़ पड़ता था तथा माता-पिता की आज्ञा नहीं मानता था।	हठी बालक में कौन-कौन से दुर्गुण थे?	१. वह क्रोधी, मानी, लोभी और हठी था। २. बात-बात पर भाई-बहनों से लड़ पड़ता था। ३. माता-पिता की आज्ञा नहीं मानता था।

नोट : इसी प्रकार सभी बोधगम्य प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ पद्धति की यथासंभव विधि से तैयार कराया जाना चाहिये।

सारांश कथन

सारांश कथन में हठी बालक के दुर्गुणों से होने वाली हानि बताकर छात्रों को दुर्गुणों के छोड़ने की प्रेरणा दी जायेगी।

अध्यापक कथन – बालको! जो बालक व्यर्थ ही बात–बात में अपने भाई–बहनों से लड़ पड़ते हैं, बहुत क्रोध करते हैं, घमंडी होने के कारण माता–पिता की बात भी नहीं मानते हैं, हठ करते हैं – उनको जीवन में बहुत दुःख उठाने पड़ते हैं। अतः हमें उक्त दुर्गुण छोड़कर अच्छे बालक बनना चाहिये।

द्वितीय अन्विति

"अध्यक्ष – (खड़े होकर) ....ग्रहण करती हूँ।"

आदर्श वाचन पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन करावेंगे। एक छात्र अध्यक्ष संबंधी पाठ का व दूसरा छात्र निर्मला बहिन का पाठ पढ़ेगा। अध्यापक स्वयं या अन्य छात्र द्वारा उनमें आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार–विश्लेषण पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – बालको! अभी तुमने सुना कि रात्रि में भोजन करने से बहुत हानियाँ होती हैं। सूर्य–प्रकाश के अभाव में कीड़े–मकोड़ों की अधिकता होने से कीड़े–मकोड़ों की हिंसा तो अधिक होती ही है, साथ में कभी हमारा जीवन भी संकट में पड़ सकता है। रात्रि में भोजन करने वालों को अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं। एक बात और है कि रात्रि–भोजन में राग की अधिकता होने से पाप बंध भी विशेष होता है। अतः हमें रात्रि में भोजन कभी भी नहीं करना चाहिये।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. रात में भोजन करने वाले बेहोश क्यों हो गये?	१. साग में सांप गिर गया था और अंधेरा होने से दिखाई नहीं दिया।
२. रात्रि भोजन से क्या हानियाँ हैं?	२. (क) अनेक बीमारियाँ तो हो ही जाती हैं, कभी जान की भी आ पड़ सकती है। (ख) राग की अधिकता होने से पाप बंध भी अधिक होता है।
३. इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?	३. रात में भोजन कभी नहीं करना चाहिये।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त बोधगम्य प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा या यथासंभव अन्य विधि से तैयार कराया जायेगा।

सारांश कथन

बरात वाली घटना का हवाला देकर अध्यापक रात्रि भोजन छोड़ने की प्रेरणा देंगे।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्न मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :-

(१) हठी बालक की कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

(२) रात्रि भोजन से क्या हानियाँ हैं?

गृहकार्य

अध्यापक पठित अंश में से अगले दिन करके लाने के लिये कार्य देंगे।

अध्यापक कथन – तो बालको ! तुम्हें कल हठी बालक की कहानी अपने शब्दों में याद करके लानी है तथा निर्मला बहिन ने अपने भाषण में जो बात कही उसे भी याद करके लानी है।

द्वितीय दिन

स्थान - श्री महावीर दि. जैन उ.मा. बालिका विद्यालय, जयपुर

कक्षा - बालबोध द्वितीय खण्ड

प्रकरण - "पानी छानकर पीना"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य - पूर्ववत्।

(ख) विशेष उद्देश्य - (१) पानी छान कर पीने की प्रेरणा देना व (२) सभा में उठने-बैठने एवं बोलने की पद्धति से परिचित कराना।

पूर्व-ज्ञान - पूर्ववत्।

सहायक सामग्री - पूर्ववत्।

उद्देश्य कथन

हमें पानी छानकर ही काम में क्यों लेना चाहिये तथा सभा में कैसे बैठना, उठना और बोलना चाहिये, आज इसकी चर्चा करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ दो अन्वितियों में समाप्त होगा। इसमें प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो रहेंगे ही, पर द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से सबसे पहिले 'पूर्व-पाठ मूल्यांकन' नाम का एक सोपान और होगा।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

प्रथम दिन का पढ़ा हुआ पाठ छात्रों ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न किये जावेंगे :-

(१) हठी बालक की कहानी सुनाइये।

(२) निर्मला बहिन द्वारा वर्णित बरात का वर्णन कीजिये।

(३) रात्रि-भोजन से क्या हानियाँ हैं?

द्वितीय अन्विति

"एक छात्र ....में भी बाधक है।"

आदर्श वाचन पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन

अध्यापक तीन छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन करावेंगे। एक छात्र अध्यक्ष का, एक छात्र - एक छात्र का व एक छात्र निर्मला का पाठ पढ़ेंगे। अध्यापक स्वयं या अन्य छात्रों द्वारा उसमें आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण पूर्ववत्।

अध्यापक कथन - बालको! हमने अभी पढ़ा कि अध्यक्ष की बिना आज्ञा लिये छात्र बोलने लगा तो अध्यक्ष ने उसे डाँट दिया। इससे मालूम पड़ता है कि सभा में बिना अध्यक्ष की आज्ञा के नहीं बोलना चाहिये।

दूसरी बात यह है कि रात्रि भोजन से बाहरी हानि के अलावा रात्रि भोजन में गृद्धता अधिक होने से राग अधिक होता है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. सभा में कैसे बोलना चाहिये?	१. अध्यक्ष की आज्ञा लेकर।
२. रात्रि भोजन से क्या आंतरिक हानि है?	२. रात्रि भोजन में गृद्धता अधिक होने से राग की तीव्रता रहती है, अतः आत्मसाधना में में बाधा पहुँचती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त बोधगम्यों प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के यथासंभव सोपानों से तैयार कराया जायेगा।

सारांश कथन

अध्यापक कथन - हमने आज दो बातें सीखीं :-

(१) सभा में बिना अध्यक्ष की आज्ञा के नहीं बोलना चाहिये।

(२) रात्रि भोजन में राग की गृद्धता होने से पाप बंध विशेष होता है। अतः रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिये।

द्वितीय अन्विति

"अध्यक्ष (खड़े होकर)....................पोषण करता हूँ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

विचार–विश्लेषण – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – अभी हमें अध्यक्ष महोदय के भाषण से एक बात का पता चला कि बिना छने पानी में असंख्यात जीव होते हैं। खुर्दबीन से देखने पर वे साफ दिखाई देते हैं। अतः हम सबको बिना छना हुआ पानी कभी भी प्रयोग में नहीं लाना चाहिये।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. बिना छना पानी क्यों काम में नहीं लेना चाहिये?	१. बिना छने पानी में असंख्यात त्रस जीव रहते हैं। अतः हमें बिना छना पानी काम में नहीं लेना चाहिये।
२. यह कैसे जाना कि उसमें जीव हानि है?	२. शास्त्रों में लिखा है और खुर्दबीन से देखने पर साफ दिखाई देते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त बोधगम्य प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के यथासंभव सोपानों से तैयार कराया जायेगा।

सारांश कथन

अनछने पानी में असंख्यात जीव होते हैं – अतः छना पानी ही काम में लेने के लिये अध्यापक को सारांश कथन में प्रेरणा देनी चाहिये।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्न मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :–

(१) बिना छना पानी काम में क्यों नहीं लेना चाहिये?

(२) सभा में कैसे बोलना चाहिये?

गृहकार्य

अध्यापक कथन – तो बालको ! तुम्हें अगले दिन यह याद करके लाना है कि सभा का संचालन कैसे करना चाहिये तथा बिना छना पानी प्रयोग में लेने से क्या हानि है।

आदर्श पाठ–योजना ५

(भगवान आदिनाथ)

स्थान – श्री वीतराग–विज्ञान पाठशाला, विदिशा (म.प्र.)

कक्षा – बालबोध प्रथम खण्ड

प्रकरण – "भगवान आदिनाथ"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – अपने पूर्वजों के संबंध में सामान्य जानकारी देना।

(ख) विशेष उद्देश्य – भगवान आदिनाथ का परिचय देना।

पूर्व–ज्ञान

बालबोध पाठमाला भाग १ के तृतीय पाठ से चौबीस तीर्थंकरों के नामों का ज्ञान छात्रों को है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर निम्नानुसार बना हुआ चार्ट :–

उद्देश्य कथन

आज हम भगवान आदिनाथ के संबंध में चर्चा करेंगे।

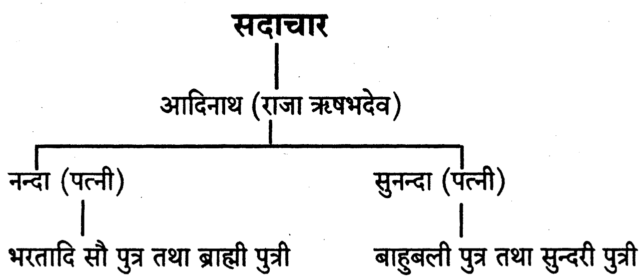

उद्देश्य कथन

आज हम भगवान आदिनाथ के संबंध में चर्चा करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनों में पढ़ाया जायेगा। प्रत्येक दिन का पाठ एक–एक अन्विति में ही पढ़ाया जायेगा। प्रत्येक अन्विति में निम्नलिखित सोपान होंगे :–

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) विचार-विश्लेषण
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) सारांश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"बेटी-माँ, चलो न घर ....उत्पन्न हुई।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वयं संवाद पद्धति में एकपात्रीय अभिनयपूर्वक उचित आरोह-अवरोह के साथ आवश्यक स्वर परिवर्तन करते हुये आदर्श वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रों द्वारा संवाद विधि से अनुकरण वाचन करावेंगे। एक छात्र से माँ वाले और दूसरे छात्र से बेटी वाले पाठ का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करावेंगे तथा किसी तीसरे छात्र द्वारा या स्वयं उसमें आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण

अध्यापक पठित अंश में आये हुये विचारों का निम्न प्रकार विश्लेषण स्पष्ट रूप से करेंगे तथा आगत कथांश को भी सीधी भाषा में स्पष्ट कर देंगे :-

अध्यापक कथन - अभी हमने भक्तामर स्तोत्र में जिन आदिनाथ भगवान की स्तुति की गई है - उनके बारे में पढ़ा। वे वीतराग और सर्वज्ञ भगवान थे। पर वे जन्म से भगवान नहीं थे। जन्म तो अयोध्या के राजा नाभिराय की रानी मरुदेवी के गर्भ से बालक ऋषभ का हुआ था। राजकुमार ऋषभ की दो शादियाँ हुई। पहली पत्नी का नाम नंदा और दूसरी का नाम सुनन्दा था। भरत और बाहुबली उनके ही पुत्र थे।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. भगवान आदिनाथ की स्तुति कौनसे स्तोत्र में की गई है?	१. भक्तामर स्तोत्र में।
२. क्या वे जन्म से ही वीतरागी और सर्वज्ञ थे?	२. नहीं, वीतरागता और सर्वज्ञता तो मुनि होने के बाद पुरुषार्थ से प्राप्त की थी।
३. राजकुमार ऋषभ के माता-पिता का क्या नाम था?	३. मरुदेवी और नाभिराय।
४. उनकी रानियों के क्या नाम थे?	४. नंदा और सुनन्दा।
५. नंदा से क्या सन्तान थी?	५. भरत आदि सौ पुत्र एवं ब्राह्मी पुत्री
६. सुनन्दा से क्या संतान थी?	६. बाहुबली पुत्र और सुन्दरी पुत्री।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा बालकों को तैयार करावेंगे।

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान आदिनाथ की स्तुति भक्तामर स्तोत्र में की गई है।	१. भगवान आदिनाथ की स्तुति भक्तामर स्तोत्र में की गई है या नहीं?	१. की गई है।
	२. भगवान आदिनाथ की स्तुति भक्तामर स्तोत्र में की गई है या कल्याण मन्दिर स्तोत्र में?	२. भक्तामर स्तोत्र में।
	३. भगवान आदिनाथ की स्तुति किस स्तोत्र में की गई है?	३. भक्तामर स्तोत्र में।
	४. भक्तामर में क्या है?	४. भगवान आदिनाथ की स्तुति।

नोट : इसी प्रकार सभी प्रश्नोत्तरों को तैयार कराया जायेगा।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त में सारांश कथन में मठित पाठ का सारांश दुहरा दिया जायेगा।

अध्यापक कथन – तो आज हमने यह जान लिया कि अयोध्या के राजा नाभिराय की रानी मरुदेवी के उदर से बालक ऋषभदेव का जन्म हुआ था।

राजा ऋषभदेव की दो पत्नियाँ थीं – नंदा और सुनन्दा। नन्दा से भरतादि सौ पुत्र व ब्राह्मी पुत्री तथा सुनन्दा से बाहुबली पुत्र एवं सुन्दरी पुत्री उत्पन्न हुये। वे ही राजा ऋषभदेव मुनि होकर पूर्ण ज्ञानी भगवान आदिनाथ बने। उन्हीं की स्तुति भक्तामर स्तोत्र में की गई है।

समापन

आज के पाठ का समापन करते हुये अध्यापक निम्न मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :-

(१) क्या आदिनाथ जन्म से भगवान थे?

(२) भक्तामर स्तोत्र में किसकी स्तुति की गई है?

गृहकार्य

पठित पाठ में अध्यापक अगले दिन करके लाने के लिये निम्न कार्य देंगे :-

अध्यापक कथन – बालको ! तुम्हें कल निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर याद करके लाने हैं :-

(१) राजा ऋषभदेव के माता, पिता, पत्नी, पुत्र और पुत्रियों के नाम।

(२) भक्तामर स्तोत्र में क्या है?

द्वितीय दिन

स्थान – श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला, विदिशा (म.प्र.)

कक्षा – बालबोध प्रथम खण्ड

प्रकरण – "भगवान आदिनाथ"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – पूर्ववत्।

(ख) विशेष उद्देश्य – पूर्ववत्।

पूर्व–ज्ञान

पूर्ववत् तथा प्रथम दिन पढ़ाये गये पाठ में आदिनाथ के गृहस्थ जीवन की सामान्य जानकारी छात्र प्राप्त कर चुके हैं।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, पूर्वानुसार चार्ट

उद्देश्य कथन

बालको ! कल हमने आदिनाथ के गृहस्थ जीवन का परिचय प्राप्त किया था। आज हम यह समझेंगे कि वे भगवान कैसे बने।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी एक अन्विति में ही पूरा होगा। इसमें प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो होंगे ही, पर द्वितीय दिन की अन्विति होने से सबसे पहिले 'पूर्व–पाठ मूल्यांकन' संबंधी एक सोपान और होगा।

पूर्व–पाठ मूल्यांकन

इसमें प्रथम दिन का पाठ छात्रों ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्न मूल्यांकन प्रश्न किये जावेंगे :–

(१) ऋषभदेव के गृहस्थ जीवन का परिचय दीजिये।
(२) ऋषभदेव के पुत्रों के क्या नाम थे?
(३) उनकी कितनी पत्नियाँ थीं?
(४) क्या वे जन्म से भगवान थे?

प्रथम अन्विति

"तो क्या भरत.....................बन सकते हैं।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।
अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।
विचार–विश्लेषण – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – आदिनाथ का नाम राज्यावस्था में ऋषभदेव था। नीलांजना की मृत्यु देखकर उन्हें वैराग्य हो गया और वे नग्न दिगम्बर साधु हो गये। छह माह के उपवास के उपरान्त छह मास तक उनके आहार की विधि नहीं मिली। करीब एक वर्ष बाद अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयांस ने उन्हें आहार दिया। उसी दिन से अक्षय तृतीया का महापर्व मनाया जाने लगा।

एक हजार वर्ष बाद उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई और उनके द्वारा सारे भारतवर्ष में तत्त्वोपदेश हुआ। उनके द्वारा बताया गया मुक्ति का मार्ग आज भी हमें ज्ञानियों द्वारा प्राप्त है। उस मार्ग पर चल कर हम सब भगवान बन सकते हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. अक्षय तृतीया के दिन क्या हुआ था?	१. इस दिन राजा श्रेयांस ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था।
२. भगवान आदिनाथ ने अपने उपदेशों में क्या बताया?	२. मुक्ति का मार्ग।
३. उनके सच्चे भक्त कौन हैं?	३. जो उनके बताये मार्ग पर चलें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयांस ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था।	१. अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयांस ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था या नहीं?	१. दिया था।
	२. अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयांस ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था या राजा ऋषभदेव को या भगवान आदिनाथ को?	२. मुनिराज आदिनाथ को।
	३. अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयांस ने किसको आहार दान दिया था?	३. मुनिराज आदिनाथ को।
	४. अक्षय तृतीया के दिन क्या हुआ था?	४. अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयांस ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था।

नोट : इसी प्रकार अन्य आगत सभी प्रश्नोत्तरों को भी समझावेंगे।

सारांश कथन पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – आज हमने आदिनाथ के बारे में इतनी बातें जानीं :-

(१) नृत्य करते नीलांजना की मृत्यु देखकर ऋषभदेव को वैराग्य हुआ था।

(२) दीक्षा के एक वर्ष बाद राजा श्रेयांस ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था। तभी से अक्षय तृतीया पर्व चला।

(३) एक हजार वर्ष बाद उन्हें पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई।

(४) जो उनके बताये मार्ग पर चले, वही उनका सच्चा भक्त है।

(५) उनके बताये मार्ग पर चलकर हम सब भी भगवान बन सकते हैं।

समापन

आज का पाठ छात्रों की समझ में आया या नहीं, यह जानने के लिए निम्न मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :-

(१) अक्षय तृतीया पर्व क्यों मनाया जाता है?

(२) भगवान का सच्चा भक्त कौन है?

(३) हम भगवान कैसे बन सकते हैं?

गृहकार्य

बालको ! कल तुम्हें पूर्ववत् भगवान आदिनाथ का संक्षिप्त जीवन-परिचय याद करके लाना है।

●●●

पाठ निर्देश

बालबोध पाठमालाओं में आये हुये पाँच पाठों की आदर्श पाठ-योजनायें प्रस्तुत की। आगे शेष पाठों के पाठ-निर्देश दिये जा रहे हैं। पाठ-निर्देश का ध्यान रखते हुए अध्यापक बंधुओं को प्रत्येक पाठ पढ़ाने के पूर्व उपरोक्त पाठ-योजनाओं के अनुरूप पाठ-योजना तैयार करनी है। ध्यान रहे किसी भी पाठ की पाठ-योजना तैयार करते समय तत्संबंधित पाठ-निर्देश में दिये निर्देशों की अवहेलना नहीं की जानी चाहिये।

पाठ-निर्देश १

(बालबोध पाठमाला भाग १ - पाठ १)

"णमोकार मंत्र"

आवश्यक निर्देश :-

(१) णमोकार मंत्र छन्द में पद्य रचना है। अतः इसका गाकर पद्य के रूप में ही आदर्श वाचन व अनुकरण वाचन किया जायेगा। प्रायः इसे गद्य के रूप में पढ़ा जाता है, यह ठीक नहीं है।

(२) प्रत्येक पद का अर्थ अलग-अलग बताया जाना चाहिये। जैसे णमो अरहंताणं = अरहंतों को नमस्कार हो। आदि।

(३) "लोए सव्व" शब्द प्रत्येक पद के साथ लगता है।

(४) "सव्वपावप्पणासणो" का अर्थ - सब पापों का नाश करने वाला है। इसे स्पष्ट करना कि जिस काल में णमोकार मंत्र द्वारा पंच परमेष्ठी का स्मरण करते हैं उस काल में हिंसा, झूठ, चोरी आदि पाप भावों की उत्पत्ति ही नहीं होती, यही पापों का नाश है।

पाठ–निर्देश २
(बालबोध पाठमाला भाग १ – पाठ २)
"चार मंगल"

आवश्यक निर्देश :–

(१) "चत्तारि मंगल" आदि पाठ को शुद्ध बोलना सिखाने के लिये अध्यापक को स्वयं आदर्श वाचन देख देख कर सावधानी से करना चाहिये तथा अनुकरण वाचन में सावधानीपूर्वक अशुद्धियाँ ठीक करानी चाहिये।

(२) निम्न स्थानों पर विशेष अशुद्धियाँ हो जाती हैं :–

अशुद्ध	शुद्ध
अरहंत मंगलं	अरहंता मंगलं
सिद्ध मंगलं	सिद्धा मंगलं
केवली पण्णत्तं धम्मो मंगलं	केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं
केवली पण्णत्तो धम्मो लोगोत्तमा	केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो
केवली पणत्तो धम्मो शरणं पव्वज्जामि	केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि

(३) मंगलं, उत्तम और शरण के अर्थ स्पष्ट करके बताना है तथा उनकी परिभाषायें वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा तैयार करानी।

पाठ–निर्देश ३
(बालबोध पाठमाला भाग १ – पाठ ३)
"तीर्थंकर भगवान"

आवश्यक निर्देश :–

(१) तीर्थंकर और भगवान का अन्तर स्पष्ट करना।

"सभी तीर्थंकर भगवान होते हैं पर सभी भगवान तीर्थंकर नहीं" – इस तथ्य को अच्छी तरह स्पष्ट करना चाहिये।

(२) तीर्थंकर की परिभाषा को इस प्रकार विभाजित करके तैयार कराना चाहिये :-

(क) जो धर्म तीर्थ का उपदेश देते हैं,

(ख) जो समवशरण विभूतियों से युक्त होते हैं,

(ग) जिनको तीर्थंकर नाम कर्म का उदय होता है,
वे तीर्थंकर हैं।

(३) निम्नलिखित नामों के बोलने में अधिकांशतः अशुद्धियाँ होती हैं, अतः इन पर विशेष ध्यान देना चाहिये :-

अशुद्ध	शुद्ध
पद्मप्रभु	पद्मप्रभ
चन्दाप्रभु	चन्द्रप्रभ
वांसपूज्य	वासुपूज्य
कुन्थनाथ	कुन्थुनाथ
अरहनाथ	अरनाथ

पाठ-निर्देश ४
(बालबोध पाठमाला भाग १ - पाठ ४)
"देव-दर्शन"

आवश्यक निर्देश :-

(१) देव की सामान्य परिभाषा बताकर देवगति के देव से सच्चे देव की पृथकता स्पष्ट करना।

(२) यह स्पष्ट करना कि वीतरागी और सर्वज्ञ ही पूज्य हैं। बाकी रागी-द्वेषी कोई भी सच्चे देव न होने से पूज्य नहीं हैं।

(३) मन्दिर में क्या-क्या काम करना चाहिये और क्या-क्या नहीं, इस बात को स्पष्ट करना चाहिये। जैसे - तत्त्वचर्चा, स्वाध्याय, सामायिक आदि करना चाहिये। गप्पें लगाना, झूठे मुँह जाना, चमड़े की वस्तु ले जाना आदि ठीक नहीं है।

(४) देव-दर्शन का लाभ बताते हुये देव-दर्शन से पाप भाव के अभाव पर जोर देना। उक्त तथ्य को तर्क व युक्ति से समझाना। जैसे - जब हम भगवान के दर्शन करेंगे तब पाप भाव उत्पन्न ही नहीं होंगे, यही पाप का नाश है।

(५) मूर्ति के माध्यम से मूर्तिमान अरहंतादिक का स्वरूप समझना, उनका गुण-स्तवन, चिन्तन करना देव-दर्शन है; मात्र मन्दिर में ढोक देना ही नहीं।

(६) सुविधानुसार यथासमय छात्रों को मन्दिर में ले जाकर देव-दर्शन की पद्धति का ज्ञान प्रयोगात्मक रूप से कराना।

पाठ-निर्देश ५

(बालबोध पाठमाला भाग १ - पाठ ५)

''जीव-अजीव''

आवश्यक निर्देश :-

(१) जीव और अजीव का ज्ञान कराते समय जीव से एक क्षेत्रावगाह सम्बन्ध रखने वाले अजीव जैसे शरीर, आँख, कान आदि और आत्मा से पृथक् रहने वाले अजीव जैसे शरीर, आँख, कान आदि और आत्मा से पृथक् रहने वाले अजीव जैसे कुर्सी, टेबिल, कुर्ता आदि का पृथक्-पृथक् ज्ञान कराना।

(२) आत्मा से एक क्षेत्रावगाह संबंध रखने वाले अजीवों को प्रश्नोंत्तरों द्वारा विशेष स्पष्ट करना। जैसे :-

प्रश्न - जब आँख देखती है तो वह अजीव कैसे?

उत्तर - आँख थोड़े ही देखती है, आत्मा आँख द्वारा देखता है।

(३) जीव व अजीव की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(४) जीव-अजीव के जानने से क्या-क्या लाभ हैं? यह स्पष्ट करना।

पाठ-निर्देश ६

(बोलबोध पाठमाला भाग १ - पाठ ६)

"दिनचर्या"

आवश्यक निर्देश :-

(१) प्रातः से सायं तक की दिनचर्या बनाकर छात्रों को बताना।

(२) सफाई दो प्रकार की होती है -

(क) अंतरंग

(ख) बहिरंग

दोनों का विशेष स्पष्टीकरण करना।

(३) अंतरंग सफाई में आत्मा-परमात्मा के चिंतवन एवं तत्त्व-प्रचार पर जोर देना चाहिये।

(४) बाह्य सफाई में स्नान, दांतों की सफाई, नाखूनों की सफाई रखने आदि की प्रेरणा देनी चाहिये।

पाठ-निर्देश ७

(बालबोध पाठमाला भाग १ - पाठ ८)

"मेरा धाम"

आवश्यक निर्देश :-

(१) आत्मा का परिचय निम्नानुसार कराना :-

(क) नाम - शुद्धात्मा

(ख) काम - मात्र जानना-देखना (पर का कुछ नहीं करना)

(ग) धाम - मुक्तिपुरी (मोक्ष)

(२) मेरा धाम कैसा है? इसका ज्ञान कराना। जैसे :-

(क) वहाँ भूख और प्यास नहीं सताती,

(ख) खांसी-जुकाम आदि शारीरिक रोग नहीं हैं,

(ग) चिंता, भय आदि मानसिक रोग नहीं हैं।

(३) प्रश्न – करने योग्य क्या है?

उत्तर – (क) स्वपर भेद-विज्ञान

(अपनी पराये की पहिचान)

(ख) आत्म-ध्यान

(ग) राग-द्वेष का त्याग

(घ) आत्मानन्द का पान।

(४) मेरा धाम नामक कविता बच्चों को कण्ठस्थ (मुखाग्र) तैयार कराके सामूहिक रूप में एक साथ बोलने का अभ्यास कराना चाहिये एवं प्रतिदिन इसे प्रार्थना के तौर पर बोलने की प्रेरणा देनी चाहिये।

पाठ-निर्देश ८

(बालबोध पाठमाला भाग २ - पाठ १)

"देव-स्तुति"

आवश्यक निर्देश :-

(१) सर्व प्रथम देव-स्तुति की पहली पंक्ति के आधार पर सच्चे देव की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार करानी चाहिये।

(२) स्तुति के सामान्यार्थ विवेचन के पश्चात् स्तुति में आये भावों को प्रश्नोत्तर में तैयार कराना चाहिये।

प्रश्न – ज्ञानी भक्त भगवान से क्या चाहता है?

उत्तर –(क) पाँचों पापों से दूर रहना,

(ख) जिन धर्म की सेवा करना,

(ग) कुरीतियों का नाश व सुरीतियों का प्रचार करना,

(घ) न्याय मार्ग पर चलना।

प्रश्न - कुरीति क्या है?

उत्तर - कुरीतियों को हम दो भागों में बाँट सकते हैं -

(१) धार्मिक कुरीति और (२) सामाजिक कुरीति।

धार्मिक कुरीति - भूत, प्रेत, व्यंतर आदि की पूजा आदि से गृहीत मिथ्यात्व का सेवन करना।

सामाजिक कुरीति - दहेज प्रथा आदि।

धार्मिक कुरीतियाँ दूर करने पर अधिक बल देना चाहिये।

(३) इसी प्रकार पूरी स्तुति में आये भावों को वस्तुनिष्ठ पद्धति से समझाना चाहिये।

(४) छात्रों को पूरी स्तुति कंठस्थ तैयार कराना है तथा उसका सामान्य भाव भी तैयार कराना है।

पाठ-निर्देश ९

(बालबोध पाठमाला भाग २ - पाठ २)

"पाप"

आवश्यक निर्देश :-

(१) मिथ्यात्व ही सबसे बड़ा पाप है। इस तथ्य को युक्तिपूर्वक समझा कर वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(२) मिथ्यात्व और पाँचों पापों की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(३) हिंसा के द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा भेदों को समझाना।

(४) "क्या सत्य समझे बिना सत्य बोला जा सकता है" - उक्त तथ्य को सयुक्ति स्पष्ट करना।

(५) मिथ्यात्व और कषायें भी परिग्रह हैं - यह स्पष्ट करना।

(६) "सब पापों की जड़ मिथ्यात्व और कषाय ही हैं" - इसे भी स्पष्ट करना।

पाठ-निर्देश १०

(बालबोध पाठमाला भाग २ - पाठ ३)

"कषाय"

आवश्यक निर्देश :-

(१) निम्नलिखित परिभाषाओं को वस्तुनिष्ठ पद्धति से समझाना व तैयार कराना :-

विभाव, राग, द्वेष, कषाय, क्रोध, मान, माया, लोभ।

(२) निम्नलिखित प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति से समझा कर तैयार कराया जाय :-

प्रश्न - कषाय क्यों उत्पन्न होती हैं ?

उत्तर - मुख्यतया मिथ्यात्व के कारण पर-पदार्थ इष्ट और अनिष्ट भाषित होने से कषाय उत्पन्न होती हैं?

प्रश्न - कषायों का अभाव कैसे हो?

उत्तर - तत्त्वज्ञान के अभ्यास से जब पर-पदार्थ इष्ट और अनिष्ट प्रतिभासित न हों तो मुख्यतया कषाय भी उत्पन्न नहीं होती है।

(३) कषाय और राग-द्वेष को निम्नानुसार स्पष्ट करना चाहिये :-

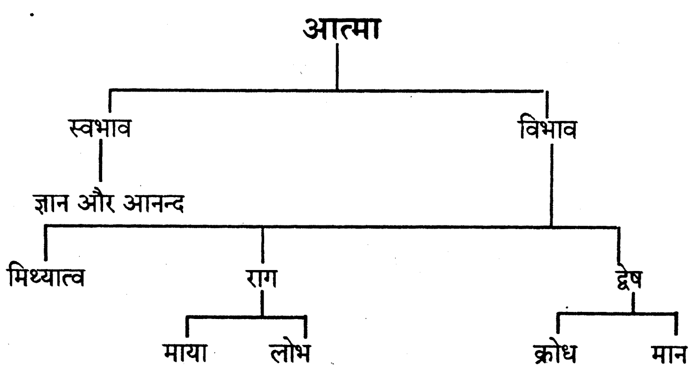

पाठ-निर्देश ११

(बालबोध पाठमाला भाग २ - पाठ ५)

"गतियाँ"

आवश्यक निर्देश :-

(१) गति और चारों गतियों की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(२) "चारों गतियों में दुःख ही दुःख है - सुख कहीं भी नहीं" - उक्त तथ्य की ओर विशेष ध्यान आकर्षित करना।

(३) संसारी जीव की अवस्थायें तो बहुत हैं, पर उनका चार भागों में वर्गीकरण किया गया है। इस तथ्य को स्पष्ट करना।

(४) कौन गति किस अपराध का फल है? चारों गतियों के कारणों को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(५) "मनुष्य पर्याय में होने से हम सब मनुष्य कहे जाते हैं वस्तुतः हैं तो हम सब जीव।" - इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करना।

(६) वीतराग भाव निरपराध दशा क्या है? - इसे विशेष स्पष्ट करना।

पाठ-निर्देश १२

(बालबोध पाठमाला भाग २ - पाठ ६)

"द्रव्य"

आवश्यक निर्देश :-

(१) विश्व, द्रव्य और छहों द्रव्यों की परिभाषा समझाना एवं वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(२) द्रव्यों को दो-दो भेदों में विभाजित करके समझाना :-

(क) जीव द्रव्य - अजीव द्रव्य

(ख) रूपी द्रव्य - अरूपी द्रव्य

(ग) अस्तिकाय - नास्तिकाय

(३) परस्पर अन्तर स्पष्ट करना :-

(क) धर्म द्रव्य और अधर्म द्रव्य में।

(ख) धर्म और धर्म द्रव्य में।

(ग) अधर्म और अधर्म द्रव्य में।

(४) आकाश द्रव्य ऊपर नीचे सर्वत्र है तथा आकाश में रंग नहीं होता - उक्त तथ्यों को भली-भाँति स्पष्ट करना।

(५) निम्नलिखित प्रश्नों की तर्कसंगत जानकारी देना :-

(क) क्या कभी विश्व का नाश हो सकता है?

(ख) भगवान जगत के जानने वाले हैं या बनाने वाले?

पाठ-निर्देश १३

(बालबोध पाठमाला भाग २ - पाठ ७)

"भगवान महावीर"

आवश्यक निर्देश :-

(१) भगवान जन्मते नहीं, बनते हैं। इसे सतर्क स्पष्ट करना।

(२) कोई भी व्यक्ति आत्मसाधना कर भगवान बन सकता है। इस पर विशेष बल देना।

(३) भगवान महावीर के पाँचों नामों की सार्थकता बताना।

(४) बालक वर्द्धमान, राजकुमार वर्द्धमान, मुनि महावीर, भगवान महावीर शब्दों के यथास्थान प्रयोग का ज्ञान छात्रों को कराना।

(५) महावीर का ही जन्मोत्सव क्यों मनाया जाता है - हमारा तुम्हारा क्यों नहीं? इसका सतर्क उत्तर देना।

(६) भगवान महावीर की शिक्षा नं. १,२,३,४ एवं ११ पर विशेष बल देना।

(७) महावीर जयन्ती और दीपावली पर्व का परिचय देना।

(८) भगवान महावीर का सामान्य जीवन-परिचय अपने शब्दों में तैयार कराना।

पाठ-निर्देश १४

(बालबोध पाठमाला भाग २ - पाठ ८)

"जिनवाणी स्तुति"

आवश्यक निर्देश :-

(१) जिनवाणी स्तुति को कंठस्थ तैयार कराना व उसका सामान्य भाव समझाना व याद कराना।

(२) स्तुति में आये महत्त्वपूर्ण तथ्यों को प्रश्नोत्तरों द्वारा तैयार कराना। जैसे -

प्रश्न - जिनवाणी के श्रवण से क्या लाभ हैं?

उत्तर - (प्रथम छन्द के आधार पर)

(क) मिथ्यात्व का नाश।

(ख) ज्ञान का प्रकाश।

(ग) स्वपर भेद-विज्ञान।

(घ) छह द्रव्यों का सही ज्ञान।

(ङ) कर्म बन्ध की प्रक्रिया का ज्ञान।

(च) आत्मानुभव व आत्मज्ञान होना।

(छ) सच्चे सुख की प्राप्ति।

(३) "मस्तक नमों" - "जपों" का भाव स्पष्ट करना :-

'नमौं' का अर्थ शारीरिक नमस्कार करना तो है ही, पर मात्र माथा झुकाना नहीं है। मुख्य रूप से जिनवाणी के महत्त्व को समझकर उसके प्रति बहुमान उत्पन्न होना है और उसके अभ्यास द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति करने को यत्नशील होना है।

'जपों' का अर्थ उसके नाम की माला फेरना नहीं, बल्कि उसका निरन्तर अभ्यास करना है।

पाठ–निर्देश १५

(बालबोध पाठमाला भाग ३ – पाठ ३)

"गतियाँ"

आवश्यक निर्देश :-

(१) गति और चारों गतियों की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(२) मद्य, मांस, मधु और पंच उदुम्बर फलों के सेवन से बुराइयाँ स्पष्ट करना। जैसे :-

प्रश्न – मद्य सेवन से क्या हानियाँ हैं?

उत्तर – (क) विवेक की हानि (ज्ञान दबना)।
(ख) जीवों का घात (हिंसा)।
(ग) बुद्धि की भ्रष्टता।
(घ) तत्त्वज्ञान प्राप्ति के प्रसंग की समाप्ति।

(३) कौन–कौन वस्तुयें मांस में आती हैं? कौन–कौन मद्य में? इसे स्पष्ट करना। जैसे :-

(क) अंडा, मछली – मांस

(ख) शराब, भांग – मद्य

(४) पंच उदुम्बरों का ज्ञान कराना।

(५) अष्ट मूलगुण धारण करने की प्रेरणा देना।

(६) मद्य, मांस, मधु और पंच उदुम्बर फल मूलगुण नहीं हैं, किन्तु इनका त्याग मूलगुण है। प्रायः बालक अष्ट मूलगुणों के नाम पूछने पर इस तरह उत्तर दे देते हैं कि मद्य, मांस, मधु और पंच उदुम्बर फल। कहना ऐसा चाहिए कि मद्य त्याग, मांस त्याग, मधु त्याग और पंच उदुम्बर फल त्याग – ये श्रावक के अष्ट मूलगुण हैं।

उपरोक्त तथ्य को छात्रों को हृदयंगत कराना।

पाठ–निर्देश १६

(बालबोध पाठमाला भाग ३ – पाठ ४)

"इन्द्रियाँ"

आवश्यक निर्देश :–

(१) जिन और जैन की परिभाषा बताना व वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(२) पाँचों इन्द्रियों की परिभाषा समझाकर वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना व प्रत्येक इन्द्रिय के कार्य को स्पष्ट करना।

(३) पाँचों इन्द्रियों का हाथ से इशारा करके ज्ञान कराना है।

(४) इस प्रकार के प्रश्न करना जिससे पता चल सके कि बालकों को इन्द्रियों का सही ज्ञान हुआ है या नहीं। जैसे :–

प्रश्न – तुम्हारी चक्षु इन्द्रिय कहाँ है? आदि।

(५) निम्नलिखित शंकाओं का निम्नानुसार सतर्क समाधान करना है :–

प्रश्न – इन्द्रियाँ तो ज्ञान में सहायक हैं – उन्हें जीतना क्यों?

उत्तर – ये भोगों में उलझाने में भी तो निमित्त हैं।

प्रश्न – इन्द्रिय-भोगों को छोड़ने की बात कहो – इन्द्रिय ज्ञान को तो नहीं छोड़ना?

उत्तर – इन्द्रियाँ मात्र पुद्गल को जानने में ही निमित्त हैं। आत्मा के जानने में तो वे निमित्त भी नहीं।

प्रश्न – जिस~ जितना ज्ञान कराया उतना ही ठीक – उन्हें तुच्छ क्यों कहते हो?

उत्तर – आत्मा का हित तो आत्मा के जानने में है। पुद्गल के जानने में नहीं। पुद्गल के जानने में उलझा हुआ आत्मा आत्मज्ञान से वंचित रह जाता है। अतः इन्द्रिय ज्ञान तुच्छ कहा जायेगा।

पाठ-निर्देश १७

(बालबोध पाठमाला भाग ३ - पाठ ५)

"सदाचार"

आवश्यक निर्देश :-

(१) सदाचार को दो भागों में बाँटना :-

(क) अहिंसा मूलक - जिसमें हिंसा न हो।

(ख) सभ्यता मूलक - स्वास्थ्य व सामाजिक परंपरा के अनुकूल हो। जैसे - बाजार में खड़े-खड़े चलते-फिरते नहीं खाना, आदि।

(२) अभक्ष्यों को तीन भागों में विभाजित करना :-

(क) हिंसा मूलक - (त्रसघात, बहुघात)

(ख) असभ्यता मूलक - (नशाकारक, अनुपसेव्य)

(ग) अस्वास्थ्यकर - (अनिष्ट)

(३) अभक्ष्य व त्रसघात आदि पाँचों अभक्ष्यों की परिभाषा पृथक्-पृथक् वस्तुनिष्ठ पद्धति से समझाना व तैयार कराना।

(४) पाँचों प्रकार के अभक्ष्यों को इस प्रकार स्पष्ट करना जिससे बालकों को उनकी पृथकता ध्यान में आ जावे। जैसे :-

निम्नलिखित में बताइये कौन-कौनसा अभक्ष्य है?

आलू	- त्रसघात ✗	बहुघात ✓
बड़ का फल	- त्रसघात ✓	बहुघात ✗
भाँग	- नशाकारक ✓	अनुपसेव्य ✗
लहसुन	- त्रसघात ✗	बहुघात ✓
लार	- नशाकारक ✗	अनुपसेव्य ✓
ब्लड प्रेशर वाले को नमक	- बहुघात ✗	अनिष्ट ✓

पाठ-निर्देश १८

(बालबोध पाठमाला भाग ३ - पाठ ७)

"भगवान नेमिनाथ"

आवश्यक निर्देश :-

(१) भगवान नेमिनाथ का सामान्य जीवन-परिचय बालकों को अपने शब्दों में तैयार कराना।

(२) गिरनार क्षेत्र का सामान्य परिचय देकर उसका महत्त्व बताना।

(३) भगवान नेमिनाथ अपनी पत्नी राजुल को बिलखती हुई छोड़कर चले गये थे। क्या यह सच है? यदि नहीं, तो लोग ऐसा क्यों कहते हैं? इसे पाठ के आधार पर अच्छी तरह स्पष्ट करना।

(४) नेमिनाथ का वैराग्य लेना राजुल की दृष्टि से अच्छा रहा - इसे सतर्क स्पष्ट करना।

पाठ-निर्देश १९

(बालबोध पाठमाला भाग ३ - पाठ ८)

"जिनवाणी"

आवश्यक निर्देश :-

(१) लोक में गंगा की पवित्रता धन-धान्य समृद्धिकारक होने से है। कवियों की अतिश्योक्तियों में गंगा को तीर्थ के रूप में प्रदर्शित किया है। यहाँ स्तुतिकार ने जिनवाणी का रूपक गंगा के रूप में बांधा है। इसे बालकों को स्पष्ट करना।

(२) दूसरे छन्द में जिनवाणी का रूपक दीपक की शिखा से बांधा है - इसे भी स्पष्ट करना चाहिये।

(३) जिनवाणी स्तुति को बालकों को कंठस्थ कराना चाहिये।

(४) जिनवाणी स्तुति का सामान्यार्थ तैयार कराना चाहिये।

(५) जिनवाणी स्तुति में आये भावों को प्रश्नोत्तर के माध्यम से समझाना एवं तैयार कराना चाहिये। जैसे :-

प्रश्न - जिनवाणी गंगा कहाँ से निकलती है?

उत्तर - महावीर भगवान रूपी हिमालय से।

प्रश्न - यदि जिनवाणी रूपी दीप शिखा न होती तो क्या होता?

उत्तर - हम तत्त्वज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५ (राजस्थान)

बालबोध-प्रशिक्षण परीक्षा

प्रथम प्रश्न-पत्र (सैद्धान्तिक)

समय :- १ घण्टा **पूर्णाङ्क : ४०**

१. किन्हीं चार की परिभाषा एवं भेद नाम सहित लिखिये। (८)

द्रव्य, सामान्य गुण, अभक्ष्य, कषाय, परिग्रह, परमेष्ठी।

२. किन्हीं चार में अन्तर स्पष्ट कीजिये। (१२)

अ) धर्म द्रव्य और अधर्म द्रव्य

ब) जिन और जैन

स) भाव हिंसा और द्रव्य हिंसा

द) स्वभाव और विभाव

इ) तीर्थंकर और भगवान

३. दिये हुये विकल्पों में से चुनकर खाली स्थान भरिये। (४)

अ) सबसे बड़ा पाप....... होता है। (मिथ्यात्व, हिंसा, कषाय)

ब) ऋषभमुनि को...........ने प्रथम आहार दिया था।
(राजा श्रेयांस, चन्दनबाला)

स) आदिनाथ की निर्वाणभूमि.....है।
(कैलाशपर्वत, शिखरजी, चंपापुर)

द) भक्तामर में .... की स्तुति है।
(महावीर स्वामी, आदिनाथ, नेमिनाथ)

४. निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिये (कोई दो) (१६)

अ) द्रव्य-गुण-पर्याय के जानने से क्या लाभ है? (कोई चार लाभ)

ब) कषायें उत्पन्न कैसे होती हैं एवं नष्ट कैसे होती हैं?

स) नरक गति का स्वरूप एवं नरक गति के बंध का कारण क्या है?

द) मिथ्यात्व कैसे नष्ट हो सकता है?

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५ (राजस्थान)

बालबोध-प्रशिक्षण परीक्षा

द्वितीय प्रश्न-पत्र (शिक्षण पद्धति)

समय :- २ घण्टा **पूर्णाङ्क : ६०**

१. आज हमें कैसे अध्यापकों की आवश्यकता है? (४)

अथवा

शिक्षण क्या है? इसमें कौन-कौन से बिन्दु होते हैं?

२. निम्नलिखित किन्हीं दो की परिभाषा लिखिये। (८)

पाठयोजना, उद्देश्य, सामान्यार्थ विवेचन, सारांश कथन

३. किन्हीं दो में अन्तर स्पष्ट कीजिये। (८)

अ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर - वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर।

ब) सामान्य उद्देश्य - विशेष उद्देश्य।

स) सहायक सामग्री - आवश्यक सामग्री।

४. कक्षा में प्रवेश करते समय अध्यापक को किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिये (कोई पांच) (१०)

अथवा

सामान्य उद्देश्य कौन-कौन से हैं? (कोई पाँच लिखिये)

५. 'कषाय' अथवा 'इन्द्रियाँ' पाठ की पाठ योजना बनाइये। (२०)

६. 'भगवान आदिनाथ' अथवा 'द्रव्य' नामक पाठ का पाठ निर्देश बनाइये। (१०)

अध्याय | तृतीय

प्रवेशिका प्रशिक्षण

प्रवेशिका प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की प्रवेशिका परीक्षा में निर्धारित वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं में अध्यापन की पद्धति में अध्यापक बन्धुओं को प्रशिक्षित करना एवं उनमें प्रतिपादित प्रमुख तात्त्विक सिद्धान्तों की ओर उनका ध्यान आकर्षित करना है।

प्रवेशिका प्रशिक्षण सम्बन्धी उद्देश्य दो भागों में विभाजित किए जा सकते हैं :-

(क) सामान्य उद्देश्य

(ख) विशेष उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य - सामान्य उद्देश्य वे हैं जो प्रवेशिका में पढ़ाये जाने वाले सभी पाठों में सामान्य रूप से रहते हैं। वे मुख्यतः निम्नानुसार हैं :-

(i) छात्रों में आत्महितकारी शास्त्रों के पढ़ने की रुचि जाग्रत करना।

(ii) तत्त्वज्ञान और सदाचार सम्बन्धी ज्ञान देना।

(iii) चारों अनुयोगों का समन्वित ज्ञान देना।

(iv) अपने पूर्वजों के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी देना।

(v) जैन साहित्य-निर्माता आचार्यों एवं विद्वानों का सामान्य परिचय कराना।

(vi) जैन तीर्थों एवं पर्वों का सामान्य ज्ञान देना।

(vii) शास्त्रों के मर्म को समझने की पद्धति से परिचित कराना।

(viii) सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूपी मोक्षमार्ग को जीवन में प्राप्त करने की प्रेरणा देना।

(ix) सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एवं बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(x) प्राप्त ज्ञान को अपने शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न करना।

(ख) विशेष उद्देश्य – विशेष उद्देश्य से पढ़ाये जाने वाले पाठ से संबंधित होते हैं। अतः ये प्रत्येक पाठ के अलग-अलग होते हैं तथा पाठ्यवस्तु के अनुसार निर्धारित किये जाते हैं। इन्हें यथास्थान स्पष्ट किया जावेगा।

वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं के पाठ पद्य, गद्य एवं संवाद के रूप में हैं। प्रत्येक प्रकार की एक-एक आदर्श पाठ-योजना यहाँ दी जा रही है। वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं के तीनों भागों का प्रतिनिधित्व रहे - इस बात को भी ध्यान में रखकर प्रत्येक भाग में से एक-एक पाठ चुना गया है।

इस प्रकार इस अध्याय में निम्न तीन पाठों की आदर्श पाठ-योजनायें प्रस्तुत हैं :

(१) देव-स्तुति

(२) देव शास्त्र गुरु

(३) मैं कौन हूँ?

शेष पाठों के पाठ-निर्देश दिये गये हैं।

आदर्श पाठ-योजना १

स्थान - श्री एस.एल. जैन उ.मा. विद्यालय, विदिशा (म.प्र.)

कक्षा - प्रवेशिका प्रथम खण्ड

प्रकरण - "देव-स्तुति"

"सकल ज्ञेय......................स्तुति के आरंभ के १० छंद।"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य - सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एवं बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(ख) विशेष उद्देश्य - 'देव-स्तुति' का भाव-ज्ञान छात्रों को देना एवं स्तुति याद कराना।

पूर्व-ज्ञान

छात्र देव के सामान्य स्वरूप और देव-दर्शन की विधि से परिचित हैं। वे बालबोध पाठमाला भाग १ के 'देव-दर्शन', बालबोध पाठमाला भाग २ के 'देव-स्तुति' एवं बालबोध पाठमाला भाग ३ के 'देव-दर्शन' नामक पाठों में उक्त विषय के संबंध में पढ़ चुके हैं।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, यदि उपलब्ध हो तो तीर्थंकर भगवान का एक कैलेण्डर-साइज चित्र।

उद्देश्य कथन

आज हम आध्यात्मिक कविवर पं. दौलतरामजी द्वारा रचित 'देव-स्तुति' का भाव समझेंगे। यह भी जानेंगे कि भगवान के गुण स्तवन से क्या लाभ हैं एवं हम संसार में क्यों भटक रहे हैं?

प्रस्तुतिकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिन में पढ़ाया जायेगा। प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियों में विभाजित होगा। प्रत्येक अन्विति में निम्नलिखित सोपान होंगे :-

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) सामान्यार्थ विवेचन
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) सारांश कथन

नोट :- अन्विति आरम्भ होने के पूर्व लेखक-परिचय नाम का एक सोपान और होगा।

प्रथम दिन

लेखक-परिचय

अध्यापक 'देव-स्तुति' के लेखक पं. दौलतरामजी का संक्षिप्त परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से निम्नानुसार देंगे :-

अध्यापक कथन - जो स्तुति आज हम पढ़ने जा रहे हैं वह अध्यात्मप्रेमी कविवर पं. दौलतरामजी ने लिखी है। आपके द्वारा लिखा गया छहढाला नामक ग्रन्थ जैन समाज में बहुत आदर के साथ पढ़ा जाता है। जैन समाज में ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो छहढाला से परिचित न हो? आपने बहुत सुन्दर आध्यात्मिक पद भी लिखे हैं जो सारे भारतवर्ष की शास्त्रसभाओं में प्रतिदिन गाये जाते हैं। हम देखेंगे कि उन्होंने इस स्तुति में भी अपूर्व भाव भरे हैं।

प्रथम अन्विति

"सकल ज्ञेय ....अछीन।"

आदर्श वाचन

भक्ति का वातावरण उत्पन्न करने के लिये अध्यापक सुर और लय के साथ आदर्श वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक एक-दो छात्रों से इसका सस्वर वाचन करावेंगे उसमें आवश्यक सुधार स्वयं करेंगे या अन्य छात्रों से करावेंगे।

सामान्यार्थ विवेचन

इसमें अध्यापक छन्दों का निम्नानुसार सामान्यार्थ बतावेंगे। साथ ही आवश्यक कठिन शब्दों का अर्थ भी बताते जावेंगे।

अध्यापक कथन - सच्चे देव की स्तुति आरम्भ करते हुये पं. दौलतरामजी कहते हैं कि हे जिनेन्द्र! आप लोकालोक के ज्ञाता होने पर भी आत्मानन्द में मग्न हो। घाति कर्मों से रहित प्रभो! आपकी जय हो।

(अरि=मोहनीय, रज=ज्ञानावरणी दर्शनावरणी, रहस=अंतराय)।

हे प्रभो! आप मोहान्धकार को नाश करने वाले वीतरागी विज्ञान के सूर्य हो। अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्तसुख और अनन्तवीर्य से सुशोभित आपकी जय हो।

आपकी शान्तमुद्रा भव्य जीवों को आत्मानुभूति की ओर लक्ष्य ले जाने में निमित्त होती है। भव्य जीवों के भाग्य से खिरने वाली आपकी दिव्यध्वनि को सुनकर उनका भ्रम नष्ट हो जाता है।

हे प्रभो! आपके गुणों का चिन्तवन करने से अपनी और पराये की पहिचान हो जाती है और अनेक आपत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। आप समस्त दोषों से रहित और सब विकल्पों से मुक्त हो, सब महिमाओं से युक्त जग के भूषण हो। हे भगवान्! आप समस्त विरोधों से रहित परम पवित्र शुद्ध ज्ञानमय और अनुपम हो। आप शुभ-अशुभ भावों का अभाव कर स्वभाव परिणति में विराजमान हो।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

अध्यापक छन्दों में आई महत्त्वपूर्ण वस्तु का ज्ञान कराने के लिये निम्न प्रश्न स्वयं करेंगे एवं छन्दों के आधार पर उत्तर देंगे :-

प्रश्न	उत्तर
१. भगवान कौन हैं? (द्वितीय छन्द के आधार पर)	१. अनन्त चतुष्टय से युक्त वीतरागी परमात्मा ही भगवान हैं।
२. भगवान की स्तुति से क्या लाभ हैं? (चतुर्थ छंद के आधार पर)	२. (क) अपनी और पराये की पहिचान (भेद-विज्ञान) हो जाती है। (ख) अनेक आपत्तियाँ (मोह-राग-द्वेष) नष्ट हो जाती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नोत्तर वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा छात्रों को नियमानुसार तैयार कराये जावेंगे :-

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान की स्तुति से अपनी और पराये की पहिचान (भेद-विज्ञान) हो जाती है।	१. भगवान की स्तुति से अपनी और पराये की पहिचान होती है या नहीं?	१. होती है।
	२. भगवान की स्तुति से अपनी और पराये की पहिचान होती है या केवल पराये की?	२. अपनी और पराये की पहिचान होती है।
	३. भगवान की स्तुति से किस-किसकी पहिचान होती है?	३. अपनी और पराये की।
	४. अपनी और पराये की पहिचान किससे होती है?	४. भगवान की स्तुति से।

सारांश कथन

पठितांश का सारांश निम्नानुसार बताया जायेगा :-

अध्यापक कथन - बालको! आज के पाठ में भगवान की स्तुति करते हुये बताया गया है कि भगवान चार घाति कर्मों से रहित एवं अनन्त चतुष्टय से युक्त हैं। उनके गुणों के स्मरण से स्वपर भेद-विज्ञान प्रकट होता है और अनेक आपत्तियों का नाश होता है। शुभ-अशुभ भावों का नाश किये बिना कोई भगवान नहीं बन सकता है। अतः हमें उनका स्वरूप समझकर उनका ध्यान करना चाहिये। हम भी इस प्रकार भगवान बन सकते हैं।

द्वितीय अन्विति

"अष्टादश दोष..................................स्वपद सार।"

आदर्श वाचन - पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन - पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – हे भगवान् आप १८ दोषों से रहित अनन्त चतुष्टय सहित हैं, मुनिराज और गणधर देव आपकी स्तुति करते हैं। आप केवलज्ञान आदि नौ लब्धियों से युक्त हैं। आपके बताये मार्ग पर चलकर अनन्त जीव मोक्ष गये हैं, जा रहे हैं और जावेंगे। संसार समुद्र से तारने में, भयंकर दुःख दूर करने में आप ही निमित्त कारण हो; अतः मैं आपकी शरण में आया हूँ और अपना चिरकालीन दुखड़ा सुना रहा हूँ।

मैं स्वयं अपने को भूलकर, कर्मों के फल पुण्य-पाप को अपनाकर, अपने को पर का व पर को अपना कर्त्ता मानकर और पर-पदार्थों में इष्ट-अनिष्ट कल्पना करके आज तक संसार में घूमा हूँ।

हम स्वयं अपने अज्ञान के कारण दुःखी हैं। हमने शरीर को आत्मा मानकर कभी भी आत्मानुभव की ओर ध्यान नहीं दिया।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. यह जीव संसार में क्यों घूमा? (९वें छंद के आधार पर)	१. (क) अपने को भूल कर। (ख) पुण्य-पाप को अपनाकर। (ग) पर के साथ कर्त्ता-कर्म भाव मानकर। (घ) पर में इष्ट-अनिष्ट कल्पना करके।
२. यह जीव दुःखी क्यों हुआ? (१०वें छन्द के आधार पर)	२. (क) अज्ञान के कारण। (ख) शरीर में आत्मबुद्धि के कारण। (ग) आत्मानुभव न होने के कारण।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
जीव अपने को भूलकर संसार में घूमता है।	१. जीव अपने को भूलकर संसार में घूमता है या नहीं? २. जीव अपने को भूलकर संसार में घूमता है या अपने को जानकर? ३. जीव संसार में क्यों घूमता है? ४. अपने को भूल जाने से जीव क्या होता है?	१. घूमता है। २. अपने को भूलकर। ३. अपने को भूलकर। ४. जीव संसार में घूमता है।

नोट : इसी प्रकार सभी तथ्य-वाक्यों को तैयार कराया जायेगा।

सारांश कथन

पठितांश का सारांश निम्नानुसार बताया जायेगा :-

अध्यापक कथन - अभी हमने भगवान की स्तुति में यह समझा कि भगवान १८ दोषों से रहित, केवलज्ञानी व नौ लब्धियों से युक्त होते हैं। उनके बताये मार्ग पर चलकर हम भी भगवान बन सकते हैं। हम आज तक संसार में अपनी स्वयं की भूल से ही घूम रहे हैं और स्वयं के अज्ञान के कारण ही दुःखी हैं।

समापन

पठित वस्तु को छात्रों ने कितना हृदयंगम किया है, यह जानने के लिये निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न किये जावेंगे :-

(१) अपने को भूलकर इस जीव की क्या दशा हुई?

(२) अठारह दोषों से रहित कौन होते हैं?

(३) हम दुःखी क्यों हैं?

गृहकार्य

अध्यापक निम्नानुसार कार्य अगले दिन करके लाने के लिये देंगे :-

अध्यापक कथन - कल तुम्हें स्तुति के आज पढ़े छन्द याद करके लाने हैं तथा चौथे और नवें छन्द के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखकर व याद करके लाने हैं :-

(१) भगवान के गुणों का चिंतवन करने से क्या लाभ होते हैं?

(२) अनादि से यह जीव संसार में क्यों घूमा?

द्वितीय दिन

स्थान - श्री एस.एल. जैन उ.मा. विद्यालय, विदिशा (म.प्र.)

कक्षा - प्रवेशिका प्रथम खण्ड

प्रकरण - "देव-स्तुति"

"सकल ज्ञेय...................स्तुति के ११वें छंद से अंत तक"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य - पूर्ववत्।

(ख) विशेष उद्देश्य - पूर्ववत्।

सहायक सामग्री - पूर्ववत्।

उद्देश्य कथन

आज हम देव-स्तुति के माध्यम से यह समझेंगे कि भगवान को नहीं पहिचानने से क्या-क्या दुःख होते हैं और आत्मा का अहित क्यों हो रहा है?

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ दो अन्वितियों में समाप्त होगा। द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से प्रथम अन्विति से पूर्व आनेवाला लेखक-परिचय नामक सोपान नहीं होगा एवं उसके स्थान पर प्रथम अन्विति के पहले 'पूर्व-पाठ मूल्यांकन' नामक एक सोपान और होगा।

द्वितीय अन्विति में लेखक-परिचय एवं पूर्व-पाठ मूल्यांकन नामक सोपान को छोड़कर बाकी सब सोपान रहेंगे।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

पूर्वपठित पाठ को छात्रों ने तैयार किया है या नहीं, यह जानने के लिए निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न किए जावेंगे :-

(१) यह जीव संसार में क्यों घूमा?

(२) देव-स्तुति का पहला छन्द सुनाइये।

(३) "आकुलित भयो अज्ञान धारि".............आदि छन्द का सामान्यार्थ बताइये।

प्रथम अन्विति

"तुमको बिन जाने.........................ज्यों निजाधीन।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – भक्त भगवान से कहता है कि हे भगवन्! आपको पहिचाने बिना मैंने जो भी कष्ट पाये हैं उन्हें आप केवलज्ञानी होने से जानते ही हैं। मैंने तिर्यंच, नरक, मनुष्य और देव गति में अनन्त बार जन्म-मरण किया है।

अब काललब्धि आने से आपके दर्शन प्राप्त हुये और मेरा मन शान्त हो गया है। मैं चाहता हूँ कि आपके चरणों की शरण सदा प्राप्त रहे। आप में अनन्त गुण हैं। भक्तगण आपको पार उतारने वाला कहते हैं।

आत्मा का अहित करने वाले पंचेन्द्रियों के विषयों और कषायों में मेरा परिणाम न लगे। मैं तो बस अपने में ही लीन रहना चाहता हूँ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. भगवान को पहिंचाने बिना इस जीव की क्या दशा हुई? (११वें छन्द के आधार पर)	१. चारों गतियों में जन्म-मरण के दुःख उठाता रहा।
२. आत्मा का अहित करने वाले कौन हैं? (१४वें छन्द के आधार पर)	२. पंचेन्द्रियों के विषय और क्रोधादि कषाएँ।
३. ज्ञानी भक्त क्या चाहता है? (१४वें-१५वें छन्द के आधार पर)	३. (क) आत्मा में लीन होना। (ख) पूर्ण स्वतंत्र होना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान को जाने बिना जीव चारों गतियों में जन्म-मरण के दुःख पाता है।	१. भगवान को जाने बिना जीव चारों गतियों में जन्म-मरण के दुःख पाता है या नहीं?	१. पाता है।
	२. भगवान को जाने बिना जीव चारों गतियों में जन्म-मरण के दुःख पाता है या सुख।	२. जन्म-मरण के दुःख।
	३. भगवान को जाने बिना जीव चारों गतियों में क्या पाता है?	३. जन्म-मरण के दुःख।
	४. जीव चारों गतियों में जन्म-मरण के दुःख क्यों पाता है?	४. भगवान को जाने बिना।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – आज के पाठ में हमने तीन बातें सीखीं :-

(१) भगवान को पहिचाने बिना चतुर्गति भ्रमण नहीं मिटता।

(२) आत्मा का अहित करने वाले – पंचेन्द्रियों के विषयों की लालसा और कषाएँ हैं।

(३) ज्ञानी भक्त आत्मा में लीन रहना और पूर्ण स्वतंत्र होना चाहता है।

द्वितीय अन्विति

"मेरे न चाह कछु..............................त्रियोग संभार।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – ज्ञानी भक्त भगवान से कह रहा है कि हे भगवन्! मुझे रत्नत्रय के अलावा और कुछ नहीं चाहिये। जिस प्रकार चन्द्रमा स्वभाव से ही गर्मी को दूर करता है और ठंडक लाता है, उसी प्रकार आपकी स्तुति से भी आनन्द प्राप्त होता है। जिस प्रकार अमृत पीने से रोग चला जाता है, उसी प्रकार आपके अनुभव से भव का अभाव होता है।

मेरे हृदय में तो यह विश्वास हो गया है कि आप संसार-समुद्र से पार उतारने वाले जहाज हो तथा तीन लोक और तीन काल में आपके समान सुखदायक कोई नहीं है।

आपके गुणरूपी अनन्त मणियों के गिनने में गणधर देव भी समर्थ नहीं हैं तो अल्पबुद्धि वाला दौलतराम क्या कह सकता है? अतः मैं दौलतराम तो मन-वचन-काय सँभालकर नमस्कार करता हूँ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. ज्ञानी भक्त की क्या इच्छा है? (१५वें छन्द के आधार पर)	१. (क) रत्नत्रय निधि पाने की। (ख) मोह-ताप हरने की।
२. क्या भगवान कुछ देते हैं? (१६वें छंद के आधार पर)	२. नहीं - पर जैसे चन्द्रमा शीतलता देता नहीं - उसकी उपस्थिति में वातावरण स्वयं शीतल हो जाता है; उसी प्रकार भगवान कुछ देते नहीं, पर उनका स्मरण करने से सहज शान्ति प्राप्त होती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
ज्ञानी भक्त भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश चाहता है।	१. ज्ञानी भक्त भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश चाहता है या नहीं?	१. चाहता है।
	२. भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश कौन चाहता है? ज्ञानी भक्त या अज्ञानी भक्त?	२. ज्ञानी भक्त
	भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश कौन चाहता है?	३. ज्ञानी भक्त।
	४. ज्ञानी भक्त क्या चाहता है?	४. रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – बालको! अभी पढ़े छन्दों में हमने निम्न दो बातें जानीं :-

(१) ज्ञानी भक्त पूर्ण स्वतंत्रता चाहता है और उसकी प्राप्ति का मार्ग रत्नत्रय को मानता है, अतः उसे ही चाहता है।

(२) भगवान कुछ देते नहीं, पर भगवान के स्वरूप का चिन्तवन करने वाले को सहज ही शान्ति प्राप्त होती है।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :-

(१) रत्नत्रय निधि कौन चाहता है?

(२) आत्मा के अहित करने वाले कौन हैं?

गृहकार्य

पठितांश में अध्यापक अगले दिन करके लाने के लिये निम्नानुसार कार्य देंगे :-

अध्यापक कथन – कल तुम्हें सम्पूर्ण स्तुति याद करके लाना है तथा बोधगम्य प्रश्नोत्तरों के उत्तर स्तुति के आधार पर लिखकर व याद करके लाना है।

आदर्श पाठ–योजना २

(देव शास्त्र गुरु)

स्थान – श्री त्रिलोकचंद जैन उ.मा. विद्यालय, इन्दौर

कक्षा – प्रवेशिका द्वितीय खण्ड

प्रकरण – "सच्चा देव"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एवं बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(ख) विशेष उद्देश्य – सच्चे देव का स्वरूप समझाना।

पूर्व–ज्ञान

देव के संबंध में छात्रों को बालबोध पाठमाला भाग २–३, वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १ में आगत स्तुतियों एवं वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग २ में आगत देव–शास्त्र–गुरु पूजन के आधार पर सामान्य जानकारी है।

सहायकसामग्री

पाठ्यपुस्तक, यदि संभव हो तो जिनेन्द्र भगवान का कैलेण्डर-साइज चित्र।

उद्देश्य कथन

आज हम जिनकी प्रतिदिन पूजन करते हैं, उन सच्चे देव के स्वरूप पर विचार करेंगे।

प्रस्तुतिकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिन में पढ़ाया जायेगा। प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियों में विभाजित होगा। प्रत्येक अन्विति में निम्नलिखित सोपान होंगे :-

आदर्श वाचन
अनुकरण वाचन
विचार-विश्लेषण
बोधगम्य प्रश्नोत्तर
वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
सारांश कथन

नोट :- प्रथम दिन की प्रथम अन्विति आरम्भ होने के पूर्व एक सोपान आधार-परिचय नाम का और होगा।

प्रथम दिन

आधार-परिचय

यह पाठ रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार पर लिखा गया है। अतः अध्यापक छात्रों को आचार्य समन्तभद्र और उनके द्वारा रचित ग्रन्थ रत्नकरण्डश्रावकाचार का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से निम्नानुसार देंगे :-

अध्यापक कथन - यह देव-शास्त्र-गुरु नामक पाठ विक्रम की द्वितीय शती के दिग्गज आचार्य समन्तभद्र के रत्नकरण्डश्रावकाचार नामक ग्रन्थ के आधार पर लिखा गया है। आप कदंब राजवंश के क्षत्रिय राजकुमार थे। आपके बाल्यकाल का नाम शान्ति वर्मा था। आप छन्द, अलंकार, काव्य, कोष, तर्क और न्याय आदि के अद्वितीय विद्वान् थे। आप में बेजोड़ वाद-शक्ति थी। आपने कई बार घूम-घूम कर कुवादियों का गर्व खण्डित किया था। आपने स्वयं लिखा है :-

"वादार्थी विचराम्यहं नरपते शार्दूलविक्रीडितम्"

"हे राजन्! मैं वाद के लिए सिंह की तरह विचरण करता हूँ।"

आपने आप्तमीमांसा, तत्त्वानुशासन, स्वयंभूस्तोत्र, गंधहस्ति महाभाष्य आदि अनेक महाग्रंथ लिखे हैं।

प्रथम अन्विति

"सुबोध-क्यों भाई ....विजय पा ली है।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वयं संवाद पद्धति में एकपात्रीय अभिनयपूर्वक उचित आरोह-अवरोह के साथ प्रस्तुत पाठ का वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रों द्वारा संवाद पद्धति में अनुकरण वाचन करावेंगे। एक छात्र सुबोध वाले व दूसरा छात्र प्रबोध वाले अंश का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करेंगे। अध्यापक स्वयं या अन्य छात्र द्वारा अनुकरण वाचन में आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण

अनुकरण वाचन के पश्चात् अध्यापक प्रस्तुत अन्वितियों में आगत विचारों, सिद्धान्तों और परिभाषाओं को विश्लेषण करके निम्नानुसार समझावेंगे :-

अध्यापक कथन – देखो भाई! अभी हमने जो अंश पढ़ा है, उसमें निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं :-

(१) जैन धर्म में व्यक्ति को महत्त्व न देकर गुणों को महत्त्व दिया जाता है। जिस व्यक्ति में पूज्य गुण पाये जावें, वह पूज्य होता है।

(२) वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो; वही सच्चा देव है।

(३) जन्म-मरण, राग-द्वेषादि १८ दोषों से रहित हों, वे वीतरागी हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. पूजन किसकी की जाती है?	१. देव-शास्त्र-गुरु की।
२. जैनधर्म में व्यक्ति की मुख्यता है या गुणों की?	२. गुणों की।
३. सच्चा देव किसे कहते हैं?	३. जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो, उसे सच्चा देव कहते हैं।
४. वीतरागी किसे कहते हैं?	४. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषों से रहित हों; वे वीतरागी हैं।
५. अरहंत सिद्ध सच्चे देव हैं या नहीं?	५. हैं, क्योंकि वे वीतरागी सर्वज्ञ हैं।
६. देव गति के देव सच्चे देव हैं या नहीं?	६. नहीं, क्योंकि वे वीतरागी सर्वज्ञ नहीं हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के निम्नानुसार चार सोपानों द्वारा तैयार कराया जायेगा :-

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषों से रहित हों; उन्हें वीतरागी कहते हैं।	१. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषों से रहित हों; उन्हें वीतरागी कहते हैं या नहीं?	१. कहते हैं।
	२. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषों से रहित हों; उन्हें वीतरागी कहते हैं या रागी?	२. वीतरागी।
	३. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषों से रहित हों; उन्हें क्या कहते हैं?	३. वीतरागी।
	४. वीतरागी किन्हें कहते हैं?	४. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषों से रहित हों; उन्हें वीतरागी कहते हैं।

नोट : इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओं, सिद्धान्त-वाक्यों तथा तथ्य-वाक्यों को समझाया जावेगा।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त में सारांश कथन में परिभाषाओं और सिद्धान्त-वाक्यों को संक्षेप में सरल भाषा में निम्नानुसार दुहरा दिया जावेगा :-

अध्यापक कथन – अभी हमने तीन बातें सीखीं :-

(१) जैन धर्म में व्यक्ति की मुख्यता नहीं, वह व्यक्ति के स्थान पर गुणों में विश्वास रखता है।

(२) सच्चा देव वही है जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो।

(३) जिनमें राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोष न हों; वे वीतरागी हैं।

द्वितीय अन्विति

"सुबोध-वीतरागी तो....................अच्छा भी होगा।"

आदर्श वाचन - पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन - पूर्ववत्।

विचार विश्लेषण -

अध्यापक कथन - अभी हमने पढ़ा कि जो तीन लोक और तीन काल संबंधी सभी बातों को एक साथ जानता है, वही सर्वज्ञ है तथा जो वीतराग और सर्वज्ञ हो - वही सच्चा देव है। उसका उपदेश आत्महितकारी होता है, अतः वह हितोपदेशी भी कहा जाता है। उसका उपदेश सच्चा होता है, क्योंकि वह पूर्ण ज्ञानी है और उसका उपदेश अच्छा (आत्महितकारी) होता है, क्योंकि वह वीतरागी है।

अतः सच्चे देव की सच्चाई का आधार सर्वज्ञता और अच्छाई का आधार वीतरागता है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. सर्वज्ञ किसे कहते हैं?	१. जो तीन लोक और तीन काल की सब बातें एक साथ जानता हो।
२. सच्चे देव को हितोपदेशी क्यों कहा जाता है?	२. क्योंकि उसकी वाणी में आत्महितकारी उपदेश निकलता है।
३. सच्चे देव की वाणी सच्ची क्यों होती है?	३. झूठ तो अज्ञानता से बोला जाता है, वे सर्वज्ञ हैं; अतः उनकी वाणी सच्ची ही होती है।
४. उनकी वाणी अच्छी क्यों होती है?	४. राग-द्वेष (पक्षपात) के कारण बुरी बात कही जाती है। वीतरागी होने से उनकी बात अच्छी (आत्महितकारी) होती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो तीन लोक और तीन काल की सब बातें एक साथ जानता हो, उसे सर्वज्ञ कहते हैं।	१. जो तीन लोक और तीन काल की सब बातें एक साथ जानता हो, उसे सर्वज्ञ कहते हैं या नहीं?	१. कहते हैं।
	२. जो तीन लोक और तीन काल की सब बातें एक साथ जानता हो उसे सर्वज्ञ कहते हैं या अल्पज्ञ?	२. सर्वज्ञ।
	३. जो तीन लोक और तीन काल की सब बातें एक साथ जानता हो, उसे क्या कहते हैं?	३. सर्वज्ञ।
	४. सर्वज्ञ किसे कहते हैं?	४. जो तीन लोक और तीन काल की सब बातें एक साथ जानता हो।

नोट : इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओं व सिद्धान्तों को समझाया जावेगा।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – आज हमने तीन बातें समझीं :-

(१) तीन लोक और तीन काल की सब बातें एक साथ जानने वाला सर्वज्ञ कहलाता है।

(२) हित का उपदेशक होने से उसे हितोपदेशी कहते हैं।

(३) सच्चे देव की वाणी सच्ची और अच्छी होती है।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व पठितांश छात्रों की समझ में आया या नहीं, यह जानने के लिए निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :-

(१) जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो; वह कौन है?

(२) सर्वज्ञ किसे कहते हैं?

(३) पूजा किसकी की जाती है?

गृहकार्य

अध्यापक कथन – कल तुम्हें आज समझाए गये प्रश्नों को लिखकर व याद करके लाना है।

द्वितीय दिन

स्थान – श्री त्रिलोकचंद जैन उ.मा. विद्यालय, इन्दौर

कक्षा – प्रवेशिका द्वितीय खण्ड

प्रकरण – ''शास्त्र और गुरु''

''सकल ज्ञेय....................स्तुति के ११वें छंद से अंत तक''

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – पूर्ववत्।

(ख) विशेष उद्देश्य – शास्त्र और गुरु का स्वरूप समझाना एवं उनके प्रति बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

पूर्व–ज्ञान – पूर्ववत्।

सहायक सामग्री – पूर्ववत्।

उद्देश्य कथन

आज हम सच्चे शास्त्र और गुरु का स्वरूप समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से प्रथम अन्विति के पूर्व लेखक–परिचय नामक सोपान न होकर उसके स्थान पर 'पूर्व–पाठ मूल्यांकन' नामक सोपान होगा। बाकी सब सोपान पूर्ववत् रहेंगे। द्वितीय अन्विति में लेखक परिचय व पूर्वपाठ मूल्यांकन सोपान नहीं होंगे। बाकी सब सोपान पूर्ववत रहेंगे।

पूर्व–पाठ मूल्यांकन

पूर्वपठित पाठ को छात्रों ने तैयार किया है या नहीं, यह जानने के लिए निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न किए जावेंगे :–

(१) सच्चा देव किसे कहते हैं?

(२) सच्चे देव को हितोपदेशी क्यों कहा जाता है?

(३) वीतरागी किसे कहते हैं?

प्रथम अन्विति

''सुबोध–देव तो समझा..................मर्म को जानते हैं।''

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

विचार विश्लेषण – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – अभी हमने पढ़ा कि वीतरागता की पोषक सच्चे देव की वाणी में जो तत्त्वोपदेश होता है उसे ही शास्त्र कहते हैं। उसमें कहीं भी पूर्वापर विरोध नहीं होता। इसके अध्ययन से सन्मार्ग का पता चल जाता है, अतः जीव खोटे रास्ते पर जाने से बच जाता है।

देव-शास्त्र-गुरु वाले गुरु, विद्या-गुरुओं से भिन्न होते हैं। भगवान की वाणी के मर्म को जानने वाले वे नग्न दिगम्बर होते हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. शास्त्र किसे कहते हैं?	१. पूर्वापर विरोध से रहित वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते हैं।
२. इसके पढ़ने से क्या लाभ हैं?	२. जीव कुमार्ग से हटकर सन्मार्ग पर लग जाता है।
३. सच्चे गुरु कैसे होते हैं?	३. जिनवाणी के मर्म को जानने वाले नग्न दिगम्बर।
४. क्या विद्या-गुरु गुरु नहीं हैं?	४. विद्या-गुरु अष्ट द्रव्य से पूजने योग्य देव-शास्त्र-गुरु वाले गुरु नहीं हैं। सच्चे गुरु तो नग्न दिगम्बर आत्मज्ञानी वीतरागी सन्त होते हैं।
५. क्या नग्नता बिना कोई गुरु नहीं हो सकता?	५. देव-शास्त्र-गुरु वाले गुरु नहीं हो सकते।
६. नग्न रहने मात्र से कोई गुरु हो जाता है क्या?	६. नहीं, आत्मज्ञान बिना कोई सच्चा गुरु नहीं हो सकता।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति से निम्नानुसार चार सोपानों द्वारा तैयार कराया जायेगा :-

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
पूर्वा पर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते हैं।	१. पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते हैं या नहीं?	१. कहते हैं।
	२. पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते हैं या कुशास्त्र?	२. शास्त्र।
	३. पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को क्या कहते हैं?	३. शास्त्र।
	४. शास्त्र किसे कहते हैं?	४. पूर्वापर विरोध रहित वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते हैं।

नोट : इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओं, सिद्धान्तों और तथ्यों को समझाया जावेगा।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त में सारांश कथन में परिभाषाओं व सिद्धान्त-वाक्यों को संक्षेप में सरल भाषा में निम्नानुसार दुहरा दिया जायेगा :-

अध्यापक कथन - आज हमने दो बातें सीखी :-

(१) पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, तत्त्वोपदेश करने वाली सच्चे देव की वाणी ही शास्त्र है।

(२) विद्या-गुरुओं से भिन्न सच्चे गुरु जिनवाणी के मर्म को जानने वाले नग्न दिगम्बर होते हैं।

द्वितीय अन्विति

"सुबोध-अच्छा और....................हमें भी ले चलना।"

आदर्श वाचन - पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन - पूर्ववत्।

विचार विश्लेषण -

अध्यापक कथन - अभी हमने पढ़ा कि आत्मज्ञानी सच्चे गुरु निरन्तर आत्मध्यान और स्वाध्याय में लीन रहते हैं, सर्व आरंभ और परिग्रह से रहित होते हैं और विषय-भोगों की लालसा भी उनमें नहीं पायी जाती है। रत्नत्रय से युक्त उन मुनियों का बाह्याचार भी शास्त्रानुकूल होता है।

देव शास्त्र गुरु की पूजा के बदले में उनसे कुछ मांगना मूर्खता है, क्योंकि जो सब कुछ छोड़ चुके हों उनसे कुछ माँगना ठीक नहीं। उनकी पूजा तो उन जैसा बनने के भाव से की जाती है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. सच्चे गुरु कैसे होते हैं?	१. (क) आत्मज्ञानी और आत्मा में लीन रहने वाले। (ख) विषय-भोगों से विरक्त। (ग) रत्नत्रय से युक्त। (घ) आगमानुकूल बाह्याचार से युक्त। (ङ) समस्त आरंभ-परिग्रह से रहित।
२. क्या भगवान से कुछ माँगना ठीक है?	२. नहीं, जो सब कुछ त्याग चुके, उनसे कुछ माँगना ठीक नहीं।
३. तो पूजा क्यों की जाती है?	३. उन जैसा बनने के भाव से पूजा की जाती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
आत्मज्ञानी और आत्मा में लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते हैं।	१. आत्मज्ञानी और आत्मा में लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते हैं या नहीं? २. आत्मज्ञानी और आत्मा में लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते हैं या विद्या-गुरु? ३. आत्मज्ञानी और आत्मा में लीन रहने वाले गुरु को क्या कहते हैं? ४. सच्चा गुरु किसे कहते हैं?	१. कहते हैं। २. सच्चा गुरु। ३. सच्चा गुरु। ४. आत्मज्ञानी और आत्मा में लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते हैं।

नोट : (१) इसी प्रकार सच्चे गुरु के पाँचों लक्षणों को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराया जायेगा। तदुपरान्त सच्चे गुरु के पाँचों लक्षणों को एक साथ स्पष्ट कर दिया जायगा।

(२) शेष प्रश्नों को भी वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराया जायगा।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – अभी हमने निम्नलिखित बातें सीखी :-

(१) सच्चे गुरु आत्मज्ञानी, आत्मध्यानी, रत्नत्रयधारी, विषय-भोगों की इच्छा से रहित, आरंभ-परिग्रह से रहित तपस्वी होते हैं।

(२) उन जैसे बनने की भावना से ही उनकी पूजा की जाती है, लौकिक भोगों की इच्छा से नहीं।

समापन

अध्यापक कथन – आज का पाठ तुम्हारी समझ में आ गया होगा? अच्छा बताओ :-

(१) विद्या-गुरु सच्चे गुरु हैं या नहीं?

(२) सच्चे शास्त्र वीतरागता के पोषक होते हैं या राग के?

गृहकार्य

अध्यापक कथन – कल तुम्हें आज बताये गये प्रश्नोत्तर लिखकर व याद करके लाना है।

आदर्श पाठ-योजना ३
(मैं कौन हूँ?)

स्थान - श्री जैन विद्यार्थी गृह, सोनगढ़

कक्षा - प्रवेशिका तृतीय खण्ड

प्रकरण - "मैं कौन हूँ?"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य - आत्मज्ञान संबंधी जानकारी देना।

(ख) विशेष उद्देश्य - अपनी आत्मा के संबंध में विशेष जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करना एवं "मैं" के संबंध में प्रचलित गलत धारणाओं का निराकरण करना।

पूर्व-ज्ञान

छात्रों को जीव तत्त्व की सामान्य जानकारी है। वे बालबोध पाठमाला भाग १ में 'जीव-अजीव', बालबोध पाठमाला भाग २ में 'षट् द्रव्य', वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १ में 'सात तत्त्व' एवं वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २ में 'सात तत्त्वों संबंधी भूल' नामक पाठों में जीव तत्त्व के संबंध में बहुत कुछ सीख चुके हैं।

सहायकसामग्री

पाठ्यपुस्तक।

उद्देश्य कथन

आज हम वस्तुतः "मैं कौन हूँ" अर्थात् आत्मा क्या है? यह समझने का प्रयत्न करेंगे।

प्रस्तुतिकरण

इस पाठ में 'स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर' वाले सिद्धान्त का विशेष ध्यान रखा जायगा। अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनों में पढ़ाया जायगा। प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियों में विभाजित होगा। प्रत्येक अन्विति में निम्नलिखित सोपान होंगे :-

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) विचार-विश्लेषण
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) सारांश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

" 'मैं' शब्द का प्रयोग.....................पंडित भी नहीं हैं।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वयं गद्य वाचन विधि से अर्द्धविराम, पूर्ण विराम का ध्यान रखते हुए स्पष्ट आदर्श वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक सुविधानुसार एकाधिक छात्रों से अनुकरण वाचन करावेंगे तथा स्वयं या अन्य छात्रों से उसमें सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण

अन्विति में आये विचारों का विश्लेषण निम्नानुसार करेंगे :-

अध्यापक कथन - अभी हमने पढ़ा कि प्रायः सभी सामान्य जन 'मैं' शब्द का प्रयोग तो करते हैं पर उसका सही अर्थ नहीं जानते। बाह्य बालकपनं आदि संयोगी पर्यायों को ही 'मैं' मान लेते हैं।

जब हम विचार करते हैं तो पता चलता है कि 'मैं' - बालक, वृद्ध, पंडित, सेठ कुछ भी नहीं हूँ। एक बात सोचिये - यदि ऐसा मान लिया जाय कि 'मैं' बालक हूँ, तो बताइये बालक आप कब तक रहेंगे? दस-बीस वर्ष तक ही, उसके बाद आप बालक तो रहेंगे नहीं। तो क्या फिर आप नहीं रहेंगे? रहेंगे। अवश्य रहेंगे। इसी प्रकार कोई कहे कि 'मैं' जवान हूँ, तो क्या दस-बीस वर्ष पहले भी वे जवान थे? यदि नहीं, तो वे तो थे। अतः यह स्पष्ट है कि बालकपन और जवानी तो शरीर से सम्बन्धित हैं और 'मैं' आत्मा को कहते हैं। आत्मा बालक, जवान और बुड्ढ़ा नहीं होता। अतः 'मैं' बालक हूँ, वृद्ध हूँ, यह मानना कल्पना ही है।

कुछ लोग कहते हैं कि 'मैं' सेठ हूँ या पंडित हूँ और भी कई प्रकार की कल्पनायें करते हैं। पर जरा सोचिये – सेठ तो पैसे के संयोग से कहे जाते हैं, पैसा नहीं रहेगा तो आप सेठ तो नहीं रहेंगे पर आप तो रहेंगे न। फिर आप सेठ कैसे हो सकते हैं? इसी प्रकार शास्त्रों का विशेष ज्ञान होने से लोग पंडित कहलाते हैं पर जब वे बालक थे, शास्त्र ज्ञान नहीं था, तब क्या वे नहीं थे? थे। अतः आत्मा को सेठ या पंडित कहना भी उपचार ही है। वस्तुतः आत्मा न सेठ है, न पंडित।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. "मैं बालक या जवान हूँ" – क्या यह मानना ठीक है?	१. नहीं, क्योंकि बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थायें हैं और 'मैं' आत्मा हूँ।
२. "मैं सेठ हूँ – इस मान्यता में क्या भूल है?	२. सेठ तो धन के संयोग से कहा जाता है। धन के बिना भी तो आत्मा रहता है, अतः आत्मा सेठ नहीं।
३. "मैं पंडित हूँ" – यह तो ठीक है न?	३. नहीं। पंडिताई तो शास्त्र ज्ञान का नाम है। शास्त्र ज्ञान के बिना भी आत्मा की सत्ता देखी जाती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य–वाक्य	प्रश्न	उत्तर
बालकपन और जवानी शरीर की अस्थायें हैं।	१. बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थायें हैं या नहीं?	१. हैं।
	२. बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थायें हैं या आत्मा की?	२. शरीर की।
	३. बालकपन और जवानी किसकी अवस्थायें हैं?	३. शरीर की।
	४. शरीर की अवस्थायें क्या हैं?	४. बालकपन और जवानी।

निष्कर्ष – बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थायें हैं और "मैं" आत्मा हूँ, अतः "मैं" बालक और जवान नहीं हो सकता।

नोट : (१) इसी प्रकार सेठ और पंडित वाला प्रश्न भी समझाया जावेगा।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – आज हमने यह निर्णय किया कि :-

(१) "मैं" बालक, जवान और वृद्ध नहीं, क्योंकि ये शरीर के धर्म हैं और "मैं" शरीर से भिन्न चेतन आत्मा हूँ।

(२) "मैं" सेठ भी नहीं हूँ, क्योंकि सेठ तो धन के संयोग से कहा जाता है। "मैं" तो असंयोगी आत्मा हूँ।

(३) "मैं" पंडित भी नहीं हूँ, क्योंकि पंडित तो शास्त्रों संबंधी क्षयोपशम ज्ञान के कारण कहा जाता है। "मैं" तो निगोद जैसी अल्पज्ञान वाली दशा और सिद्ध जैसी पूर्ण ज्ञान वाली दशा में रहने वाला हूँ।

द्वितीय अन्विति

"तब प्रश्न उठता है कि ....यह अति आवश्यक है।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

विचार विश्लेषण – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – अभी हमने पढ़ा कि आत्मा क्या है – इस विषय पर हमने कभी गंभीरता से सोचा नहीं। यही कारण है कि "मैं कौन हूँ" का उत्तर हमें प्राप्त नहीं हो सका है। हम 'पर' की खोज में अपने को भूल रहे हैं। कैसी विचित्र बात है कि खोजने वाला खोजने वाले को खोज रहा है और खोजने वाले को खोजने वाला नहीं मिल रहा है।

आत्मा तो मन, वचन, काय, मोह, राग–द्वेष, परोन्मुखी बुद्धि से अलग तीन काल रहने वाला शुद्ध ज्ञानानन्द स्वभावी स्थायी वस्तु है।

जब आदमी के दिल में संकुचित भावनाएँ आ जाती हैं तो वह विशालता को भूलने लगता है। जिस प्रकार प्रान्त में अपनत्व की तीव्रता आते ही देश का अपनत्व कम हो जाता है या दब जाता है,

उसी प्रकार जब तक आत्मा की पर्याय में एकत्व बुद्धि रहती है तब तक आत्मा द्रव्य-दृष्टि से ओझल रहता है। जैसे देश के प्रति अगाढ़ राष्ट्रीयता के लिए "मैं भारतीय हूँ" - यह अनुभूति प्रबल होना जरूरी है, उसी प्रकार आत्मानुभूति के लिए "मैं आत्म-द्रव्य हूँ" - यह दृढ़ धारणा होना बहुत जरूरी है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. आत्मा कैसा है?	१. (क) आत्मा मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष, परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न है। (ख) त्रैकालिक अनादि, अनन्त ज्ञानानन्द स्वभावी ध्रुव तत्त्व है।
२. "मैं कौन हूँ" का सही उत्तर क्यों प्राप्त नहीं होता?	२. हम गंभीरता से विचार नहीं करते।
३. "मैं कौन हूँ" - का सही उत्तर पाने के लिए क्या आवश्यक है?	३. "मैं आत्मा हूँ" - यह अनुभूति प्रबल होना आवश्यक है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
आत्मा मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एवं परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न है।	१. आत्मा मन, वचन, काय, मोह राग-द्वेष एवं परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न है या नहीं?	१. है।
	२. मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एवं परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न आत्मा है या शरीर?	२. आत्मा।
	३. मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एवं परलक्ष्यी बुद्धि से कौन भिन्न है?	३. आत्मा।
	४. आत्मा किस-किस से भिन्न है?	४. मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एवं परलक्ष्यी बुद्धि से।

नोट : इसी प्रकार आगत अन्य तथ्यों को भी समझाया जावेगा।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – अभी हमने यह समझा कि आत्मा तो शरीर, मन, वाणी, मोह, राग-द्वेष, परलक्ष्यी ज्ञान से भिन्न एक त्रैकालिक शुद्ध ज्ञानानन्द स्वभावी ध्रुव तत्त्व है तथा उसकी प्राप्ति "मैं कौन हूँ" की प्रबल जिज्ञासा हो तभी संभव है।

समापन

अध्यापक कथन – अभी हमने जो पाठ पढ़ा वह आप लोगों की समझ में आ ही गया होगा। अच्छा बताओ :-

(१) "मैं बालक हूँ" ऐसा मानने में क्या आपत्ति है?

(२) "मैं" मन वचन काय से भिन्न हूँ या अभिन्न?

गृहकार्य

अध्यापक कथन – आज समझाये गये प्रश्नोत्तरों को कल तैयार करके लाना है तथा पठित पाठ का भावार्थ लिख कर लाना है।

द्वितीय दिन

स्थान – श्री जैन विद्यार्थी गृह, सोनगढ़

कक्षा – प्रवेशिका तृतीय खण्ड

प्रकरण – "मैं कौन हूँ?"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – पूर्ववत्।

(ख) विशेष उद्देश्य – आत्मज्ञान की दिशा की ओर संकेत करना।

पूर्व-ज्ञान – पूर्ववत्।

सहायक सामग्री – पूर्ववत्।

उद्देश्य कथन

आज हम यह समझेंगे कि आत्मानुभव कैसे किया जा सकता है?

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी दो अन्वितियों में समाप्त होगा। द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से 'पूर्व-पाठ मूल्यांकन' नामक एक सोपान और होगा। बाकी सब सोपान पूर्ववत् रहेंगे। द्वितीय अन्विति में पूर्व-पाठ मूल्यांकन नामक सोपान को छोड़कर बाकी सब सोपान पूर्ववत् रहेंगे।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

पूर्वपठित पाठ को छात्रों ने तैयार किया या नहीं, यह जानने के लिए अध्यापक निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न करेंगे :-

(१) "मैं कौन हूँ" या "आत्मा कैसा है"?

(२) "मैं पंडित हूँ" - यह मानना ठीक है या नहीं?

(३) आत्मा को समझने के लिए क्या आवश्यक है?

प्रथम अन्विति

"हाँ! तो स्त्री, पुत्र......................भी नहीं हो सकती हैं।"

आदर्श वाचन - पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन - पूर्ववत्।

विचार विश्लेषण -

अध्यापक कथन - अभी हमने पढ़ा, उसमें निम्न चार बातें स्पष्ट हुईं :-

(१) आत्मा स्पष्ट पर-संयोगी पदार्थों - जैसे स्त्री, पुत्र, मकान, रुपया-पैसा और शरीर से भिन्न है।

(२) आत्मा में उत्पन्न होने वाले मोह, राग-द्वेष आदि विकारी भाव भी आत्मा की सीमा में नहीं आते।

(३) परलक्ष्यी क्षयोपशम ज्ञान भी पूर्ण ज्ञानस्वभावी आत्मा नहीं है।

(४) ज्ञान की पूर्ण विकसित केवलज्ञान पर्याय भी पर्याय होने से त्रिकाली ध्रुव रूप आत्मतत्त्व नहीं हो सकती।

वस्तुतः आत्मा तो अन्तरोन्मुखी दृष्टि का विषय है। वह तो अनुभवगम्य है। उसे विकल्पों में नहीं बांधा जा सकता है। उसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्णादि न होने से उसे इन्द्रियों से भी नहीं जाना जा सकता।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. आत्मतत्त्व किस-किस से भिन्न हैं?	१. (क) स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि संयोगी पदार्थों से। (ख) आत्मा में उत्पन्न होने वाले मोह, राग-द्वेष आदि विकारी भावों से। (ग) परलक्ष्यी क्षयोपशम ज्ञान से। (घ) एक समय वाली केवलज्ञान पर्याय से।
२. यह आत्मा कैसे जाना जा सकता है?	२. (क) अन्तरोन्मुखी दृष्टि से। (ख) आत्मानुभव से।
३. यह आत्मा कैसे प्राप्त नहीं किया जा सकता?	३. (क) वहिर्लक्ष्यी दौड़-धूप से। (ख) मानसिक विकल्पों से। (ग) पंचेन्द्रियों से।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि संयोगी पदार्थों से भिन्न	१. आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि पदार्थों से भिन्न है या नहीं?	१. है।
	२. आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि संयोगी पदार्थों से भिन्न है या अभिन्न?	२. भिन्न।
	३. आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि संयोगी पदार्थों से कैसा है?	३. भिन्न।
	४. आत्मतत्त्व कैसा है?	४. आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि संयोगी पदार्थों से भिन्न है।

नोट : इसी प्रकार सभी प्रश्नोंत्तरों को तैयार कराया जायेगा।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – अब हम इस निर्णय पर पहुँचे कि आत्मा शरीरादि पर-संयोगों से, मोहादि संयोगी भावों से, क्षयोपशम ज्ञानादि से एवं क्षायिक भाव रूप पर्यायों से भी भिन्न त्रैकालिक वस्तु है तथा उसे बाहरी क्रियाकाण्ड से, इन्द्रियों एवं मानसिक विकल्पों से नहीं पाया जा सकता है।

द्वितीय अन्विति

"यह अनुभवगम्य ....दशा नहीं ला सकती है।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

विचार विश्लेषण –

अध्यापक कथन – अभी हमने पढ़ा, उसमें निम्नलिखित तथ्य निरूपित हैं :-

(१) पर भावों से भिन्नता और ज्ञानादि भावों से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है।

(२) अनादि अनन्त गुणों की अखण्डता ही आत्मा की एकता है।

(३) पर से कुछ चाहिये नहीं और न पर को कुछ देने लायक इसमें है, यही आत्मा की पूर्णता है।

(४) आत्मानुभूति को प्राप्त करने का प्रारम्भिक उपाय तत्त्वविचार है।

(५) वह आत्मानुभूति अपनी प्रारंभिक भूमिका तत्त्वविचार का अभाव करती हुई प्रगट होती है।

(६) आत्मा ज्ञान का विषय है, वाणी और लेखनी की पकड़ से परे हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. आत्मा की शुद्धता क्या है?	१. पर भावों से भिन्नता और ज्ञानादि भावों से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है।
२. आत्मा की एकता क्या है?	२. अनादि अनन्त गुणों की अखण्डता ही आत्मा की एकता है।
३. आत्मा की पूर्णता क्या है?	३. पर से कुछ चाहिये नहीं और न पर को कुछ देने लायक इसमें है, यही आत्मा की पूर्णता है।
४. आत्मानुभूति प्राप्त करने का प्रारंभिक उपाय क्या है?	४. आत्मानुभूति प्राप्त करने का प्रारंभिक उपाय तत्त्वविचार है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
पर भावों से भिन्नता और ज्ञानादि भावों से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है।	१. पर भावों से भिन्नता और ज्ञानादि भावों से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है या नहीं?	१. है।
	२. पर भावों से भिन्नता और ज्ञानादि भावों से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है या अशुद्धता या एकता?	२. शुद्धता।
	३. आत्मा की पर भावों से भिन्नता और ज्ञानादि भावों से अभिन्नता क्या है?	३. शुद्धता।
	४. आत्मा की शुद्धता क्या है?	४. पर भावों से भिन्नता और ज्ञानादि भावों से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है।

नोट : इसी प्रकार आगत सभी सिद्धान्त-वाक्यों को समझाया जावेगा।

सारांश कथन

सारांश कथन में उक्त तथ्यों को संक्षेप में दुहरा दिया जायेगा।

समापन

अध्यापक कथन – अभी हमने जो पढ़ा वह आप लोगों की समझ में आ गया होगा। अच्छा बताइये :-

(१) क्या आत्मा को वाणी से कहा जा सकता है?

(२) क्या आत्मा इन्द्रियों से जाना जा सकता है? यदि नहीं, तो क्यों?

गृहकार्य

अध्यापक कथन – आज समझाये गये सभी प्रश्नोत्तर तैयार करके लाना है। साथ ही ''मैं कौन हूँ?'' इस विषय पर एक निबन्ध लिख कर लाना है और ध्यान रखो कि आने वाले शनिवार को अपनी छात्र-हितकारिणी सभा में ''मैं कौन हूँ?'' इस विषय पर ही भाषण व कवितायें होंगी। जो भी छात्र बोलना चाहें – मंत्री, छात्र-हितकारिणी सभा को अपना नाम लिखवा देवें।

●

पाठ निर्देश

वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं में आये हुये तीन पाठों की आदर्श पाठ-योजनायें प्रस्तुत की। आगे शेष पाठों के पाठ-निर्देश दिये जा रहे हैं। पाठ-निर्देश का ध्यान रखते हुए अध्यापक बंधुओं को प्रत्येक पाठ पढ़ाने के पूर्व उपरोक्त पाठ-योजनाओं के अनुरूप पाठ-योजना तैयार करनी है। ध्यान रहे किसी भी पाठ की पाठ-योजना तैयार करते समय तत्संबंधित पाठ-निर्देश में दिये निर्देशों की अवहेलना नहीं की जानी चाहिये।

पाठ-निर्देश १

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १ - पाठ २)

"आत्मा और परमात्मा"

आवश्यक निर्देश :-

(१) मुनिराज योगीन्दु का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना। परमात्मप्रकाश और योगसार मूल ग्रन्थों को पढ़ने की प्रेरणा देना, जिनके आधार पर यह पाठ लिखा गया है।

(२) संवाद काल्पनिक है, यह स्पष्ट करना।

(३) आत्मा के भेद-प्रभेदों को निम्नलिखित चार्ट से स्पष्ट करना :-

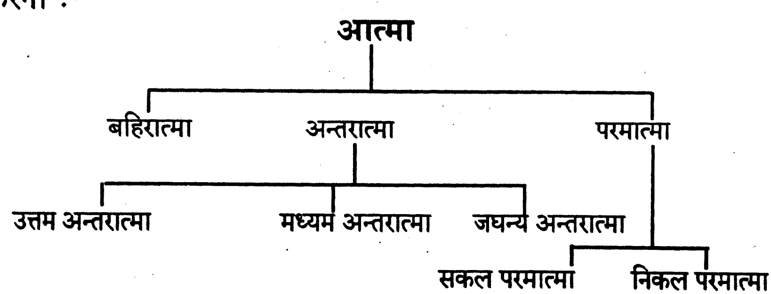

(४) आत्मा और आत्मा के समस्त भेद-प्रभेदों की परिभाषायें वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा तैयार कराना।

(५) लम्बी परिभाषाओं को टुकड़ों में तैयार करावें। जैसे :-

प्रश्न – शरीर को आत्मा मानने वाला कौन है?

उत्तर – बहिरात्मा।

प्रश्न – पर-पदार्थ में अपनापन मानने वाला कौन है?

उत्तर – बहिरात्मा।

प्रश्न – रागादि में अपनापन मानने वाला कौन है?

उत्तर – बहिरात्मा।

प्रश्न – आत्मा को न जानने वाला कौन है?

उत्तर – बहिरात्मा।

नोट - चारों परिभाषायें पृथक्-पृथक् वस्तुनिष्ठ पद्धति के चारों सोपानों द्वारा तैयार कराके उन्हें एकत्र करके पूरी परिभाषा स्पष्ट कर दें। इस प्रकार बहिरात्मा की परिभाषा निम्नानुसार हुई :-

"शरीर को आत्मा तथा अन्य पदार्थों और रागादि में अपनापन मानने वाला या आत्मा का स्वभाव न जानने वाला मिथ्यादृष्टि जीव बहिरात्मा है।"

पाठ-निर्देश २

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १ - पाठ ३)

"सात तत्त्व"

आवश्यक निर्देश :-

(१) आचार्य उमास्वामी का जिज्ञासोत्पादक ढंग से परिचय देना तथा तत्त्वार्थ सूत्र पढ़ने की प्रेरणा देना जिसके आधार पर यह पाठ लिखा गया है।

(२) पाठ में आगत सभी परिभाषाओं को वस्तुनिष्ठ पद्धति द्वारा तैयार कराया जावे।

(३) "प्रयोजनभूत तत्त्व" और "द्रव्य दृष्टि" को विशेष स्पष्ट करना एवं वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(४) आश्रवादि तत्त्वों को द्रव्य और भाव के भेद से स्पष्ट करना चाहिये।

(५) पुण्य और पाप का अन्तर्भाव आश्रव और बन्ध में होता है। इस तथ्य को निम्न चार्ट द्वारा समझाया जाना चाहिये :-

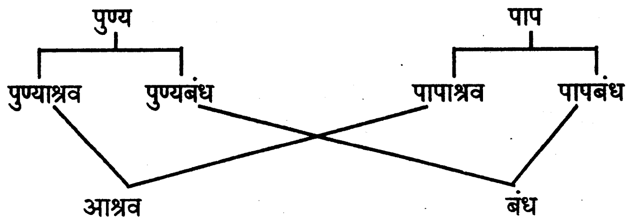

(६) तत्त्व के भेद-प्रभेद स्पष्ट करने के लिये निम्न चार्ट का प्रयोग करना चाहिये :-

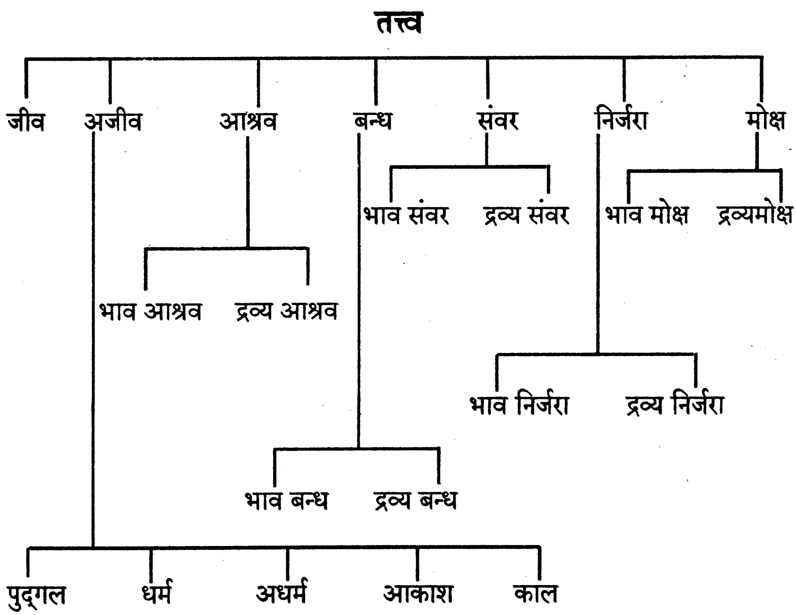

पाठ–निर्देश ३

(वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग १ – पाठ ४)

"षट् आवश्यक"

आवश्यक निर्देश :–

(१) निश्चय आवश्यक और व्यवहार आवश्यक की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना तथा प्रत्येक आवश्यक में निश्चय व्यवहार का भेद स्पष्ट करना।

(२) निश्चय और व्यवहार आवश्यकों का भेद स्पष्ट करते समय निम्नानुसार ध्यान दिया जाना चाहिये :–

निश्चय आवश्यक	व्यवहार आवश्यक
(क) शुद्धभाव	शुभ भाव
(ख) बन्ध का अभाव	पुण्य बन्ध
(ग) ज्ञानी के ही होते हैं।	ज्ञानी के तो होते ही हैं, पर अज्ञानी के भी देवपूजादि के शुभ भाव होते हैं।

(३) व्यवहार आवश्यक को पुण्य बन्ध का कारण कहने से प्रायः लोग यह आशंका व्यक्त करते हैं कि ऐसा कहोगे तो लोग देवपूजनादि छोड़ देंगे। अतः इस प्रश्न को स्वयं उठाकर समुचित समाधान निम्नानुसार करना चाहिये :–

उपदेश तो ऊँचा चढ़ने को दिया जाता है, नीचे गिरने को नहीं। अतः जो जीव देवपूजनादि के शुभ भाव छोड़कर विषय कषायादिक अशुभ भावों में प्रवर्तेंगे, उनका तो और भी बुरा होगा अर्थात् पाप बन्ध होगा। अतः देवपूजनादि शुभ भावों को छोड़कर अशुभ भावों में जाना ठीक नहीं है। यदि देवपूजनादि के शुभ भाव छोड़कर शुद्ध भाव में रह सकें तो बहुत ठीक अन्यथा अशुभ भाव में जावेंगे तो पाप बंध करेंगे। यहाँ शुभ भाव को पुण्य बंध का कारण कहा है वह तो सत्य का ज्ञान कराने के लिये कहा है – अशुभ भाव में जाने के लिये नहीं।

(४) आवश्यक के भेदों–प्रभेदों को स्पष्ट करने के लिये अगले पृष्ठ पर दिये गये चार्ट को प्रयोग में लाना चाहिये।

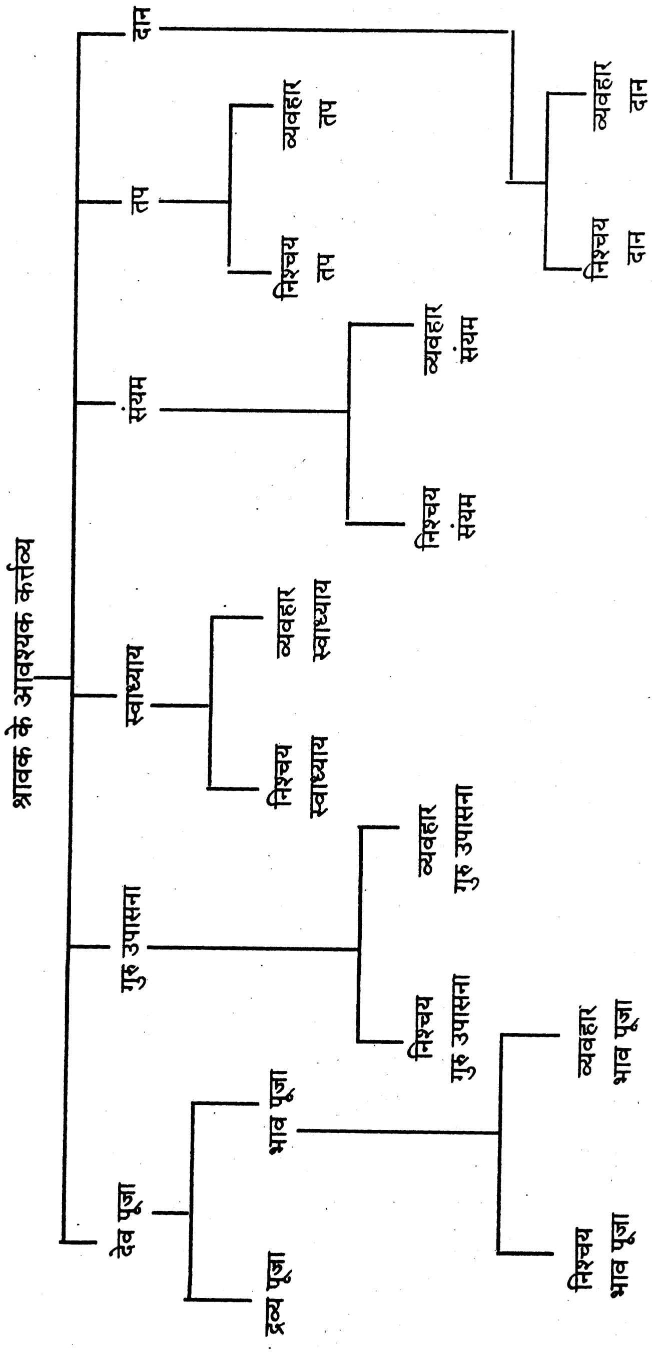

नोट :– ध्यान रहे देव पूजा को छोड़कर अन्य आवश्यकों में द्रव्य और भाव का भेद नहीं किया गया है।

पाठ–निर्देश ४

(वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग १ – पाठ ५)

"कर्म"

आवश्यक निर्देश :–

(१) सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना। सिद्धान्त चक्रवर्ती शब्द का अर्थ स्पष्ट करना तथा गोम्मटसार कर्मकाण्ड पढ़ने की प्रेरणा देना – जिसके आधार पर यह पाठ लिखा गया है।

(२) संवाद काल्पनिक है – यह स्पष्ट करना।

(३) "कर्म आत्मा को बलात् विकार नहीं कराते, किन्तु जब आत्मा स्वयं विकार रूप परिणमे तब कर्म का उदय उसमें निमित्त कहा जाता है।" उक्त तथ्य भलीभाँति स्पष्ट करना।

(४) निमित्त कारण की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा तैयार कराना।

(५) निमित्त और उपादान की स्थिति को निम्नानुसार स्पष्ट करना चाहिये :–

(क) कोई कार्य होता है तो उसका कारण अवश्य होता है। जो द्रव्य स्वयं कार्यरूप परिणमे – उसे उपादान (असली) कारण कहते हैं। पर जो पदार्थ स्वयं कार्यरूप तो परिणमे नहीं, किन्तु कार्य की उत्पत्ति में अनुकूल होने का जिस पर आरोप आ सके – उसे निमित्त कारण कहते हैं। जैसे – घड़ा एक कार्य है। मिट्टी घड़े रूप स्वयं परिणमित होती है – अतः वह मिट्टी घड़े रूपी कार्य की उपादान कारण हुई और कुम्हार चक्र दण्ड आदि घड़े रूपी कार्य के अनुकूल परद्रव्य हैं – अतः उन्हें निमित्त कारण कहा जाता है।

(ख) घड़े के उदाहरण के बाद स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर के सिद्धान्तानुसार आत्मा सम्बन्धी उदाहरण से निमित्त उपादान को स्पष्ट करना चाहिये। जैसे – आत्मा स्वयं मोह–राग–द्वेष रूप परिणमित होता है, अतः आत्मा मोह–राग–द्वेष रूप कार्य का उपादान कारण हुआ और कर्म का उदय उसमें अनुकूल परद्रव्य है, अतः वह निमित्त कारण हुआ।

(६) उक्त तत्त्व को वस्तुनिष्ठ पद्धति से स्पष्ट करना चाहिये, जिससे छात्रों को स्पष्ट हो जाय। जैसे :-

प्रश्न	उत्तर
१. आत्मा दुःखी क्यों है? कर्म के कारण या स्वयं की भूल से?	१. स्वयं की भूल से।
२. घड़े का निमित्त कारण कौन है? मिट्टी या कुम्हार?	२. कुम्हार।
३. कपड़े का उपादान कारण कौन है? सूत या बुनकर?	३. सूत।
४. राग का उपादान कारण क्या है? कर्म या आत्मा?	४. आत्मा।

(७) द्रव्य कर्म और भाव कर्म के लक्षण वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों से तैयार कराने के बाद निम्नानुसार मूल्यांकन प्रश्नों से वस्तु को स्पष्ट करना चाहिये :-

(क) "मेरी बात सुनकर उसे क्रोध आ गया।" इस वाक्य में क्रोध द्रव्य कर्म है या भाव कर्म? (भाव कर्म)

(ख) "जो दूसरों के अध्ययन में बाधा पहुँचाते हैं, उन्हें ज्ञानावरणी कर्म का बन्ध होता है।" उक्त वाक्य में प्रयुक्त ज्ञानावरणी कर्म द्रव्य कर्म है या भाव कर्म? (द्रव्य कर्म)

(८) आठ कर्मों में घाति–अघाति का विभाग निम्नानुसार चार्ट द्वारा समझाया जाय :-

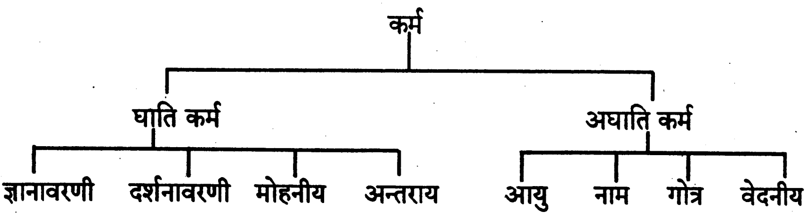

(९) आठ कर्मों की परिभाषायें भी वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा तैयार कराई जावें।

पाठ-निर्देश ५

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १ - पाठ ६)

''रक्षाबंधन''

आवश्यक निर्देश :-

(१) सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना। सिद्धान्त चक्रवर्ती शब्द का अर्थ स्पष्ट करना तथा गोम्मटसार कर्मकाण्ड पढ़ने की प्रेरणा देना - जिसके आधार पर यह पाठ लिखा गया है।

(२) कथा में आगत निम्न प्रसंगों पर विशेष बल व ध्यान दिया जाना चाहिये :-

(क) जिस प्रकार सांप को दूध पिलाने से विष ही बनता है, उसी प्रकार तीव्र कषायी अज्ञानी जीवों से की गई तत्त्वचर्चा उनके क्रोध को ही बढ़ाती है।

(ख) प्रत्येक आत्मा को चाहिये कि वह जगत के प्रपंचों से दूर रह कर तत्त्वाभ्यास में ही प्रयत्नशील रहे। यही संसार बन्धन से रक्षा का उपाय है।

(३) निम्न प्रश्नोत्तर को विशेष स्पष्ट किया जावे :-

प्रश्न :- ''विष्णुकुमार ने बावनिया का भेष बनाया श्रुतसागर ने मुनियों से विवाद किया।'' क्या उक्त क्रियायें मुनि की भूमिका में होना ठीक है?

उत्तर :- नहीं। यदि ठीक होतीं तो उन्हें मुनिपद छोड़ना एवं प्रायश्चित लेना जैसे दण्ड क्यों लेने पड़ते?

''विष्णुकुमार मुनि ने मुनि पद में बावनिया वेष नहीं बनाया किन्तु मुनिपद छोड़कर ऐसा वेष बनाया।'' इस तथ्य की ओर विशेष ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

(४) रक्षाबन्धन कथा को अपने शब्दों में लिखने एवं अपनी भाषा में आकर्षक ढंग से बोलने का अभ्यास करना।

पाठ-निर्देश ६

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १ - पाठ ७)

"जम्बूस्वामी"

आवश्यक निर्देश :-

(१) कविवर पं. राजमलजी पाण्डे का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से दें तथा "जम्बूस्वामी चरित्र" को जिसके आधार पर यह पाठ लिखा गया है - पढ़ने की प्रेरणा दें।

(२) जम्बूस्वामी की कथा इस प्रकार प्रस्तुत करना जिससे छात्रों में अन्त तक उत्सुकता बनी रहे।

(३) पाठ पढ़ाते समय निम्नलिखित अंश पर विशेष ध्यान आकर्षित करना :-

"रागियों का राग ज्ञानियों को क्या प्रभावित करेगा? ज्ञान और वैराग्य की किरणें तो अज्ञान और राग का नाश करने में समर्थ होती हैं।"

(४) जम्बूस्वामी की कहानी अपने शब्दों में लिखने और आकर्षक ढंग से बोलने का अभ्यास कराना।

(५) उक्त पाठ से मिलने वाली शिक्षा की ओर ध्यान आकर्षित करना।

पाठ-निर्देश ७

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग १ - पाठ ८)

"बारह भावना"

आवश्यक निर्देश :-

(१) प्रस्तुत बारह भावनाओं के लेखक पं. जयचन्दजी छाबड़ा का जिज्ञासोत्प[illegible] ढंग से परिचय देना।

(२) बारह भावना नाम से प्रचलित वैराग्योत्पादक एवं तत्त्वज्ञानमय विशाल जैन साहित्य का सामान्य परिचय देना एवं अन्य कवियों द्वारा लिखित बारह भावनाओं को पढ़ने की प्रेरणा देना। जैसे - छहढाला की पाँचवी ढाल में वर्णित बारह भावनाएँ आदि।

(३) निम्नलिखित भावनाओं का अर्थ समझाते समय विशेष सावधान रहना चाहिये :-

अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, संवर, बोधिदुर्लभ।

(४) प्रत्येक भावना में आये भाव को स्पष्ट करना चाहिये। शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ या केन्द्रीय भाव पर विशेष ध्यान देना है।

(५) भावनाओं के विशिष्ट अर्थ को प्रश्नोत्तर में तैयार कर वस्तुनिष्ठ पद्धति के यथासम्भव रूपों से तैयार कराया जावेगा। जैसे :-

प्रश्न	उत्तर
१. द्रव्य दृष्टि से सर्व पदार्थ कैसे हैं?	१. स्थिर।
२. पर्याय दृष्टि से पदार्थ कैसे हैं?	२. अस्थिर।
३. उक्त चिन्तवन किस भावना में किया जाता है?	३. अनित्य भावना में।
४. निश्चय से शरण कौन है?	४. शुद्धात्मा।
५. व्यवहार से शरण कौन है?	५. पंच परमेष्ठी।
६. उक्त चिन्तवन किस भावना में किया जाता है?	६. अशरण भावना में।

नोट : इसी प्रकार आगे की भावनाओं को भी स्पष्ट करना चाहिये।

पाठ-निर्देश ८

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २ - पाठ १)

"उपासना"

आवश्यक निर्देश :-

(१) पूजन के छन्दों व जयमाला का सामान्यार्थ बताते समय शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ और केन्द्रीय भाव पर ध्यान देना चाहिये।

(२) पूजन में आये विशिष्ट भावों को प्रश्नोत्तरों में तैयार कराकर वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना। जैसे :-

प्रश्न - स्थापना में किसको नमस्कार किया गया है?

उत्तर - सच्चे देव-शास्त्र-गुरु को।

प्रश्न – यह जीव पर की ममता में क्यों अटका है?

उत्तर – आत्मा में विद्यमान अनन्त गुणों के वैभव को भूलकर।

प्रश्न – मन की झूठी वृत्ति क्या है?

उत्तर – पर-पदार्थों को अनुकूल व प्रतिकूल मानना ही मन की झूठी वृत्ति है।

नोट : इसी प्रकार के प्रश्नोत्तर प्रत्येक छन्द में से व जयमाला में से तैयार करके समझाना चाहिये।

(३) निम्न छन्दों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये :-

चन्दन, नैवेद्य, दीप, धूप, अर्घ।

(४) जयमाला में वर्णित बारह भावनाओं में से निम्नलिखित भावनाओं पर विशेष ध्यान दिया जाय :-

अनित्य, संसार, अन्यत्व, अशुचि, संवर और बोधिदुर्लभ।

(५) पूजन कंठस्थ करने एवं प्रतिदिन करने की प्रेरणा देना।

पाठ–निर्देश ९

(वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग २ – पाठ ३)

"सात तत्त्वों सम्बन्धी भूल"

आवश्यक निर्देश :-

(१) यह पाठ पं. दौलतरामजी द्वारा लिखित छहढाला की दूसरी ढाल के आधार पर लिखा गया है। अध्यापक को पं. दौलतरामजी और उनकी कृति छहढाला का सामान्य परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना है एवं छहढाला के अध्ययन की प्रेरणा देनी है।

(२) सात तत्त्वों के सम्बन्ध में हुई भूलों के संदर्भ में इस प्रकार भी प्रायः प्रयोग किया जाता है कि 'आश्रव की भूल' बताइये। भूल तो जीव ही करता है पर जिस तत्त्व के सम्बन्ध में भूल करता है, व्यावहारिक भाषा में उस तत्त्व सम्बन्धी भूल कही जाती है। इस तथ्य को छात्रों के सामने स्पष्ट कर देना चाहिये।

(३) सातों तत्त्वों सम्बन्धी भूलों को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार करना चाहिये।

(४) जीव और अजीव तत्त्व के सम्बन्ध में की गई भूलों को समझाते समय निम्न सूत्र-वाक्य को ध्यान में रखना चाहिये :-

जीव को अजीव मानना जीव तत्त्व सम्बन्धी भूल है और अजीव को जीव मानना अजीव तत्त्व सम्बन्धी भूल है। जैसे – नीबू को आम माना तो हमने नीबू के सम्बन्ध में गलती की क्योंकि आम तो वहाँ है ही नहीं, नीबू को ही गलत समझ लिया गया है। इसी प्रकार आम को नीबू माना तो आम के सम्बन्ध में गलती हुई।

इसी प्रकार जीव और अजीव के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये जैसे – ''मैं काला हूँ'' यह मानना जीव तत्त्व सम्बन्धी भूल है, क्योंकि ''मैं'' आत्मा का वाचक है और ''काला'' शरीर का रंग है। ''मैं'' (जीव) को काला (अजीव) माना। अतः जीव तत्त्व सम्बन्धी भूल हुई।

इसी प्रकार – ''आँख देखती है'' – ऐसा मानना अजीव तत्त्व सम्बन्धी भूल है, क्योंकि ''आँख'' अजीव है और ''देखना'' जीव की क्रिया है। यहाँ अजीव को जीव माना – अतः अजीव तत्त्व सम्बन्धी भूल हुई।

नोट : इसी प्रकार के कई उदाहरणों से प्रश्नोत्तर कर करके जीव और अजीव तत्त्व सम्बन्धी भूल का ज्ञान कराना चाहिये।

(५) निम्नानुसार मूल्यांकन प्रश्नोत्तरों द्वारा छात्रों के ज्ञान की परीक्षा की जानी चाहिये :-

प्रश्न – शुभाशुभ राग को सुखकर मानना कौन से तत्त्व सम्बन्धी भूल है?

✔	✘	✘
आश्रव,	बन्ध,	संवर

प्रश्न – शुभ बन्ध को अच्छा और अशुभ बन्ध को बुरा मानना कौन से तत्त्व सम्बन्धी भूल है?

✘	✔	✘
आश्रव,	बन्ध,	संवर

प्रश्न – आश्रव और बन्ध तत्त्व के सम्बन्ध में हुई भूलों में आपस में क्या अन्तर रहा?

उत्तर – बन्ध के कारण को अच्छा मानना आश्रव तत्त्व सम्बन्धी भूल है और शुभ बन्ध और उसके फल को अच्छा, मानना बन्ध तत्त्व सम्बन्धी भूल है।

प्रश्न – आत्मज्ञान और वैराग्य को दुखकर मानना कौन से तत्त्व सम्बन्धी भूल है?

✔ ✘ ✘
संवर तत्त्व, बन्ध तत्त्व, आश्रव तत्त्व

प्रश्न – इच्छाओं की पूर्ति में सुख मानना कौन से तत्त्व सम्बन्धी भूल है?

✔ ✘ ✘
निर्जरा, बन्ध, आश्रव

प्रश्न – संसार में सुख मानना कौन से तत्त्व सम्बन्धी भूल है?

✘ ✔ ✘
बन्ध, मोक्ष, निर्जरा

नोट : उक्त समस्त प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा तैयार कराया जाय।

पाठ–निर्देश १०

(वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग २ – पाठ ४)

"चार अनुयोग"

आवश्यक निर्देश :–

(१) यह पाठ पं. टोडरमलजी कृत मोक्षमार्ग प्रकाशक के अष्टम अध्याय के आधार पर लिखा गया है। अतः उनका परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से दिया जाय तथा मोक्षमार्गप्रकाशक का परिचय देकर उसके स्वाध्याय की प्रेरणा दी जावे।

(२) अनुयोग और चारों अनुयोगों की परिभाषायें वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराई जावें।

(३) किसी अनुयोग में किस बात की मुख्यता रहती है – इसे प्रश्नोत्तर के माध्यम से तैयार कराया जाय। जैसे :–

(क) प्रथमानुयोग में – कथाओं की।

(ख) करणानुयोग में – गणित की।

(ग) द्रव्यानुयोग में – अध्यात्म एवं न्याय शास्त्र की।

(घ) चरणानुयोग में – बाह्य क्रिया, सुभाषित और नीतिशास्त्र की।

(४) अनुयोगों के परस्पर अन्तर को भी इसी प्रकार प्रश्नोत्तरों के माध्यम से स्पष्ट किया जाना चाहिये।

(५) चारों अनुयोगों का ज्ञान – परिभाषाओं के अतिरिक्त इनकी वर्णन-पद्धति, प्रमुख-उद्देश्य, वर्णन की मुख्यता आदि से कराया जावेगा।

(६) गृहस्थों को समयसारादि अध्यात्म शास्त्र पढ़ने के निषेध की चर्चा चलती है। उस प्रकरण में उठने वाली शंकाओं को निम्नलिखित तर्क देकर समुचित समाधान करना चाहिये और अध्यात्म शास्त्र पढ़ने की विशेष प्रेरणा दी जानी चाहिये :-

(क) यदि गृहस्थों को समयसारादि पढ़ने की अनुमति नहीं है तो फिर पं. जयचन्दजी, पं. टोडरमलजी आदि विद्वानों ने समयसारादि ग्रन्थों की टीकायें की व उनके उद्धरणों के उल्लेख अपने मौलिक ग्रन्थों में किये। क्या यह सब बिना पढ़े सम्भव है?

(ख) उनमें सम्यग्दर्शन (आत्मानुभूति) प्राप्त करने का उपदेश है वह तो मुख्यतया गृहस्थों को ही है, क्योंकि सम्यग्दर्शन के बिना मुनि पद तो होता ही नहीं।

(७) कुछ लोग अध्यात्म शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन से ही आचरण भ्रष्ट होने की आशंका व्यक्त करते हैं। अतः तत्सम्बन्धी शंकाओं का निम्नानुसार समुचित समाधान किया जाना आवश्यक है :-

(क) द्रव्यानुयोग में आत्मज्ञान शून्य बाह्याचार का निषेध अवश्य किया है, पर साथ ही सर्वत्र स्वच्छन्द होने का निषेध भी किया है। अतः भ्रष्ट होने की शंका निर्मूल है, किन्तु सही बात जानने से सच्चा व्रती बनने की ही सम्भावना है।

(ख) यदि कोई अज्ञानी भ्रष्ट भी हो जाय तो यदि गधा मिश्री खाने से मर जाय तो सज्जन तो मिश्री खाना छोड़े नहीं, उसी प्रकार कोई

अज्ञानी अध्यात्म शास्त्र सुनकर भ्रष्ट हो जावे तो सभी मुमुक्षु तो अध्यात्म चर्चा बन्द करेंगे नहीं।

(ग) यदि कुछ अज्ञानियों की भ्रष्टता के डर से अध्यात्म शास्त्रों के अध्ययन–अध्यापन का निषेध करेंगे तो मूल मोक्षमार्ग का ही निषेध हो जावेगा।

पाठ–निर्देश ११

(वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग २ – पाठ ५)

"तीन लोक"

आवश्यक निर्देश :–

(१) यह पाठ आचार्य उमास्वामी द्वारा लिखित महाग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र के आधार पर लिखा गया है। अतः उनका परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना तथा तत्त्वार्थ सूत्र का परिचय देकर उसे पढ़ने की प्रेरणा करना।

(२) तीन लोक और जम्बू द्वीप की स्थिति नक्शा के माध्यम से समझाना चाहिये। बड़ा नक्शा उपलब्ध न हो तो बोर्ड पर आवश्यक रेखायें बनाकर प्रत्येक क्षेत्र, पर्वत, नदी आदि स्थानों एवं नरक–स्वर्ग की भी स्थिति स्पष्ट करना चाहिये।

(३) छात्रों से पर्वत, नदी आदि की जानकारी नक्शा या बोर्ड के माध्यम से मूल्यांकन प्रश्नोत्तरों में ज्ञात करना चाहिये। जैसे :–

(क) गंगा नदी कहाँ है?

(ख) नील पर्वत कौन सा है? आदि।

(४) जैन भूगोल और आधुनिक विज्ञान के खोजों के तुलनात्मक प्रश्नों में नहीं उलझना चाहिये।

(५) इस पाठ का उद्देश्य जैन भूगोल का सामान्य ज्ञान देना है। अतः इस पाठ पर विशेष बल देने की आवश्यकता नहीं। विशेष बल देने पर व्यर्थ के प्रश्न उठ खड़े होते हैं।

पाठ-निर्देश १२

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २ - पाठ ६)

"सप्त व्यसन"

आवश्यक निर्देश :-

(१) यह पाठ कविवर पं. बनारसीदासजी रचित समयसार नाटक के आधार पर लिखा गया है। अतः कविवर बनारसीदास का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना तथा समयसार नाटक का सामान्य परिचय देकर पढ़ने की प्रेरणा देना।

(२) सामान्य व्यसन की परिभाषा समझाकर फिर उसमें द्रव्य और भाव व्यसन ऐसे दो भेद करके समझाना एवं उन्हें वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(३) "द्रव्य व्यसन को व्यवहार व्यसन और भाव व्यसन को निश्चय व्यसन कहते हैं।" इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाना चाहिए।

(४) प्रत्येक भाव व्यसन की परिभाषा समझाते समय पं. बनारसीदास द्वारा लिखित छन्द की सम्बन्धित पंक्ति की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

(५) विषय को स्पष्ट करने के बाद तथा परिभाषा को तैयार करा देने के उपरान्त निम्नानुसार कुछ प्रश्नोत्तर करके विषय को हृदयंगम कराया जाय :-

प्रश्न – देह में मगन रहना कौन सा व्यसन है?

उत्तर – भाव मांस खाना।

प्रश्न – दूसरों की ही बुद्धि की जाँच में लगे रहना कौन सा व्यसन है?

उत्तर – द्रव्य शिकार व्यसन।

प्रश्न – मोह में पड़े रहकर आत्मस्वरूप से अनजान बने रहना कौन सा व्यसन है?

उत्तर – भाव मदिरापान।

पाठ-निर्देश १३

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २ - पाठ ७)

"अहिंसा : एक विवेचन"

आवश्यक निर्देश :-

(१) आचार्य अमृतचन्द्र का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना, क्योंकि उक्त पाठ उनके द्वारा रचित ग्रन्थ पुरुषार्थसिद्ध्युपाय के आधार पर लिखा गया है। पुरुषार्थसिद्ध्युपाय का भी सामान्य परिचय देकर उसे पढ़ने की प्रेरणा देना।

(२) हिंसा और अहिंसा को समझाने के पूर्व तत्सम्बन्धी प्रचलित लोक मान्यताओं का निराकरण करना चाहिये।

(३) "स्थूल से सूक्ष्म की ओर" वाला सिद्धान्त यहाँ विशेष रूप से प्रयोग में लाना चाहिये। हिंसा और अहिंसा का स्वरूप समझाते समय प्रथम शारीरिक दृष्टिकोण से, फिर मानसिक दृष्टिकोण से और उसके बाद आध्यात्मिक दृष्टिकोण से विवेचन करना चाहिये।

(४) पर के घात को ही हिंसा मानने वालों को समझाने के लिये प्रथम मारने के भाव (द्वेष भाव) को हिंसा सिद्ध करना चाहिये। द्वेष भाव में हिंसा सिद्ध हो जाने के उपरान्त राग भाव में हिंसा सिद्ध करना चाहिये। सामान्य राग को हिंसा सिद्ध करने में अशुभ राग सम्बन्धी उदाहरण पहले लें, क्योंकि इसके माध्यम से छात्र अपेक्षाकृत शीघ्रता से भाव ग्रहण करेंगे। अशुभ राग के हिंसा सिद्ध हो जाने के बाद ही शुभ राग को हिंसा सिद्ध करना चाहिये।

(५) द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा का भेद स्पष्ट करके भाव हिंसा के त्याग पर विशेष बल देना चाहिये।

(६) हिंसा और अहिंसा की परिभाषा, आचार्य अमृतचन्द्र के श्लोक के आधार पर वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों के माध्यम से अच्छी तरह तैयार करा देना चाहिये।

(७) हिंसा और अहिंसा की उक्त परिभाषा में उठने वाली प्रचलित शंकाओं को स्वयं उठाकर उनका समाधान किया जाना चाहिये।

(८) उक्त विषय को लेकर निबन्ध-प्रतियोगिता आयोजित की जानी चाहिये।

(९) निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण स्थलों की विशद् एवं स्पष्ट व्याख्या की जानी चाहिये :-

(क) "मोह-राग-द्वेष आदि विकारी भावों की उत्पत्ति होना ही हिंसा है और उन भावों की उत्पत्ति नहीं होना ही अहिंसा है।"

(ख) "मोह-राग-द्वेष भावों की उत्पत्ति होना हिंसा है और उन्हें धर्म मानना महा हिंसा है तथा रागादिक भावों की उत्पत्ति नहीं होना ही परम अहिंसा है और रागादिक भावों को धर्म नहीं मानना ही अहिंसा के सम्बन्ध में सच्ची समझ है।"

पाठ-निर्देश १४

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २ - पाठ ८)

"अष्टाह्निका महापर्व"

आवश्यक निर्देश :-

(१) लौकिक पर्व और धार्मिक पर्वों का अन्तर स्पष्ट करना और धार्मिक पर्वों में भी तात्कालिक और शाश्वत पर्वों का भेद स्पष्ट करके उनमें अष्टाह्निका पर्व का स्थान निश्चित करना। निम्नानुसार चार्ट द्वारा विषय स्पष्ट करना चाहिये :-

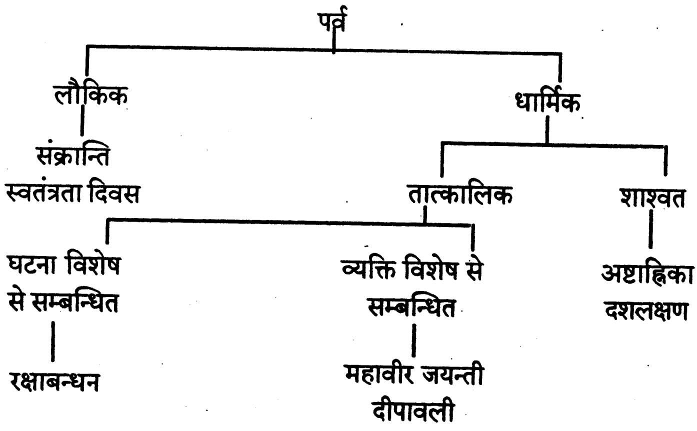

(२) सिद्धचक्र मण्डल विधान और उसके सही महत्त्व से छात्र को परिचित कराना।

(३) लोक में प्रचलित कथाओं के आधार पर सिद्धचक्र विधान पूजन का सम्बन्ध कुष्ठ रोग निवारण से जुड़ सा गया है – उक्त धारणा का समुचित तर्कसंगत निराकरण करके आत्मज्ञान प्राप्ति और आत्मशुद्धि प्राप्त करने की प्रेरणा देना चाहिये।

(५) पढ़ाते समय पाठ में आगत निम्नलिखित अंशों पर विशेष ध्यान देना चाहिये :-

(क) यह तो आत्मसाधना का पर्व है। धार्मिक पर्वों का प्रयोजन तो आत्मा में वीतराग भाव की वृद्धि करने का है।

(ख) आत्मा का कोढ़ तो मोह–राग–द्वेष है। जो आत्मा सिद्धों के सही स्वरूप को जानकर उन जैसी अपनी आत्मा को पहिचानकर उसमें ही लीन हो जावे तो जन्म–मरण और मोह–राग–द्वेष जैसे महारोग भी समाप्त हो जाते हैं।

(ग) सिद्धों की आराधना का सच्चा फल तो वीतराग भाव की वृद्धि होना है, क्योंकि वे स्वयं वीतराग हैं। सिद्धों का सच्चा भक्त उनसे लौकिक लाभ की चाह नहीं रखता है।

(घ) धार्मिक पर्व तो वीतरागता की वृद्धि करने वाले तथा संयम और साधना के पर्व हैं।

पाठ–निर्देश १५

(वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग २ – पाठ ९)

"भगवान पार्श्वनाथ"

आवश्यक निर्देश :-

(१) कविवर भूधरदास और उनके द्वारा लिखित पार्श्वपुराण का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना एवं पार्श्वपुराण पढ़ने की प्रेरणा देना, क्योंकि यह पाठ पार्श्वपुराण के आधार पर लिखा गया है।

(२) भगवान पार्श्वनाथ का सामान्य परिचय बोर्ड पर निम्नानुसार चार्ट बनाकर देना :-

नाम	-	पार्श्वनाथ
पिता का नाम	-	अश्वसेन
माता का नाम	-	वामादेवी
जन्म स्थान	-	वाराणसी
निर्वाण स्थान	-	सम्मेदशिखर

(३) भगवान पार्श्वनाथ की निर्वाण भूमि सम्मेदशिखर का परिचय देकर वहाँ की यात्रा करने की प्रेरणा देना।

(४) भगवान पार्श्वनाथ का सामान्य परिचय अपने शब्दों में लिखने और बोलने का अभ्यास कराना।

(५) पाठ पढ़ाते समय निम्न अंशों पर विशेष ध्यान देना :-

(क) पर राज्य-वैभव एवं पुण्य-सामग्री के लिये उनके हृदय में कोई स्थान न था। भोगों की लालसा उन्हें किंचित् भी न थी। वैभव की छाया में पलने पर भी वे जल में रहने वाले कमल के समान उससे अलिप्त ही थे।

(ख) साधारण देव-देवी तीन लोक के नाथ की क्या रक्षा करेंगे? वे तो अपनी आत्मसाधना द्वारा पूर्ण सुरक्षित थे ही, पर बात यह है कि उस समय धरणेन्द्र और पद्मावती को उनके उपसर्ग को दूर करने का विकल्प अवश्य आया था तथा उन्होंने यथाशक्य अपने विकल्प की पूर्ति भी की थी।

(ग) आत्मा ही अनन्त ज्ञान और सुख का भण्डार है। इसकी श्रद्धा किये बिना, इसे जाने बिना और इसमें लीन हुये बिना कोई भी कभी सच्चा सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

पाठ-निर्देश १६

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग २ - पाठ १०)

"देव-शास्त्र-गुरु स्तुति"

आवश्यक निर्देश :-

(१) देव-स्तुति का अर्थ बताते समय उसमें निर्दिष्ट भ्रान्तियों के सम्बन्ध में बोधगम्य प्रश्नोत्तर घर से तैयार करके लाना चाहिये और उन्हें वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये। जैसे :-

प्रश्न - आत्मा को चौरासी लाख योनियों में चक्कर क्यों काटने पड़ते हैं?

उत्तर - वीतरागी सर्वज्ञ परमात्मा की सही पहिचान न होने के कारण।

प्रश्न - भगवान की वीतरागता नहीं पहिचान पाने के कारण क्या गलतियाँ हुई?

उत्तर - (क) भगवान को करुणानिधि मानकर उनके भरोसे ही पड़ा रहा - स्वयं कुछ भी पुरुषार्थ नहीं किया।

(ख) यह नहीं जाना कि वे तो इच्छारहित स्व" में लीन और कृतकृत्य हैं। वे किसी के भले बुरे के कर्त्ता-धर्त्ता नहीं हैं।

प्रश्न - सर्वज्ञता को नहीं पहिचान पाने से क्या-क्या गलतियाँ हुईं?

उत्तर - सर्वज्ञ भगवान ने बताया कि यह जगत स्वयं परिणमनशील है। इसका कर्त्ता-धर्त्ता कोई नहीं। इस पर विश्वास नहीं किया और पर का कर्त्ता-धर्त्ता स्वयं को मानता रहा और अपना कर्त्ता-धर्त्ता स्वयं को मानता रहा और अपना कर्त्ता-धर्त्ता दूसरों को।

(२) जिनवाणी स्तुति का अर्थ बताते समय बोधगम्य और वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरों से यह बतलाना चाहिये कि जिनवाणी के मर्म को समझने में क्या-क्या गलतियाँ हुईं? जैसे :-

(क) जिनवाणी में अनेकान्तात्मक शुद्धात्मा का स्याद्वाद पद्धति से कथन है। उस पर तो ध्यान नहीं दिया और सारा समय विकथाओं में गंवाया।

(ख) यह भी नहीं समझ पाये कि जिनवाणी किसे कहते हैं और उसमें किस बात का वर्णन है।

(ग) अभी तक राग को धर्म और धर्म को रागमय मानते रहे हैं और शुभ करते-करते धर्म होगा, यह जानते रहे हैं।

(३) जिनवाणी के मर्म को समझने से क्या-क्या लाभ हैं? इस प्रश्न के उत्तर में बताना चाहिये कि जिनवाणी के मर्म को जानने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं :-

(क) धर्म राग में नहीं, वीतरागता में है।
राग में धर्म मानना महा अधर्म है।

(ख) जिनवाणी वीतरागता की ही पोषक होती है - राग की नहीं।

(४) गुरु स्तुति का अर्थ समझाते समय गुरुओं में विशेषतायें स्पष्ट करनी चाहिये। जैसे :-

सच्चे गुरु जिनवाणी के रहस्य को जानने वाले, दिन-रात आत्म-चिन्तनरत, मृदुभाषी, निर्विकारी नग्न दिगम्बर होते हैं।

(५) उक्त सभी तथ्यों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा अच्छी तरह तैयार कराना चाहिये।

(६) "देव-शास्त्र-गुरु स्तुति" कंठस्थ कराना चाहिये एवं उसके सामान्यार्थ को अपने शब्दों में व्यक्त करने की प्रेरणा देनी चाहिये।

पाठ-निर्देश १७

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३ - पाठ १)

"सिद्ध पूजा"

आवश्यक निर्देश :-

(१) पूजन के छन्दों व जयमाला का अर्थ बताते समय शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ और केन्द्रीय भाव पर ध्यान दिया जाना चाहिये।

(२) पूजन में आये विशिष्ट भावों को प्रश्नोत्तरों में तैयार करके वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये। जैसे :-

प्रश्न – भक्त सिद्धों की शरण में क्यों आया है?

उत्तर – सुख की चाह में सारे जग में घूमा पर सुख कहीं नहीं मिला, अतः अनन्त सुख प्राप्त करने वाले सिद्ध भगवान की शरण में आया है।

प्रश्न – "भोजन से जीवन चलता है" – क्या यह मान्यता ठीक है?

उत्तर – नहीं, क्योंकि नरकों में भोजन बिना जीवन चलता है और खाते–खाते भी मानव मरते देखे जाते हैं।

प्रश्न – "भोजन से सुख प्राप्त होता है" – क्या यह मान्यता ठीक है?

उत्तर – नहीं, क्योंकि भोजन करते हुये भी मानव दुःखी देखे जाते हैं और सिद्ध भगवान भोजन बिना भी अनन्त सुखी हैं।

नोट :– इसी प्रकार पूजन के प्रत्येक छन्द में से आवश्यक बोधगम्य प्रश्नोत्तर घर से तैयार करके लाना चाहिये एवं छात्रों को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

(३) निम्नलिखित छन्दों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये :–

चन्दन, अक्षत, नैवेद्य, दीप, धूप, फल।

(४) जयमाला में वर्णित सप्त तत्त्व सम्बन्धी भूलों के बोधगम्य प्रश्नोत्तर घर से तैयार करके लाना चाहिये और छात्रों को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

पाठ–निर्देश १८

(वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग ३ – पाठ २)

"पूजा–विधि और फल"

आवश्यक निर्देश :–

(१) पाठ पढ़ाते समय निम्नलिखित अंशों पर विशेष ध्यान देना चाहिये तथा इनमें आगत परिभाषाओं, सिद्धान्तों और निष्कर्षों को बोधगम्य प्रश्नोत्तरों में घर से तैयार करके लाना चाहिये तथा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये :–

(क) इष्ट देव–शास्त्र–गुरु का गुण स्तवन ही पूजा है।

(ख) अष्ट द्रव्य से पूजनीक तो वीतरागी सर्वज्ञदेव, वीतरागी मार्ग के निरूपक शास्त्र और नग्न दिगम्बर भावलिंगी गुरु ही हैं।

(ग) मिथ्यात्व राग–द्वेष आदि का अभाव करके पूर्ण ज्ञानी और सुखी होना ही इष्ट है। उसकी प्राप्ति जिसे हो गई वही इष्ट देव है।

(घ) ज्ञानी जीव लौकिक लाभ की दृष्टि से भगवान की आराधना नहीं करता – उसे तो सहज ही भगवान के प्रति भक्ति का भाव आता है।

(ङ) पूजा भक्ति का सच्चा लाभ तो विषय कषाय से बचना है।

(२) पूजन की विधि छात्रों को एक दिन का मन्दिर में पूजन का कार्यक्रम रखकर प्रायोगिक रूप से बताना चाहिये।

(३) पूजन की विधियाँ देश–देश में, प्रान्त–प्रान्त में, यहाँ तक कि गाँव–गाँव में, कुछ अलग–अलग होती हैं। अतः जहाँ जो पद्धति प्रचलित हो, उसके विरुद्ध अध्यापक का उलझना ठीक नहीं है। हाँ, इतना ध्यान रखना चाहिये कि सचित्तादि वस्तुओं से पूजन न की जावे। पूजन की विधि शुद्धाम्नायनुसार ही हो।

(४) ज्ञानी और अज्ञानी के पूजन करने के भाव में निम्न अन्तर होता है :–

ज्ञानी	अज्ञानी
१. ज्ञानी विषय–कषाय से बचने के लिये पूजन करता है। २. ज्ञानी को पूजा–भक्ति का भाव सहज ही आता है।	१. अज्ञानी विषय–कषाय की चाह से पूजन करता है। २. अज्ञानी को पूजा–भक्ति का भाव विषय–सामग्री की प्राप्ति की कामना से आता है।

पाठ-निर्देश १९
(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३ - पाठ ३)
"उपयोग"

आवश्यक निर्देश :-

(१) आचार्य उमास्वामी एवं उनके द्वारा रचित महाग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना तथा तत्त्वार्थ सूत्र के पढ़ने की प्रेरणा देना, क्योंकि यह पाठ तत्त्वार्थ सूत्र के द्वितीय अध्याय के आधार पर लिखा गया है।

(२) उपयोग के भेद-प्रभेदों को पाठ्यपुस्तक में पृष्ठ सं. १३ पर अंकित चार्ट के अनुसार स्पष्ट करना।

(३) उपयोग व उसके भेद-प्रभेदों की परिभाषाओं का भाव अच्छी तरह समझाने के उपरान्त उन्हें वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(४) मतिज्ञान की परिभाषा दो अपेक्षा से समझाना चाहिये :-

(क) अपने आत्मा को जानने की अपेक्षा - "पराश्रय बुद्धि को छोड़कर दर्शनोपयोगपूर्वक स्वसन्मुखता से प्रगट होने वाले निज आत्मा के ज्ञान को मतिज्ञान कहते हैं।"

(ख) पर पदार्थों को जानने की अपेक्षा - "इन्द्रियाँ और मन हैं निमित्त जिसमें, उस ज्ञान को मतिज्ञान कहते हैं।"

(५) सुज्ञान और कुज्ञान का भेद मिथ्यात्व के कारण तथा प्रयोजनभूतता के कारण होता है - यह स्पष्ट करना चाहिये, क्योंकि सम्यग्दृष्टि का सभी ज्ञान सुज्ञान है और मिथ्यादृष्टि का सभी ज्ञान कुज्ञान है। लौकिक ज्ञान कैसा भी हो, पर प्रयोजनभूत जीवादिक का सही ज्ञान हो तो ज्ञान सच्चा ही है। लौकिक ज्ञान सही होने पर भी यदि प्रयोजनभूत तत्त्वों का ज्ञान नहीं हो या गलत ज्ञान हो तो वह अज्ञान ही है। इस तथ्य को अच्छी तरह स्पष्ट कर देना चाहिये।

पाठ–निर्देश २०

(वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग ३ – पाठ ४)

"गृहीत और अगृहीत मिथ्यात्व"

आवश्यक निर्देश :–

(१) छहढाला और छहढालाकार पंडित दौलतरामजी का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना तथा छहढाला पढ़ने की प्रेरणा देना, क्योंकि यह पाठ छहढाला की द्वितीय ढाल के आधार पर लिखा गया है।

(२) पाठ की स्थिति निम्नलिखित चार्ट द्वारा स्पष्ट करना :–

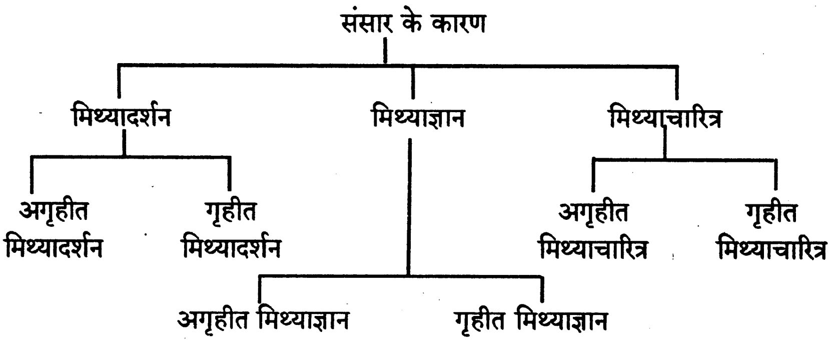

(३) पाठ में आगत समस्त परिभाषाओं, सिद्धान्तों और तथ्यों को बोधगम्य प्रश्नोत्तरों में तैयार कर लेना चाहिये और वस्तुनिष्ठ पद्धति से प्रश्नोत्तर करके छात्रों को तैयार कराना चाहिये।

(४) गृहीत और अगृहीत का भेद समझाने के लिये घी में छाछ और घी में डालडा आदि के उदाहरण से स्पष्ट करना चाहिये। जैसे :–

घी में छाछ तो उसके आरम्भ काल से ही है, क्योंकि घी और छाछ का तो जन्मजात सम्बन्ध है, किन्तु घी में डालडा आदि पदार्थ बाद में मिलाये जाते हैं; उसी प्रकार आत्मा में अगृहीत मिथ्यात्वादि तो अनादि काल से ही हैं किन्तु गृहीत मिथ्यात्वादि कुगुरु आदि के संयोग से यह बुद्धिपूर्वक ग्रहण करता है।

पाठ–निर्देश २१

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३ – पाठ ६)

"ज्ञानी श्रावक के बारह व्रत"

आवश्यक निर्देश :-

(१) बारह व्रतों की स्थिति पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ नं. २६ पर अंकित चार्ट द्वारा स्पष्ट करनी चाहिये।

(२) पाठ में आगत सभी परिभाषाओं, सिद्धान्तों और तथ्यों को बोधगम्य प्रश्नोत्तरों में तैयार कर लेना चाहिये और वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

(३) निम्नलिखित व्रतों की परिभाषा समझाते समय विशेष ध्यान रखना चाहिये :-

अहिंसाणुव्रत, परिग्रह परिमाणव्रत और सामायिक शिक्षाव्रत।

क्योंकि इनके समझाने में प्रायः भूल हो जाती है। जैसे – परिग्रह परिमाणव्रत समझाते समय प्रायः कह देते हैं कि चौबीस प्रकार के परिग्रह का परिमाण कर लेना परिग्रह परिमाणव्रत है, परन्तु यह ध्यान नहीं रखते कि मिथ्यात्व नामक परिग्रह का परिमाण नहीं होता - उसका तो सर्वथा त्याग होता है।

(४) हिंसा के संकल्पी आदि चार भेद, असत्य के सत् का अपलाप आदि चार भेद भी अच्छी तरह स्पष्ट करना चाहिये।

(५) निम्नलिखित व्रतों में परस्पर अन्तर भी बहुत सावधानीपूर्वक स्पष्ट करना चाहिये :-

(क) दिग्व्रत और देशव्रत

(ख) परिग्रह परिमाणव्रत और भोगोपभोग परिमाणव्रत।

पाठ-निर्देश २२

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३ - पाठ ७)

"मुक्ति का मार्ग"

आवश्यक निर्देश :-

(१) आचार्य अमृतचन्द्र और उनके द्वारा लिखित महान् ग्रन्थ पुरुषार्थसिद्ध्युपाय का परिचय छात्रों को जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना व पुरुषार्थसिद्ध्युपाय पढ़ने की प्रेरणा देना, क्योंकि यह पाठ उसके आधार पर लिखा गया है।

(२) पाठ में आगत सभी परिभाषाओं, सिद्धान्तों एवं विचारों को बोधगम्य प्रश्नोत्तरों में तैयार कर लेना चाहिये एवं उन्हें वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

(३) मुक्तिमार्ग के भेद-प्रभेदों को निम्न चार्ट के आधार से स्पष्ट करना चाहिये :-

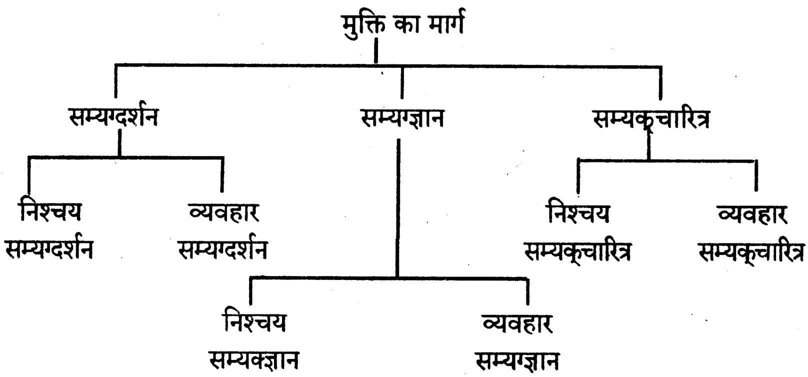

(४) "रत्नत्रय ही मुक्ति का मार्ग है" और "रत्नत्रय मुक्ति का ही मार्ग है" - उक्त दोनों तथ्यों पर छात्रों का ध्यान विशेष आकर्षित किया जाय।

(५) उक्त तथ्यों की स्थापना में उत्पन्न होने वाली शंकाओं का समुचित समाधान करना। जैसे :-

प्रश्न – यदि रत्नत्रय मुक्ति का ही मार्ग है तो रत्नत्रयधारी मुनिवर स्वर्ग क्यों जाते हैं?

उत्तर – रत्नत्रय तो मुक्ति का ही कारण है, पर रत्नत्रयधारी मुनिवर शुभभाव रूप राग (अपराध) के फल से ही स्वर्ग जाते हैं।

प्रश्न – शुभोपयोग को अपराध क्यों कहा है?

उत्तर – जो बन्ध का कारण हो, वह अपराध ही है।

प्रश्न – रत्नत्रय को ही मुक्ति का मार्ग क्यों कहते हैं? रत्नत्रय के साथ होने वाले शुभराग को भी मुक्ति का मार्ग क्यों न न कहें?

उत्तर – जो बन्ध का कारण हो, वही मुक्ति का कारण कैसे हो सकता है।

पाठ–निर्देश २३

(वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग ३ – पाठ ८)

"निश्चय और व्यवहार"

आवश्यक निर्देश :–

(१) आचार्यकल्प पं. टोडरमलजी और उनके द्वारा लिखित ग्रन्थ मोक्षमार्ग प्रकाशक का परिचय देकर मोक्षमार्ग प्रकाशक के पढ़ने की प्रेरणा देना चाहिये क्योंकि यह पाठ मोक्षमार्ग प्रकाशक के आधार पर लिखा गया है।

(२) पाठ में आगत निश्चय और व्यवहार की निम्नलिखित तीनों परिभाषायें वस्तुनिष्ठ पद्धति से बहुत अच्छी तरह तैयार कराना चाहिये तथा अनेक उदाहरणों द्वारा उन्हें अच्छी तरह स्पष्ट करके समझाना चाहिये :–

(क) सच्चे निरूपण को निश्चय कहते हैं और उपचरित निरूपण को व्यवहार।

(ख) एक ही द्रव्य के भाव को उस स्वरूप में ही वर्णन करना निश्चय नय और उपचार से उस द्रव्य के भाव को अन्य द्रव्य के भाव स्वरूप वर्णन करना व्यवहार है।

(ग) जिस द्रव्य की परिणति हो, उसको उसी की कहने वाला निश्चय नय है और उसे ही अन्य द्रव्य की कहने वाला व्यवहार नय है।

(३) "मोक्ष मार्ग दो नहीं हैं – मोक्षमार्ग का कथन दो प्रकार से है" – उक्त कथन को भलीभाँति स्पष्ट करना।

(४) पाठ में आगत निम्नलिखित अंशों को विशेष स्पष्ट करना :-

(क) निश्चय नय से जो निरूपण किया हो उसे सच्चा (सत्यार्थ) मानकर उसका श्रद्धान करना और व्यवहार नय से जो निरूपण किया हो उसे असत्यार्थ मानकर उसका श्रद्धान छोड़ना।

(ख) व्यवहार नय स्वद्रव्य परद्रव्य को व उनके भावों को व कारण कार्यादिक को किसी को किसी में मिलाकर निरूपण करता है – इस प्रकार के श्रद्धान से मिथ्यात्व होता है, अतः व्यवहार नय त्याग करने योग्य है। तथा निश्चय नय उन्हीं को यथावत् निरूपण करता है, किसी को किसी में नहीं मिलाता है – ऐसे श्रद्धान से सम्यक्त होता है, अतः उसका श्रद्धान करना।

(५) निश्चय व्यवहार के सम्बन्ध में उत्पन्न होने वाली निम्न शंकाओं का समुचित संतोषजनक उत्तर देना :-

(क) शास्त्रों में दोनों नयों का ग्रहण करना क्यों लिखा है?

(ख) व्यवहार को हेय कहोगे तो लोग व्रत–शील–संयमादि करना छोड़ देंगे?

(ग) जिनवाणी में व्यवहार का कथन ही क्यों किया है?

(घ) व्यवहार निश्चय का प्रतिपादक कैसे है?

नोट – उक्त प्रश्नों के सरल, संक्षिप्त व समुचित उत्तर वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–३ के पृष्ठ ३८–३९ पर दिये हुये हैं तथा अध्यापकों को इस संदर्भ में मोक्षमार्ग प्रकाशक के सातवें अध्याय से विशेष जानकारी प्राप्त करना चाहिये तथा छात्रों को उक्त प्रकरण पढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिये।

पाठ–निर्देश २४

(वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग ३ – पाठ ९)

"दशलक्षण महापर्व"

आवश्यक निर्देश :–

(१) लौकिक और धार्मिक पर्वों का अन्तर पाठ–निर्देश १४ में दिये गये चार्ट के अनुसार करना चाहिये और उसमें दशलक्षण पर्व का स्थान निर्धारित करके समझाना चाहिये।

(२) सामान्य रूप से दशलक्षण पर्व की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराके धर्म के दश भेदों के नाम तैयार कराना चाहिये।

(३) उत्तम क्षमादि प्रत्येक धर्म की परिभाषाएँ निश्चय व्यवहार की संधिपूर्वक समझाकर वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

(४) अनन्तानुबन्धी आदि कषायों का सामान्य परिचय छात्रों को करा देना चाहिये, क्योंकि उनका प्रयोग इस पाठ में बार–बार हुआ है। उनका भाव स्पष्ट किए बिना पाठ का भाव समझ पाना कठिन है।

(५) प्रत्येक धर्म के आगे "उत्तम" शब्द का प्रयोग होता है। "उत्तम" शब्द का अर्थ निश्चयपूर्वक है। इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये इसे बोर्ड पर लिख देना चाहिये और इसकी और प्रश्नोत्तरों के बीच बार–बार ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

"उत्तम = निश्चय सम्यग्दर्शनपूर्वक"

(६) "सत्य वचन बोलना सत्य धर्म नहीं, क्योंकि सत्य धर्म तो आत्मा का धर्म है और वचन तो पुद्गल की पर्याय है।" इस तथ्य की ओर छात्रों का ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

(७) निश्चय धर्म और व्यवहार धर्म में अन्तर निम्नानुसार बताना चाहिये :-

निश्चय धर्म	व्यवहार धर्म
१. शुद्ध भाव।	१. शुभ भाव।
२. संवर, निर्जरा और मोक्ष का कारण।	२. पुण्याश्रव और पुण्यबंध का कारण।
३. वास्तविक धर्म।	३. उपचरित धर्म।

(८) मुनियों और गृहस्थों के उत्तम क्षमादि धर्मों के बीच अन्तर निम्नानुसार स्पष्ट करना चाहिये :-

मुनियों के उत्तम क्षमादि धर्म	ज्ञानी गृहस्थों के उत्तम क्षमादि धर्म
१. अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान एवं प्रत्याख्यान क्रोधादि के अभावरूप उत्तम क्षमादि धर्म।	१. अनन्तानुबन्धी क्रोधादि के अभाव-रूप या अनन्तानुबन्धी और अप्रत्याख्यान कषायादि संबंधी क्रोधादि के अभाव रूप उत्तम क्षमादि धर्म।

पाठ-निर्देश २५

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३ - पाठ १०)

"बलभद्र राम"

आवश्यक निर्देश :-

(१) रामकथा अति प्रसिद्ध है। छात्रों में उसके सम्बन्ध में पूर्वाग्रह हो सकते हैं। अतः रामकथा बताते समय विशेष सावधानी रखनी चाहिये।

(२) पाठ में आगत राम के पारिवारिक परिचय को निम्न चार्टानुसार स्पष्ट कर देना चाहिये :-

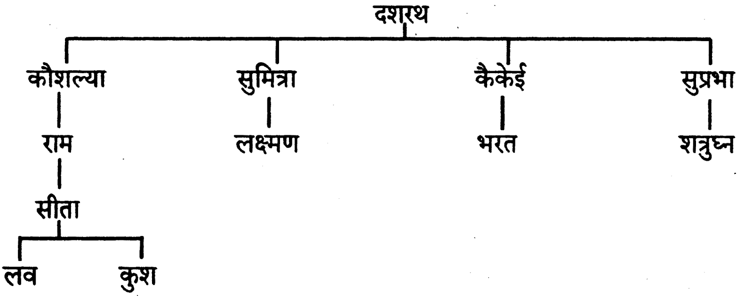

(३) हनुमान और रावण आदि के संबंध में प्रचलित लोक-धारणाओं का बड़ी ही सावधानी से सतर्क समाधान करना चाहिये। जैसे :-

प्रश्न - क्या हनुमान बन्दर थे?

उत्तर - नहीं, हनुमानादिक बन्दर न थे, किन्तु वानरवंशी सर्वांग सुन्दर महापुरुष थे जो आत्मोन्मुखी वृत्ति का महान पुरुषार्थ करके वीतरागी सर्वज्ञ परमात्मा बने।

प्रश्न - हनुमानादिक को वानर क्यों कहा जाता है?

उत्तर - वानरवंशी होने से उन्हें वानर कहा जाने लगा। आज भी कई लोगों के गोत्र आदि ऐसे पाये जाते हैं, जो पशु के वाचक हैं। जैसे - भैंसा आदि।

प्रश्न - क्या रावण के दशमुख थे? यदि नहीं, तो उसे दशमुख क्यों कहा जाता है?

उत्तर - उसके दशमुख नहीं थे। एक बार बालक रावण पालने में लेटा था। उसके गले में एक नौ मणियों का हार पड़ा था। उसमें उसका प्रतिबिम्ब पड़ने से उसके दशमुख दिखाई दे रहे थे। उस दिन से उसे लोग दशमुख कहने लगे।

(४) रामकथा में जो लोक-अपरिचित व्यक्तियों के उल्लेख हुए हैं, उनके परिचय की ओर छात्रों का ध्यान प्रश्नोत्तर द्वारा विशेष आकर्षित

करना चाहिये, क्योंकि लोक-परिचित प्रसिद्ध व्यक्तियों से तो प्रायः छात्र परिचित रहते ही हैं। जैसे :-

प्रश्न - बज्रजंघ कौन थे?

उत्तर - पुण्डरीकपुर के राजा - जिन्होंने राम के द्वारा निर्वासित गर्भवती सीता को धर्म बहिन बनाकर आश्रय दिया था।

(५) रामकथा को अपने शब्दों में लिखने और बोलने का अभ्यास कराना।

पाठ-निर्देश २६

(वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ३ - पाठ ११)

"समयसार स्तुति"

आवश्यक निर्देश :-

(१) समयसार ग्रन्थ व उसके कर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द का परिचय छात्रों को इस प्रकार देना कि जिससे उन्हें समयसार ग्रन्थ पढ़ने की जिज्ञासा जगे।

(२) स्तुति में आगत सिद्धान्तों, तथ्यों एवं महत्त्वपूर्ण विचारों को बोधगम्य प्रश्नोत्तरों में तैयार करके वस्तुनिष्ठ पद्धति से छात्रों को तैयार कराना चाहिये। जैसे :-

प्रश्न - समयसार रूपी बर्तन में कुन्दकुन्दाचार्य ने क्या भरा?

उत्तर - भगवान महावीर की अमृतवाणी रूपी गंगा-जल।

प्रश्न - समयसार के सदुपदेश रूपी अमृतपान से क्या लाभ है?

उत्तर - विभावों में रुकी आत्म-परिणति स्वभाव की ओर दौड़ पड़ती है।

प्रश्न - समयसार सुनने से क्या लाभ है?

उत्तर - कर्मों का रस ढीला पड़ जाता है।

प्रश्न - समयसार जान लेने से क्या लाभ है?

उत्तर - ज्ञानी का हृदय जान लिया जाता है।

प्रश्न - समयसार की रुचि करने पर क्या होता है?

उत्तर - संसार और विषय-कषाय से रुचि हट जाती है।

-●-

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५ (राजस्थान)

प्रवेशिका प्रशिक्षण परीक्षा

प्रथम प्रश्न-पत्र (सैद्धान्तिक)

समय :- १ घण्टा **पूर्णाङ्क : ४०**

१. किन्हीं ४ की परिभाषा लिखिये। (८)
निमित्त, द्रव्यजुआ, सकल परमात्मा, उपयोग, अनुयोग, घातिया कर्म

२. केवल संख्या लिखिये (कोई ५) (५)
अरहन्त के गुण, नाम कर्म के भेद, आवश्यक, परिग्रह, दर्शन उपयोग, परमात्मा

३. अन्तर स्पष्ट कीजिये। (कोई २) (८)
अ) गृहीत मिथ्यात्व और अगृहीत मिथ्यात्व
ब) प्रथमानुयोग और चरणानुयोग
स) सच्चा गुरु और विद्या गुरु

४. देव-शास्त्र-गुरु पूजन का कोई एक पद्य (चार पंक्तियाँ) या देव स्तुति की (लगातार ४ पंक्तियाँ) लिखिये। (४)

५. तर्क सहित उत्तर दीजिये। (कोई ५) (१५)
अ) आत्मा परमात्मा कैसे बन सकता है?
ब) रत्नत्रय मुक्ति का मार्ग क्यों है?
स) मंद राग को अहिंसा कहने में क्या आपत्ति है?
द) घड़े के उदाहरण से निश्चय-व्यवहार नय समझाइये।
इ) पूजन किसकी और क्यों करना चाहिये?
फ) पण्डित दौलतरामजी या पण्डित टोडरमलजी या आचार्य उमास्वामी का संक्षेप में परिचय लिखिये।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५ (राजस्थान)

प्रवेशिका प्रशिक्षण परीक्षा

द्वितीय प्रश्न-पत्र (शिक्षण पद्धति)

समय :- २ घण्टा **पूर्णाङ्क : ६०**

१. किन्हीं दो शब्दों की परिभाषा लिखिये। (८)

अ) आधार परिचय

ब) आदर्श वाचन

स) गृहकार्य

२. अन्तर स्पष्ट कीजिये (कोई २) (१०)

अ) समापन मूल्यांकन प्रश्नोत्तर और पूर्वपाठ मूल्यांकन प्रश्नोत्तर।

ब) गद्य शैली और पद्य शैली

स) सामान्यार्थ विवेचन और विचार विश्लेषण

३. सत्रह सोपानों के नाम लिखिये (१२)

अथवा

अध्यापक में कौन-कौन से गुण होना चाहिये?

४. 'देव-शास्त्र-गुरु' अथवा 'षट् आवश्यक' पाठ की पाठ योजना बनाइये। (२०)

५. 'कर्म' अथवा 'भगवान पार्श्वनाथ' पाठ का पाठ निर्देश बनाइये। (१०)

परिशिष्ट १

(१) चौबीस तीर्थंकरों के चिह्न

नाम तीर्थंकर	चिह्न	नाम तीर्थंकर	चिह्न
ऋषभदेव	वृषभ (बैल)	विमलनाथ	शूकर (सुअर)
अजितनाथ	हाथी	अनन्तनाथ	सेही
संभवनाथ	घोड़ा	धर्मनाथ	वज्रदण्ड
अभिनन्दन	बन्दर	शान्तिनाथ	हिरण
सुमतिनाथ	चकवा	कुन्थुनाथ	बकरा
पद्मप्रभ	कमल	अरनाथ	मच्छ
सुपार्श्वनाथ	साथिया	मल्लिनाथ	कलश
चन्द्रप्रभ	चन्द्रमा	मुनिसुव्रत	कछुआ
पुष्पदन्त	मगर	नमिनाथ	नील कमल
शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	नेमिनाथ	शंख
श्रेयांसनाथ	गैंडा	पार्श्वनाथ	सर्प
वासुपूज्य	भैंसा	महावीर	सिंह

(२) चौबीस परिग्रह

परिग्रह दो प्रकार के होते हैं :-

(१) अंतरंग और (२) बहिरंग।

अंतरंग परिग्रह

१. मिथ्यात्व, २. क्रोध, ३. मान, ४. माया, ५. लोभ, ६. हास्य, ७. रति, ८. अरति, ९. शोक, १०. भय, ११. जुगुप्सा, १२. स्त्रीवेद, १३. पुरुषवेद, १४. नपुंसकवेद। ये १४ अंतरंग परिग्रह हैं।

बहिरंग परिग्रह

१. क्षेत्र (खेत), २. मकान, ३. चांदी, ४. सोना, ५. धन, ६. धान्य, ७. दासी, ८. दास, ९. वस्त्र, १० बर्त्तन। ये बहिरंग परिग्रह हैं।

(३) बाईस अभक्ष्य

ओरा घोरबरा निसिभोजन,
बहुबीजा बैंगन संधान।
पीपर बर ऊमर कठूंबर,
पाकर जो फल होइ अजान।।
कंदमूल माटी विष आमिष,
मधु माखन अरु मदिरापान।
फल अति तुच्छ तुसार चलित रस,
जिनमत ए बाईस अखान।।

१. ओला, २. द्विदल, ३. रात्रिभोजन, ४. बहुबीजा, ५. बैंगन, ६. अथाना - मुरब्बा, ७. पीपरफल, ८. बड़फल, ९. ऊमरफल, १०. कठूमर, ११. पाकरफल, १२. अजानफल, १३. कंदमूल, १४. माटी, १५. विष, १६. मांस, १७. शहद, १८. मक्खन, १९. शराब, २०. अति सूक्ष्मफल, २१. बर्फ, २२. चलित रस। ये बाईस अभक्ष्य हैं।

(४) पच्चीस कषायें

१ से ४. अनन्तानुबंधी क्रोध-मान-माया-लोभ,
५ से ८. अप्रत्याख्यान क्रोध-मान-माया-लोभ,
९. से १२. प्रत्याख्यान क्रोध-मान-माया-लोभ,
१३ से १६. संज्वलन क्रोध-मान-माया-लोभ,
१७ से २५. हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुसंकवेद। ये पच्चीस कषायें हैं।

उक्त हास्य आदि ९ कषायों को 'नोकषाय' भी कहते हैं।

इनको अगले पृष्ठ पर दिये गये चार्ट द्वारा भली-भाँति समझा जा सकता है।

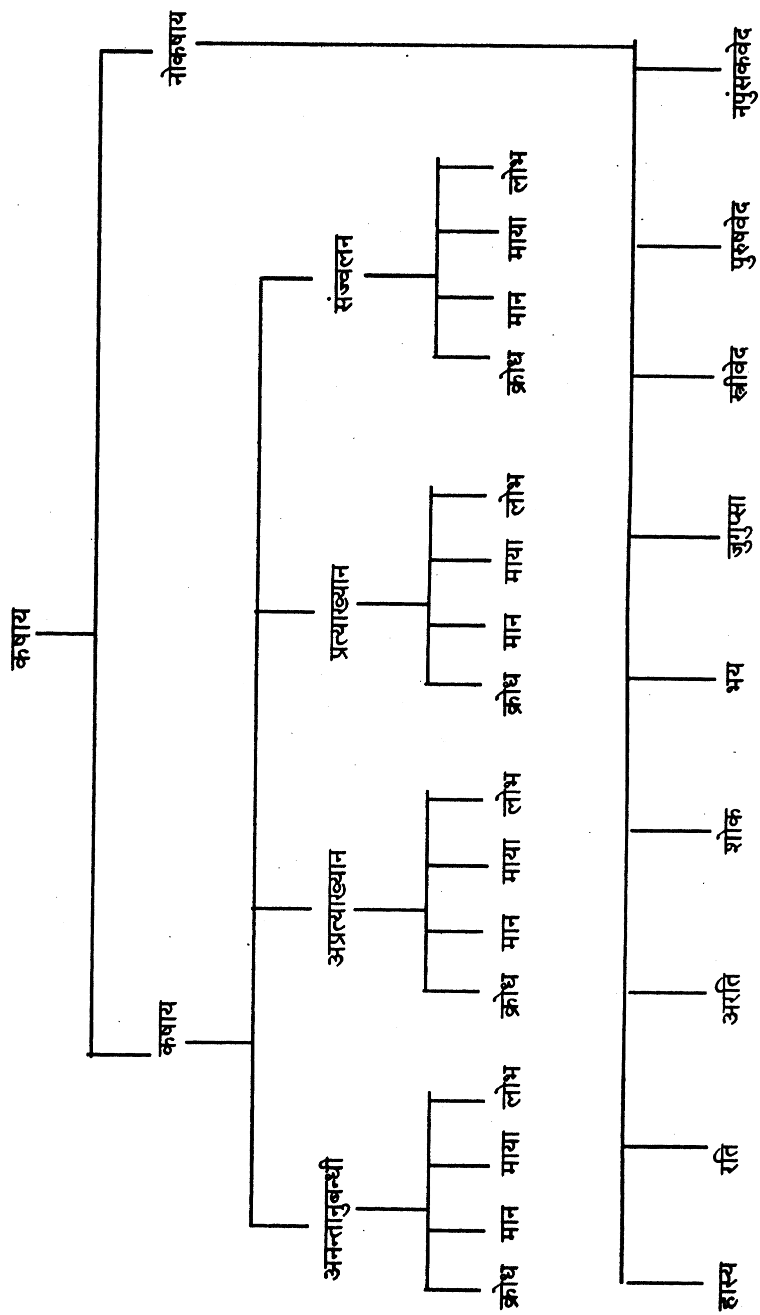
कषाय
नोकषाय
कषाय
अनन्तानुबन्धी
क्रोध मान माया लोभ
अप्रत्याख्यान
क्रोध मान माया लोभ
प्रत्याख्यान
क्रोध मान माया लोभ
संज्वलन
क्रोध मान माया लोभ
हास्य
रति
अरति
शोक
भय
जुगुप्सा
स्त्रीवेद
पुरुषवेद
नपुंसकवेद

(५) जीव के भेद

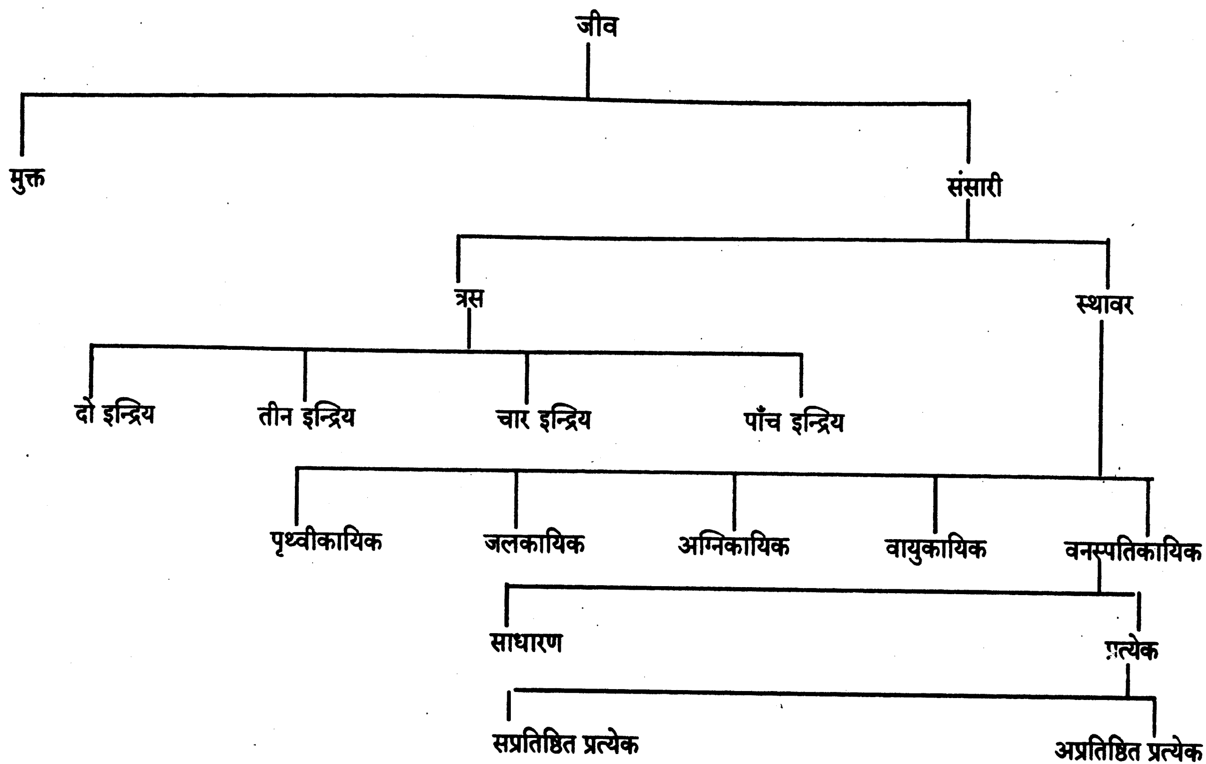
जीव
मुक्त
संसारी
त्रस
स्थावर
दो इन्द्रिय
तीन इन्द्रिय
चार इन्द्रिय
पाँच इन्द्रिय
पृथ्वीकायिक
जलकायिक
अग्निकायिक
वायुकायिक
वनस्पतिकायिक
साधारण
प्रत्येक
सप्रतिष्ठित प्रत्येक
अप्रतिष्ठित प्रत्येक

(६) पंचपरमेष्ठी के मूलगुण

(क) अरहन्त परमेष्ठी :-

चौतीसों अतिशय सहित, प्रातिहार्य पुनि आठ।
अनन्त चतुष्टय गुण सहित, छीयालीसों पाठ।।

३४ अतिशय, ८ प्रातिहार्य और ४ अनन्तचतुष्टय, ये अरहन्त परमेष्ठी के ४६ गुण हैं। ३४ अतिशयों में से १० अतिशय जन्म के होते हैं, १० केवलज्ञान के होते हैं और १४ देवकृत होते हैं।

जन्म के दश अतिशय

अतिशय रूप सुगन्ध तन, नाहिं पसेव निहार।
प्रियहितवचन अतुल्यबल, रुधिर श्वेत आकार।।
लच्छन सहसरु आठ तन, समचतुष्क संठान।
वज्रवृषभनाराचजुत, ये जनमत दश जान।।

१. अत्यन्त सुन्दर शरीर, २. अति सुगन्धमय शरीर, ३. पसेव रहित शरीर, ४. मल–मूत्र रहित शरीर, ५. हितमितप्रिय वचन बोलना, ६. अतुल्य बल, ७. दूध के समान सफेद खून, ८. शरीर में एक हजार आठ लक्षण, ९. समचतुरस्रसंस्थान, १०. वज्रवृषभ नारच संहनन। ये दश अतिशय अरहन्त भगवान के जन्म से ही होते हैं।

केवलज्ञान के दश अतिशय

योजन शत इक में सुभिख, गगन–गमन मुख चार।
नहिं अदया उपसर्ग नहिं, नाहीं कवलाहार।।
सबविद्या–ईश्वरपनो, नाहिं बढ़ैं नख केश।
अनिमिष दृग छायारहित, दश केवल के वेश।।

१. एकसौ योजन में सुभिक्षता, २. आकाश में गमन, ३. चारों ओर मुखों का दिखना, ४. अदया का अभाव, ५. उपसर्ग का न होना, ६. कवलाहार का नहीं होना, ७. समस्त विद्याओं का स्वामीपना, ८. नख–केशों का न बढ़ना, ९. नेत्रों की पलकें न झपकना, १०. शरीर की छाया न पड़ना। ये दश अतिशय केवलज्ञान होने के समय प्रकट होते हैं।

देवकृत चौदह अतिशय

देवरचित हैं चारदश, अर्द्धमागधी भाष।
आपसमाहीं मित्रता, निर्मलदिश आकाश।।
होत फूल फल ऋतु सबै, पृथिवी काचसमान।
चरण कमल तल कमल हैं, नभ तैं जय जय बान।।
मन्द सुगन्ध बयारि पुनि, गन्दोधक की बृष्टि।
भूमिविषै कण्टक नहीं, हर्षमयी सब सृष्टि।।
धर्मचक्र आगे रहे, पुन वसु मंगल सार।
अतिशय श्री अरहन्त के, ये चौतीस प्रकार।।

१. भगवान की अर्द्धमागधी भाषा का होना, २. समस्त जीवों में परस्पर मित्रता का होना, ३. दिशाओं का निर्मल होना, ४. आकाश का निर्मल होना, ५. सब ऋतु के फल-फूल का एक ही समय फलना, ६. एक योजन तक की पृथ्वी का दर्पण की तरह निर्मल होना, ७. चलते समय भगवान के चरण-कमलों के तले स्वर्ण-कमलों का होना, ८. आकाश में जय-जय ध्वनि का होना, ९. मंद सुगंधित पवन का चलना, १०. सुगंधमय जल की वृष्टि होना, ११. पवनकुमार देवों के द्वारा भूमि का कण्टकरहित होना, १२. समस्त जीवों का आनन्दमय होना, १३. भगवान के आगे धर्मचक्र का चलना, १४. छत्र चमर ध्वजा घंटा आदि आठ मंगल द्रव्यों का साथ रहना। ये चौदह अतिशय देवकृत होते हैं।

आठ प्रातिहार्य

तरु अशोक के निकट में, सिंहासन छविदार।
तीन छत्र सिरपै लसैं, भामण्डल पिछवार।।
दिव्यध्वनि मुखतैं खिरै, पुष्पवृष्टि सुर होय।
ढोरैं चौसठि चमर जख, बाजैं दुन्दुभि जोय।।

१. अशोकवृक्ष का होना, २. रत्नत्रय सिंहासन, ३. भगवान के सिर पर तीन छत्र का होना, ४. भगवान की पीठ के पीछे भामण्डल का होना, ५. भगवान के मुख से निरक्षरी दिव्यध्वनि का होना, ६. देवों के द्वारा फूलों की वर्षा होना, ७. यक्ष देवों द्वारा चौसठ चमरों का ढुरना, ८. दुन्दुभि बाजों का बजना। ये आठ प्रातिहार्य हैं।

अनन्त चतुष्टय

ज्ञान अनन्त अनन्तसुख, दरस अनन्त प्रमान।
बल अनन्त अरहंत सो, इष्टदेव पहिचान।।

१. अनन्तदर्शन, २. अनन्तज्ञान, ३. अनन्तसुख, ४. अनन्तवीर्य। ये चार अनन्त चतुष्टय हैं।

(ख) सिद्धपरमेष्ठी :-

समकित दर्शन ज्ञान, अगुरुलघु अवगाहना।
सूच्छम वीरजवान, निराबाध गुण सिद्ध के।।

१. क्षायिक सम्यक्त्व, २. अनन्तदर्शन, ३. अनन्तज्ञान, ४. अगुरुलघुत्व, ५. अवगाहनत्व, ६. सूक्ष्मत्व, ७. अनन्तवीर्य, ८. अव्याबाध। ये सिद्धों के ८ मूलगुण होते हैं।

(ख) आचार्यपरमेष्ठी :-

द्वादश तप दश धर्मजुत, पालैं पंचाचार।
षट् आवशि त्रयगुप्ति गुन, आचारज पद सार।।

१२ तप, १० धर्म, ५ आचार, ६ आवश्यक, ३ गुप्ति। ये आचार्य परमेष्ठी के ३६ मूलगुण होते हैं।

बारह तप

अनशन ऊनोदर करे, व्रत संख्या रस छोर।
विविक्त शयनासन धरै, काय कलेश सुठोर।।
प्रायश्चित धर विनयजुत, वैयाव्रत स्वाध्याय।
पुनि उत्सर्ग विचारकै, धरै ध्यान मन लाय।।

१. अनशन, २. ऊनोदर, ३. व्रतपरिसंख्यान, ४. रसपरित्याग, ५. विविक्तशय्यासन, ६. कायक्लेश, ७. प्रायश्चित्त, ८. विनय, ९. वैयावृत, १०. स्वाध्याय, ११. व्युत्सर्ग, १२. ध्यान। ये बारह प्रकार के तप हैं।

दश धर्म

छिमा मारदव आरजव, सत्यवचन चितपाग।
संजम तप त्यागी सरव, आकिञ्चन तियत्याग।।

१. उत्तम क्षमा, २. उत्तम मार्दव, ३. उत्तम आर्जव, उत्तम सत्य, ५. उत्तम शौच, ८. उत्तम संयम, ७ उत्तम तप, ८. उत्तम त्याग, ९. उत्तम आकिंचन, १०. उत्तम ब्रह्मचर्य। ये दश धर्म हैं।

छह आवश्यक

समता धर वंदन करै, नाना थुती बनाय।
प्रतिक्रमण स्वाध्याय जुत, कायोत्सर्ग लगाय।।

१. समता, २. वंदना, ३. स्खलन, ४. प्रतिक्रमण, ५. स्वाध्याय, ६. कायोत्सर्ग। ये छह आवश्यक हैं।

पञ्च आचार और तीन गुप्ति

दर्शन ज्ञान चरित्र तप, वीरज पंचाचार।
गोपै मन वच काय को, गिन छतीस गुणसार।।

१. दर्शनाचार, २. ज्ञानाचार, ३. चारित्राचार, ४. तपाचार, ५. वीर्याचार। ये पाँच आचार हैं।

१. मनोगुप्ति, २. वचनगुप्ति, ३. कायगुप्ति। ये तीन गुप्तियाँ हैं।

(घ) उपाध्याय परमेष्ठी :-

११ अंग और १४ पूर्व, उपाध्याय परमेष्ठी के ये २५ मूलगुण हैं।

ग्यारह अंग

प्रथमहिं आचारांग गनि, दूजौ सूत्रकृतांग।
ठाणअंग तीजौ सुभग, चौथौ समवायांग।।
व्याख्यापण्णति पाँचमौं, ज्ञातृकथा षट्जान।
पुनि उपासकाध्ययन है, अंतःकृतदश ठान।।
अनुत्तरण उत्पाद दश, सूत्रविपाक पिछान।
बहुरि प्रश्नव्याकरण जुत, ग्यारह अंग प्रमान।।

१. आचारांग, २. सूत्रकृतांग, ३. स्थानांग, ४. समवायांग, ५. व्याख्याप्रज्ञति अंग, ६. ज्ञातृकथांग, ७. उपासकाध्ययनांग, ८. अंतःकृतदशांग, ९. अनुत्तरोत्पादकदशांग, १०. प्रश्नव्याकरणांग, ११. विपाक सूत्रांग। ये ग्यारह अंग हैं।

चौदह पूर्व

उत्पादपूर्व अग्रायणी, तीजो वीरजवाद।
अस्तिनास्तिपरवाद पुनि, पंचम ज्ञानप्रवाद।।
छट्ठो कर्मप्रवाद है, सतप्रवाद पहिचान।
अष्टम आत्मप्रवाद पुनि, नवमौं प्रत्याख्यान।।
विद्यानुवाद पूरव दशम, पूर्वकल्याण महन्त।
प्राणवाद किरिया बहुल, लोकबिन्दु है अन्त।।

१. उत्पादपूर्व, २. अग्रायणीपूर्व, ३. वीर्यानुवादपूर्व, ४. अस्तिनास्तिप्रवादपूर्व, ५. ज्ञानप्रवादपूर्व, ६. कर्मप्रवादपूर्व, ७. सत्यप्रवादपूर्व, ८. आत्मप्रवादपूर्व, ९. प्रत्याख्यानपूर्व, १०. विद्यानुवादपूर्व, ११. कल्याणवादपूर्व, १२. प्राणानुवादपूर्व, १३. क्रियाविशालपूर्व, १४. लोकबिन्दुपूर्व। ये चौदह पूर्व हैं।

(ङ) साधु परमेष्ठी :-

५ महाव्रत, ५ समिति, ५ इन्द्रियविजय, ६ आवश्यक, ७ शेष गुण। ये साधु परमेष्ठी के २८ मूलगुण हैं।

पाँच महाव्रत

१. अहिंसा महाव्रत, २. सत्य महाव्रत, ३. अचौर्य महाव्रत, ४. ब्रह्मचर्य महाव्रत, ५. परिग्रहत्याग महाव्रत। ये ५ महाव्रत हैं।

पाँच समिति

१. ईर्या समिति, २. भाषा समिति, ३. एषणा समिति, ४. आदाननिक्षेपण समिति, ५. प्रतिष्ठापन समिति। ये ५ समिति हैं।

पाँच इन्द्रियविजय

१. स्पर्शन इन्द्रियविजय, २. रसना इन्द्रियविजय, ३. घ्राण इन्द्रियविजय, ४. चक्षु इन्द्रियविजय, ५. कर्ण इन्द्रियविजय। ये पाँच इन्द्रियविजय हैं।

छह आवश्यक

१. समता, २. वंदना, ३. स्तवन, ४. प्रतिक्रमण, ५. स्वाध्याय, ६. कायोत्सर्ग। ये छह आवश्यक हैं।

सात शेष गुण

१. अस्नान, २. भूमि पर सोना, ३. वस्त्र–त्याग, ४. केश–लुंचन, ५. दिन में एक बार अल्प आहार करना, ६. अदन्तधोवन, ७. खड़े-खड़े आहार लेना। ये सात शेष गुण हैं।

उक्त २८ मूलगुण आचार्य और उपाध्याय परमेष्ठी में भी पाये जाते हैं, क्योंकि वे सामान्य साधु तो हैं ही।

–●–

परिशिष्ट २

(१) वीतराग में नहीं पाये जाने वाले अठारह दोष

जन्म जरा तिरखा क्षुधा, विस्मय आरत खेद।
रोग शोक मद मोह भय, निद्रा चिन्ता स्वेद।।
रागद्वेष अरु मरणजुत, ये अष्टादश दोष।
नाहिं होत अरहन्त के, सो छवि लायक मोष।।

१. जन्म, २. जरा, ३. तृषा, ४. क्षुधा, ५. विस्मय, ६. अरति, ७. खेद, ८. रोग, ९. शोक, १०. मद, ११. मोह, १२. भय, १३. निद्रा, १४. चिन्ता, १५. स्वेद, १६. राग, १७. द्वेष, १८. मरण। ये १८ दोष वीतरागी सर्वज्ञ अरहन्त भगवान में नहीं होते हैं।

(२) कर्मों की १४८ प्रकृतियाँ

ज्ञानावरण की ५, दर्शनावरण की ९, वेदनीय की २, मोहनीय की २८, आयु की ४, नाम की ९३, गोत्र की २ और अन्तराय की ५; इसप्रकार कुल मिलाकर आठ कर्मों की १४८ प्रकृतियाँ हैं – जिनका विवरण इस प्रकार है :-

ज्ञानावरण[१]

१. मतिज्ञानावरण, २. श्रुतज्ञानावरण, ३. अवधिज्ञानावरण, ४. मनःपर्ययज्ञानावरण, ५. केवलज्ञानावरण।

दर्शनावरण[२]

१. चक्षुदर्शनावरण, २. अचक्षुदर्शनावरण, ३. अवधिदर्शनावरण, ४. केवलदर्शनावरण, ५. निद्रा, ६. निद्रानिद्रा, ७. प्रचला, ८. प्रचलाप्रचला, ९. स्त्यानगृद्धि।

वेदनीय[३]

१. साता वेदनीय २. असाता वेदनीय।

मोहनीय[४]

मोहनीय कर्म के मुख्य दो भेद हैं। १. दर्शन मोहनीय और २. चारित्र मोहनीय। उनमें दर्शन मोहनीय के ३ और चारित्र मोहनीय के २५–कुल मिलाकर २८ भेद होते हैं, जो इस प्रकार हैं :-

दर्शन मोहनीय – १. मिथ्यात्व, २. सम्यग्मिथ्यात्व, ३. सम्यक्-प्रकृतिमिथ्यात्व।

---

१. मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानाम् ।। – तत्त्वार्थसूत्र, अ. ८ सूत्र ६

२. चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च। – तत्त्वार्थसूत्र, अ. ८ सूत्र ६

३. सदसद्वेद्ये ।। – तत्त्वार्थसूत्र, अ. ८ सूत्र ८

४. दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायो हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुनपुंसकवेदा अनंतानुबंध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ।। – तत्त्वार्थसूत्र, अ. ८ सूत्र ९

चारित्र मोहनीय- ४. हास्य, ५ रति, ६. अरति, ७. शोक, ८. भय, ९. जुगुप्सा, १०. स्त्रीवेद, ११. पुरुषवेद, १२. नपुंसकवेद, १३ से १६. अनन्तानुबन्धी क्रोध-मान-माया-लोभ, १७ से २०. प्रत्याख्यानावरण क्रोध-मान-माया-लोभ, २१ से २४. अप्रत्याख्यानावरण क्रोध-मान-माया-लोभ, २५ से २८ संज्वलन क्रोध-मान-माया लोभ।

आयु[1]

१. नरक आयु, २. तिर्यंच आयु, ३. मनुष्य आयु, ४. देव आयु।

नाम[2]

१ से ४. गति-नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति;

५ से ९. जाति-एकेन्द्रियजाति, द्वीन्द्रियजाति, त्रीन्द्रियजाति, चतुरिन्द्रियजाति, पंचेन्द्रिय जाति;

१० से १४. शरीर-औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस, कार्माण;

१५ से १७. आंगोपांग - औदारिक, वैक्रियिक, तैजस;

१८. निर्माण;

१९ से २३. बन्धन-औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस, कार्माण;

२४ से २८. संघात-औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस, कार्माण;

२९ से ३४. संस्थान-समचतुरस्रसंस्थान, न्यग्रोधपरिमंडल संस्थान, स्वातिसंस्थान, कुब्जकसंस्थान, वामन संस्थान, हुण्डकसंस्थान;

---

१. नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ।। - तत्त्वार्थसूत्र, अ. ८ सूत्र १०

२. गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसंघात संस्थान संहननस्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यागुरुलघु-पघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीर-त्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्म पर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्तिसेतराणि तीर्थकरत्वं च ।।

- तत्त्वार्थसूत्र, अ. ८ सूत्र ११

३५ से ४०. संहनन - वज्रवृषभनाराज संहनन, वज्रनाराच संहनन, नाराच संहनन, अर्द्धनाराच संहनन, कीलक संहनन, असंप्राप्तसृपाटिका संहनन;

४१ से ४८. स्पर्श -कोमल, कठोर, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष;

४९ से ५३. रस - खट्टा, मीठा, कडुआ, कषायला, चरपरा;

५४ से ५५. गंध-सुगंध, दुर्गंध;

५६ से ६०. वर्ण-काला, पीला, नीला, लाल, सफेद;

६१ से ६४. आनुपूर्व्य-नरकगत्यानुपूर्व्य तिर्यग्गत्यानुपूर्व्य, मनुष्यगत्यानुपूर्व्य, देवगत्यानुपूर्व्य;

६५. अगुरुलघु, ६६. उपघात, ६७. परघात, ६८. आतप, ६९. उद्योत, ७०. उच्छ्वास, ७१. प्रशस्त विहायोगति, ७२. अप्रशस्तविहायोगति, ७३. प्रत्येकशरीर, ७४. साधारण शरीर, ७५. त्रस, ७६. स्थावर, ७७. शुभग, ७८. दुर्भग, ७९. सुस्वर, ८०, दुःस्वर, ८१. शुभ, ८२. अशुभ, ८३. सूक्ष्म, ८४. बादर (स्थूल), ८५. पर्याप्ति, ८६. अपर्याप्ति, ८७. स्थिर, ८८. अस्थिर, ८९. आदेय, ९०. अनादेय, ९१. यशःकीर्ति, ९२. अयशःकीर्ति, ९३. तीर्थंकर।

गोत्र[1]

१. उच्च गोत्र, २. नीच गोत्र।

अन्तराय[2]

१. दान अन्तराय, २. लाभ अन्तराय, ३ भोग अन्तराय, ४. उपभोग अन्तराय, ५. वीर्य अन्तराय।

-●-

१. उच्चैर्नीचश्च ।। - तत्त्वार्थसूत्र, अ. ८ सूत्र १२

२. दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् - तत्त्वार्थसूत्र, अ. ८ सूत्र १३

महावीर वन्दना

जो मोह माया मान मत्सर, मदन मर्दन वीर हैं।
जो विपुल विघ्नों बीच में भी, ध्यान धारण धीर हैं।।
जो तरण-तारण, भव-निवारण, भव जलधि के तीर हैं।
वे वंदनीय जिनेश, तीर्थंकर स्वयं महावीर हैं।।

जो राग-द्वेष विकार वर्जित, लीन आतम ध्यानमें।
जिनके विराट् विशाल निर्मल, अचल केवलज्ञान में।।
युगपद् विशद सकलार्थ झलकें, ध्वनित हो व्याख्यान में।
वे वर्द्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में।।

जिनका परम पावन चरित, जलनिधि समान अपार है।
जिनके गुणों के कथन में, गणधर न पावैं पार है।।
बस वीतराग-विज्ञान ही, जिनके कथन का सार है।
उन सर्वदर्शी सन्मती को, वंदना शत बार है।।

जिनके विमल उपदेश में सबके उदय की बात है।
समभाव समताभाव जिनका, जगत में विख्यात है।।
जिसने बताया जगत को, प्रत्येक कण स्वाधीन है।
कर्त्ता न धर्त्ता कोई है, अणु-अणु स्वयं में लीन है।।

आतम बने परमातमा, हो शान्ति सारे देश में।
है देशना सर्वोदयी, महावीर के सन्देश में।।

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ

मैं हूँ अपने में स्वयं पूर्ण,
पर की मुझ में कुछ गन्ध नहीं।
मैं अरस, अरूपी, अस्पर्शी,
पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।।

मैं रंग-राग से भिन्न, भेद से,
भी मैं भिन्न निराला हूँ।
मैं हूँ अखण्ड, चैतन्यपिण्ड,
निज रस में रमने वाला हूँ।।

मैं ही मेरा कर्त्ता-धर्त्ता,
मुझ में पर का कुछ काम नहीं।
मैं मुझ में रहने वाला हूँ,
पर में मेरा विश्राम नहीं।।

मैं शुद्ध, बुद्ध, अविरुद्ध, एक
पर-परिणति से अप्रभावी हूँ।
आत्मानुभूति से प्राप्त तत्त्व,
मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ।।

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

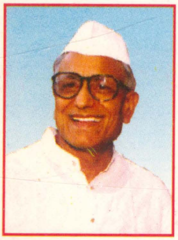

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का नाम आज जैन समाज के उच्च कोटि के विद्वानों में अग्रणीय है।

ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी वि. स. 1992 तदनुसार शनिवार, दिनांक 25 मई, 1935 को ललितपुर (उ.प्र.) जिले के बरौदास्वामी ग्राम के एक धार्मिक जैन परिवार में जन्मे डॉ. भारिल्ल शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न तथा एम. ए., पी-एच.डी. हैं। मंगलायतन विश्वविद्यालय द्वारा आपको डी-लिट् की मानद उपाधि प्रदान की गई है। समाज द्वारा समय-समय पर आपको विद्यावारिधि, महामहोपाध्याय, विद्यावाचस्पति, परमागमविशारद, तत्त्ववेत्ता, जैनरत्न, अध्यात्मशिरोमणि, वाणी-विभूषणआदि अनेक उपाधियों से विभूषित किया गया है।

सरल, सुबोध तर्कसंगत एवं आकर्षक शैली के प्रवचनकार डॉ. भारिल्ल आज सर्वाधिक लोकप्रिय आध्यात्मिक प्रवक्ता हैं। उन्हें सुनने देश-विदेश में हजारों श्रोता निरन्तर उत्सुक रहते हैं।

आध्यात्मिक जगत में ऐसा कोई घर न होगा, जहाँ प्रतिदिन आपके प्रवचनों के कैसिट न सुने जाते हों तथा आपका साहित्य उपलब्ध न हो। धर्म प्रचारार्थ आप 32 बार विदेश यात्रायें भी कर चुके हैं।

जैन जगत में सर्वाधिक पढ़े जानेवाले डॉ. भारिल्ल ने अब तक छोटी-बड़ी 85 पुस्तकें लिखी हैं और अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि अब तक आठ भाषाओं में प्रकाशित आपकी कृतियाँ 45 लाख से भी अधिक की संख्या में जन-जन तक पहुँच चुकी हैं। ग्रन्थाधिराज समयसार पर आपके नियमित प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक जिनवाणी चैनल पर प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं।

सर्वाधिक बिक्रीवाले जैन आध्यात्मिक मासिक 'वीतराग-विज्ञान' हिन्दी, मराठी तथा कन्नड़ के आप सम्पादक हैं। श्री टोडरमल स्मारक भवन की छत के नीचे चलनेवाली विभिन्न संस्थाओं की समस्त गतिविधियों के संचालन में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

वर्तमान में आप श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के महामन्त्री हैं। आप मंगलायतन विश्वविद्यालय में सर्वोच्च समिति (कोर्ट) के सदस्य एवं दर्शन विज्ञान संकाय के ऑनरेरी डीन हैं।

समाज की शीर्षस्थ संस्थाओं यथा-दिगम्बर जैन महासमिति, अ.भा. जैन परिषद्, अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ आदि से भी आप किसी न किसी रूप में जुड़े हैं।